एक ऐ तहा सक झूठः पाषाण युग

अगर कोई गलती आपके नजर में आई तो
हमें फौरन बताइये। हम उसे सुधार लेंगे।

रस्तावना

क्या आप जानते है क 700,000 साल पहले, लोग समुरों में बहुत अचछी तरह बने हुए जहाजों में यारा करते थे?

या क्या आपन कभी सुना ह क "राचीन गुफावासी" क ूप मं व णस लोगों क पास वसी ही वक सत कलातमक योग यता और समझ थी, जसी क आज क कलाकारों क पास ह?

क्या आप जानत हं क 80,000 साल पहल जी वत और वकासवादी "बंदर-मानव" क ूप मं च रत नीदरथलों न संगीत क उपकरण बनाए थ, कपडों और सहायक साम रयों स आनंद लत त, और पीडा दन वाली गरम रत पर साँचों क संडल पहनकर चलत थ?

इस बात की पूरी संभावना ह क आपन इनमं स कसी भी तथय क बार मं नहीं सुना होगा। इसक वपरीत, आपको इन लोगों क बार मं गलत जानकारी मली होगी क य आध बंदर थ और आध मानव, पूरी तरह स सीध नही खड हो सकत थ, उनमं शब बोलन की योग यता नही थी और कवल अजीब घडघडाहट की आवाजं करत थ। इसका कारण यह ह क पछल 150 सालों स आप जस लोगों पर यह झूठ थोपा जा रहा ह।

इसक पीछ यह इरादा ह क भौ तकवादी दशस को जंदा रखा जाए, जो रचनाकार क अ स्तत्व स इंकार करता ह। इस धारणा क अनुसार, जो अपन रास्त मं आन वाल सभी तथयों को तोडती-मरोडती ह, रमांड और ततव अनंत हं। दूसर शबों मं उनकी कोइ शु आत नहीं ह, और इस लए कोइ रच यता नहीं ह। इस अंध वव ास का तथाक थत वज्ञा नक आधार वकास का सधांत ह।

क्यों क भौ तकतावादी दावा करत हं क रमांड का कोइ रच यता नही ह, अतः उनहं इस बात का अपना खुद का स्पष्टीकरण रदान करना होगा क धरती पर जीवन और अन गनत रजा तयाँ कस अ स्तत्व मं आइं। इस उदशय क लए उनहोंन व कास क सधांत को लागू कया। इस सधांत क अनुसार, रमांड मं सारा र म और जीवन अचानक संयोग स अ स्तत्व मं आया। राचीन युग मं कुछ नजी व ततव संयोग स जुड गए और उनस जी वत को शका पदा हुइ। लाखों सालों क ऐस संयोगों क प रणावस्व्रू प राणी अ स्तत्व मं आया। और अंत मं मानव आया, जो वकासपरक शृंखला का अं तम चरण था।

मानव का शु आती इ तहास – जो तथाक थत ूप स लाखों संयोगों क बदलावों क प रणावस्व्रू प अ स्तत्व मं आया जनमं स हर पछल क मुकाबल असंभव था – इस प रदृशय मं ठीक बठान क लए तोडा-मरोडा गया ह। वकासवा दयों क खात क अनुसार, जसमं कोइ भी सबूत नहीं ह, मानव का इ तहास इस रकार हः जस क जीवन न सबस राचीन जीव स आदमी तक र ग त की ह, जो सबस अ धक वक सत ह, इसी तरह मानव का इ तहास भी सवा धक राचीन समुदाय स सवा धक शहरी समाज तक वक सत हुइ होगा। ल कन इस अनुमान क पीछ कसी तरह का कोइ सबूत नही ह। यह मानव क इ तहास को भौ तकतावादी दशस और वकास क सधांत क दावों क अनुसार तयार कए जान का भी र त न धतव करती ह।

वकासवादी वज्ञा नकों – अपन अनुमा नत वकासवादी र र या क दाव को सा बत करन क लए क यह एक को शका स अनक को शकाओं क रा ण क ूप मं वक सत हुआ, और फर बंदर स मानव – न मानव का इ तहास लखा ह। इसक लए उनहोंन "गुफा-मानव युग" और "पतथर युग" जस काल्प नक युगों का आ वषकार कया ह और "राचीन मानव" की जीवन शली का वणस कया ह। इस झूठी बात का समथस करत हुए क मानव और बंद एक ही समान पूवस स पदा हुए हं, वकासवा दयो न अपन दावों को सा बत करन क लए नइ खोज

शु कर दी ह। व अब पुरातात्त्विक खुदाइ क दौरान मल हर पतथर, तीर क सर या बतन की इस रोशनी मं व्याखया करत हं। ल कन आधा-बंदर, आधा-आदमी रा णयों क अंधरी गुफाओं मं बठ, फर पहन, और बोलन की सु वधा रहत चर और जीवंत रस्मु तयाँ सब काल्प नक हं। पुराकालीन आदमी कभी थी ही नही, और पतथर युग भी कभी नही था। व कुछ और नही ब ल्क वकासवा दयों वारा मी डया क एक भाग की मदद स पश क ए गए र ामक दृशय हं।

य सभी संकल्पनाएँ र म हं, क्यों क वज्ञान मं हाल की तरक्की न – खास तौर स रा ण वज्ञान, जीवाशम वज्ञान, सूषम-रा ण वज्ञान और नृततव शास्त्र मं - वकास क सभी दावों का पूरी तरह स ध्वंस कर दया ह।इस वचार को अमानय मान लया गया ह क र जा तयों का वकास हुआ और व "बाद क" एक दूसर क ूपों मं बदलीं।

इसी तरह स, मानव भी बंदर-जस रा ण स वक सत नहीं हुआ। मानव उसी दन स मानव था, जस दन स वह अ स्ततव मं आया, और उस दन स ही उसमं प रषकृत संस्कृ त थी। इस लए, "इ तहास का वकास" भी कभी नही हुआ।

इस कताब मं इस बात क वज्ञा नक सबूत हं क "मानव वकास क इ तहास" की संकल्पना झूठ ह, और हम दखाएँग क कस रचना क तथय को अब नवीनतम वज्ञा नक खोजों स समर्थन मल रहा ह। मानव संसार मं वकास क कारण नही आया, अ पतु भगवान, सर्वश तमान, सर्वज्ञ की ु टहीन रचना क कारण आया ह।

अगल पृठों मं, इसक वज्ञा नक और ऐ तहा सक सबूतों क बार मं आप खुद पढ सकत हं।

प रचय

वकासवादी ऐ तहा सक दृ टकोण मानवता क इ तहास का अधययन इस अनक भागों मं बाँटकर करता ह, जस क वह खुद मानव क तथाक थत वकास क र म क साथ करता ह। पतथर युग, कांस्य युग और लौह युग जसी काल्प नक संकल्पनाएँ वकासवादी कालर म क महतवपूर्ण अंग हं। क्यों क यह काल्प नक तस्वीर स्कूलों और टली वजन और अखबारों की कहा नयों मं पश की जाती ह, इस लए जयादातर लोग इस काल्प नक तस्वीर को बना सवाल कए मान लत हं और कल्पना करत हं क मनुषय कभी ऐस युग मं रहा ह जब कवल रा चीन पतथर क औजारों का र योग होता ता और रौयो गकी अज्ञात थी।

ल कन जब पुरातात्त्विक नषकषो और वज्ञा नक तथयों की प रष ण कया जाता ह, तो बहुत अलग तस्वीर उभरती ह। आज क समय तक जो नशान और अवशष चल आए हं - औजार, सुइयाँ, बाँसुरी क टुकड, गहन और सजावट – दखात हं क सांस्कृ तक और सामा जक दृ ट स, मनुषय न इ तहास क सभी कालों मं हमशा सभ्य जीवन जया ह।

संकडों-हजारों साल पहल, लोग घरों मं रहत थ, खती करत थ, सामान का लन-दन करत थ, कपड बनात थ, खात थ, र शतदारों क पास जात थ, संगीत मं ु च लत थ, प ंटंग बनात थ, बीमार का इलाज करत त, पूजा करत थ और, संष प मं, आज की तरह ही सामानय जीवन जीत थ। लोग जो भगवान वारा भज गए फ रशतों की बात सुनत थ जसस क उसमं, जो कवल एक ही ह, मं ववास हो सकत, जब क दूसर लोग मू तयों की पूजा करत थ। भगवान मं ववास रखन वाल लोग उसक वारा दए गए आदशों क न तक मूल्यों का पालन करत थ, जब क अनय अंध ववासो और असामानय कामों मं लग रहत थ। इत हास मं सब समय, जस क आज, ऐस लोग रह हं, जो भगवान क अ स्ततव को मानत थ, और साथ ही अधा र्मक और ना स्तक भी रह हं.

न चत ूप स, समूच इ तहास मं, ऐस लोग भी रह हं जो सरल, अ धक रा चीन स्थ तयों मं जीवन बतात थ और साथ ही सभ्य जीवन बतान वाल समाज भी थ। ल कन इसस कसी भी ूप मं तथाक थत इ तहास क वकास का सबूत नही बनता, क्यों क जब क दु नया का एक भाग अंत रष मं शटल भज रहा ह, वहीं दूसर भागों मं ऐस लोग हं जो बजली क बार मं नहीं जानत। ल कन इसका यह मतलब नहीं ह क जन लोगों न अंत रष यान बनाए हं, व मान सक या भौ तक ूप स अ धक उननत हं – और उनहोंन वकासवादी सडक पर और आग र ग त कर ली ह और व सांस्कृ तक ूप स अ धक वक सत बन गए हं – और न यह क दूसर लोग कहानी क बंदर-मानव क नजदीक हं। य बातं कवल संस्कृ तयों और सभ्यताओं मं अंतर का संकत करती हं।

वकासवादी पुरातात्त्विक खोजों का हसाब नही दे सकते

जब आप कसी वकासवादी क मानव क इ तहास का परीष ण करत हं, तो आपको इस बात का वस्तृत वर्णन मलगा क कस मुनुषय क तथाक थत रा चीन पूर्वज अपना रोजमरा का जीवन कस बतात थ। जो भी इन ववरण, आ धका रक शली स र भा वत होगा, ल कन जस वषय की अ धक जानकारी नहीं होगी, वह मान लगा क य सब "कलातमक पुनर्रचनाएँ" वज्ञा नक सबूतों पर आधा रत हं। वकासवादी वज्ञा नक य वस्तृत ववरण इस र कार दत हं, मानों व हजारों साल पहल वहाँ थ और उनहं यह सब दखन का मौका मला था। व कहत हं क जब हमार तथाक थत पूर्वजों – जो अब अपनी दो टाँगों पर खडा होना सीख चुक थ और उनक पास अपन हाथों

स करन क लए कुछ नही था – न पतथर स औजार बनाना शु कया, और बहुत लंब समय तक उनहोंन पतथर और लकडी स नमस क अलावा, कसी और औजार का रयोग नही कया। बहुत समय क बाद ही उनहोंन लोह, तांब, और पीतल का रयोग करना शु कया। लकन य बौर वकासवादी पूवधारणाओं की रोशनी मं तथयों की गलत वयाखया पर आधारत हं, न क वजञानक सबूतों पर।

इस कताब मं *पुराततव वजञानः एक बहुत छोटा सा परचय, पुराततव वजञानक पॉल बान का कहना ह क मानव वकास का दृशय कुछ और नहीं बलक परयों की कहानी ह, जहाँ इतना सारा वजञान इतनी सारी कहानयों पर आधारत ह।* उनहोंन बल दया ह क उनहोंन "कहानी" शबद का रयोग सकारातमक अथर मं कया ह, लकन फर भी, व एकदम यही हं। इसक बाद व अपन पाठक को तथाकथत मानव वकास की पारंपरक वशषताओं पर वचार करन क लए कहत हं: भोजन पकाना और खम की आग, अंधरी गुफाएँ, तीर-तरीक, औजार बनाना, बूढा होना, संघषर और मौत। व आचयर करत हं क य परकलपनाएँ कतनी तो हडयों और वासतवक अवशषों पर आधारत हं, और कतनी साहतयक शतो पर?

बन अपन उठाए गए सवाल का खुल प मं उतर दन मं संकोच करत हं: अथात, यह क मानव का तथाकथत वकास "साहतयक" शतर पर आधारत ह न क वजञानक।

दरअसल, इस हसाब मं बहुत स अनुतरत रन और ताकक वसंगतयां हं, जस कोइ ऐसा वयत नही पहचान सकता जो वकासवादी सधांत क अनुसार सोचता ह। उदाहरण क लए, वकासवादी पतथर युग का उललख करत हं, लकन यह समझान मं असफल रहत हं क उस समय क उपकरणों मं उकरा कस जाता था और उनहं आकार कस दया जाता था। इसी तरह, व यह कभी भी सपट नहीं कर सकत ह क पंखों वाल कीड पहल कस उडन लग, हालाँक उनका कहना ह क उनहं पकडन क लए डायनोसोर न पंखों का वकास कया और उडन लग। व पूरा सवाल ही भूल जाना पसंद करत हं, और चाहत हं क दूसर भी ऐसा ही करं।

लकन पतथर को आकार दना और उकरना आसान काम नहीं ह। एक पतथर को दूसर स घसकर औजार को एकदम सही नयमत और रजर धार दना असंभव ह, जसी की हम तक पहुँच अवशषों मं मलती ह। रनाइट, बसालट या डोलराइट जस कठोर पतथरों को सटील की फाइलों, लथ और पलन का रयोग करक ही आकार दना संभव ह, वरना व टूट जाएँग। इसी तरह यह भी सवाभावक ह क दसयों हजार साल पहल क कंगन, बालयाँ और कंठहार पतथरों क औजारों का रयोग करक नही गढ गए होंग। इन चीजों मं छोट-छोट छद पतथरों स नहीं बनाए जा सकत। उनहं खुरचन स नहीं सजाया जा सकता। इन चीजों की पूणता दशाती ह क कठोर धातु स बनाए गए अनय औजारों का रयोग कया गया होगा।

अनक पुराततव वजञानकों और वजञानकों न परीषण करक यह दखन की कोशश की ह क कया इन राचीन कला-कृतयों की रचना उन सथतयों मं हो सकती ह, जो क वकासवादी बतात हं। उदाहरण क लए, रोफसर कलौज शमत टकी मं गौबकल टप क पतथरों क खंडो की नककाशी पर ऐसा ही रयोग कया था, जनक बार मं अनुमान ह क व लगभग 11,000 साल पुरान हं। उनहोंन शलपकारों को वस औजार दए जस क वकासवादयों का दावा था क उस समय रयोग मं लाए गए होंग, और उनस कहा क समान चटानों पर वसी ही नककाशी करं। लगातार दो घंटों क काम क बाद, सभी शलपकार जो काम कर पाए वह बहुत असपट था।

आप इसी तरह का रयोग अपन घर पर भी कर सकत हं। रनाइट जसा कठोर पतथर का टुकडा लं और उस तीर क वस सर मं बदलन की कोशश करं जो क 100,000 साल पहल रहन वाल लोग रयोग करत थ। लकन आप रनाइट क टुकड और पतथर क अलावा कुछ और इसतमाल नहीं कर सकत। आपक खयाल स आप इसमं कतन सफल हो सकंग? कया आप वसी ही वसतु बना सकंग जसमं वसी ही बारीक नोक, एकसारता, चकनापन और पॉलश हो, जो क ऐतहासक चीजों मं मली ह? आइए इसस भी आग जाएँ; रनाइट का एक मीटर वगर का टुकडा लं, और उस पर पशु का चर बनाए जसमं गहराइ का भाव पदा हो। उस चटान को एक अनय कठोर पतथर क टुकड स घसकर आपको कया नतीज मल सकंग? साफ तौर स, सटील और लोह स बन औजारों क बना न तो आप सरल सा तीर का सरा बना सकत हं, और आपकी पतथर की नककाशी भी बहुत कम असरदार होगी।

पतथर को काटना और पतथर पर नककाशी अपन आप मं वशषजञता क षर हं। फाइलं, लथ और अनय औजार बनान क लए जूरी रौयोगकी आवशयक ह। इसस यह रदशत होता ह क जस समय य चीजं बनाइगइ थी, "राचीन" रौयोगकी बहुत वकसत थी। दूसर शबदों मं, वकासवादयों का य दाव मथ हं क कवल सरल पतथर क उपकरण ही जञात थ, और क कोइ रौयोगकी असततव मं नही थी। इस तरह की "कवल पतथर" युग कभी असततव मं था ही नहीं।

तथाप, इस बात पर पूरी तरह स ववास कया जा सकता ह क पतथरों को काटन और आकार दन क लए इसतमाल कए गए सटील और लोह क औजार आज क समय तक बच नहीं रह सक। राकृतक प स नमी और अमल क वातावरण मं, सभी तरह की धातुओं क औजारों मं जंग लग जाता ह और फर व रमशः गायब हो जात हं। बस उन पतथरों की चप और टुक ड ही बच रहंग, जनक साथ उनहोंन काम कया था, कयोंक उनक गायब होन मं बहुत समय लगता ह। लकन इन टुकडो की परीषा करन और यह सुझान क उस समय क लोगों न कवल पतथर का ही रयोग कया था, वजञानक तकर नहीं हं।

नचत ू प स, अब अनक वकासवादी यह स्वीकार करत हं क पुरातात्त्वक नषकषर डा वनवाद का एकदम समथन नही करत। वकासवादी पुराततव वज्ञानक रचडर लीक न माना ह क वकास क सधांत क संदभर मं पुरातात्त्वक नषकषो, खास तौर स पतथर क औजारों का हसाब दना असंभव ह।

दरअसल, पुराततव संबंधी रकाडो मं डा वनवादी राककल्पनों की अनुपयुतता क ठोस सबूत मल जात हं। यद डा वनवादी पकज सही थ, तो हमं बाइपडलट, रौयोगकी, और दमाग क बढ हुए आकार क सबूत पुराततव संबंधी और जीवाशम क रकाडो मं एक साथ मलन चाहए थ। य हमं नही मलत। पूवर ऐतहासक रकाडर का एक पहलू ही इस राककल्पना को गलत साबत करन क लए काफी हः पतथर क औजारों का रकाडर।[1]

कालानक वकासवादी कालर म

इतहास का वगीकरण करत समय, वकासवादी वसतुओं की व्याखया अपन ूढ सधांतों क अनुसार ही करत हं। जस काल क दौरान कांस की कला-कृतयों की रचना हुइ थी, उस व कांस्य युग कहत हं, और सुझाव दत हं क लोह का रयोग बहुत हाल ही मं शू हुआ था – यह उनक इस दाव पर आधारत ह क जयादातर राचनी सभ्यताओं को धातुओं की जानकारी नही थी।

जसा क पहल ही उल्लख कया गया ह क लोह, स्टील और अनय अनक धातुओं पर जल्दी ही जंग लग जाता ह और व पत थर की तुलना मं बहुत जल्द नट हो जाती हं। कांस जसी कुछ धातुएँ जन पर मुशकल स जंग लगता ह, अनय धातुओं की तुलना मं अधक लंब समय तक बची रह सकती हं। इसलए यह बल्कुल स्वाभावक ह क खुदाइ स नकली कांस स बनी चीजं जयादा पुरानी होंगी और लोह स बनी चीजं हाल क समय की होंगी।

इसक अलावा, यह कहना भी ताकक नहीं ह क जो समाज कांसा बनाता था, वह लोह क बार मं नही जानता था, और यह क जस समाज को कांसा बनान की तकनीकी जानकारी थी उसन दूसरी धातुओं का इस्तमाल नहीं कया होगा।

कांसा को बनान क लए तांब मं टन, आसरनक और एंटमोनी क साथ थोडी मारा मं जस्ता मलाया जाता ह। जो कोइ भी कांसा बनाता ह, उस तांब, टन, आसरनक, जस्त और एंटमोनी जस रासायनक ततवों की कामकाजी जानकारी जूर होनी चाहए, और जानना चाहए क इनहं कस तापमान पर गलाना ह, और उसक पास भटी होनी चाहए जसमं इनहं गलाकर मलाया जा सक। इस सब जानकारी क बना, ऐसी सफल मर धातु का बनाना कठन ह।

शू नं, कचची तांबा धातु पुरानी, कठोर चटानों मं पाउडर या रस्टल कूप मं मला ह (जस "दशीय तांबा" भी कहा जाता ह) जो समाज तांब का रयोग करता ह, पहल तो उस तांब को इन चटानों मं पाउडर कूप मं पहचानन की जानकारी होनी चाहए। इसक बाद उस तांबा खोदन, उस हटान और ऊपर जमीन पर ल जान क लए खान बनानी होगी। यह साफ ह क य सब काम पतथर और लकडी क औजारों का रयोग करक नहीं कए जा सकत।

तांब की कचची धातु को पघलान क लए इस लाल गरम लपट पर रखा जाना चाहए। तांब को पघलान और शुध करन क लए जूरी तापमान 1,084.5°C (1,984°F) ह। ऐस उपकरण या फुँकनी की जूरत भी थी, जो आग मं सम गत पर हवा फूँक सक, जसस क वह समान स्तर पर रह। तांब क साथ काम करन वाल समाज को ऐसा उचच ताप पदा करन क लए भटी जूर बनानी होगी और आग मं इस्तमाल क लए कढाइ और पकड बनान होंग।

तांब क साथ काम करन क लए जूरी तकनीकी ढाँच का यह संषपत सार ह – जो अपन आप मं ऐसी कोमल धातु हो जो लंब समय तक धारदार नहीं बनी रह सकती। टन, जस्ता और अनय ततवों को मलाकर कडा कांसा बनाना और भी परषकृत ह, कयोंक हर धातु को अलग-अलग ररया की जूरत होगी। य सब तथय दखात हं क जो समुदायों खनन मं लग थ, मर धातुएँ बना रह थ और धातुओं क साथ काम कर रह थ, उनक पास वस्तृत जानकारी जूर रही होगी। यह दावा न तो ताककक ह और न ही स्थायी ह क ऐसी समर जानकारी रखन वाल लोगों न कभी भी लोह की खोज नहीं की होगी।

इसक वपरीत, पुरातात्त्वक खोजं दखाती हं क वकासवादयों का यह दावा क बहुत राचीन समाज को धातु की जानकारी नही थी, गलत ह। इन सबूतों मं ऐसी खोजं शामल हं - 100,000-साल पुरान धातु क बतनों क अवशष, 2.8-साल पुरान धातु क तीर, एक लोह का पार जसक 30 करोड साल पुराना होन का अंदाजा ह, मटी पर कपड क टुकड जो 27,000 साल पुरान हं, और मगनसयम और पलटनम क हजारों साल पहल क नशान, जस यूरोप मं कवल कुछ सौ साल पहल ही सफलतापूवक पघलाया जा सका ह। य बखर हुए अवशष, खुरदर पतथर युग, पॉलश पतथर युग, कांस्य और लौह युग जस वभाजन को पूरी तरह स नट कर दत हं। लकन अनक वज्ञानक रकाशनों मं रकट होन वाली इन खोजों क बड भागों को वकासवादी वज्ञानकों न या तो नजरअंदाज कर दया या संरहालयों क तहखानों मं छपा दया। सचच तथयों क स्थान पर, शानदार वकासवादी कहानयों को मानव क इतहास कूप मं पश कया गया।

ववास करन वालों न सभ्यता को समूच इ तहास मं जी वत रखा ह

इ तहास क पूर चर मं, भगवान न लोगों को सचच रास्त पर लान क लए अपन दूत भज हं। कुछ लोगों न इन दूतों क आदश मान हं और भगवान क अ स्ततव और एकतव मं ववास कया ह, जब क अनय लोग लगाता इसस इंकार करत रह हं। मानव जब पहली बार अ स्ततव मं आया, तो उसन एक और एकमार भगवान मं ववास करना, और हमार भगवान क रहस्य क खुलास क वारा सचच धमर क न तक मूल्यों सीखा। इस लए, वकासवा दयों का यह दावा गलत ह क रारंभ क समाज एक और एकमार भगवान मं ववास नही रखत थ। (इस वषय पर इस कताब मं आग और बौरा दया जाएगा।)

कुरान मं यह खुलासा कया गया ह क कस, इ तहास क सभी कालों मं, भगवान न दूत भजकर लोगों का आवान कया क धा मरक न तक मूल्यों पर भरोसा करं और उन पर अमल करं:

मानवीयता एकल समुदाय था। फर भगवान न अचछी खबर लान और चतावनी दन क लए फ रशत भज, और उनक साथ उसन सचचाइ की कताब भजी जसस क लोग अपन फकर क बार मं तय कर सकं। कवल नहीं जनहं यह दी गइ, एक दूसर स जलन रखत हुए अपन तक स्पट संकत आन तक इसक बार मं फकर करत रह। फर, उसकी अनुम त स, भगवान न उनक फकर क बार मं उनका नदशन कया जो सचचाइ मं भरोसा रखत थ। भगवान हर उस व्य त को मागदशन करता ह, ज स चाहता ह। (सूरत अल-बकरा: 213)

अनय छंद खुलासा करता ह क हर समाज क सदस्यों को चतावनी दन, भगवान क अ स्ततव और एकतव की याद दलान, और धा मरक गुणों का पालन करन क लए उनका आवान करन क लए, अपन दूत भजता ह:

... ऐसा कोइ समुदाय नहीं ह जसमं चतान वाल नहीं आए। (सुरह फा तर: 24)

हालाँ क हमार भगवान न लोगों क पास दूत और प वर कताबं भजी, ल कन कुछ लोग गलतफहमी मं डूब गए, उनहोंन सचच धमर क गुणों की ओर पीठ कर ली और असामानय अंध ववास अपना लए। कुछ लोगों न अधा मरक ववास बना लए और धरती, पतथर, लकडी, चाँद या सूरज, और यहाँ तक क तथाक थत शतान आतमाओं की पूजा करन की उलटी री त अपना ली। आज भी, सचच धमर को मानन वालों क साथ-साथ, ऐस लोग भी हं जो आग, चाँद, सूरज या लकडी स बनी मू तयों की पूजा करत हं। कुछ लोग हमार भगवान क साझदारों का वणन करत हं, हालाँ क व उसक अ स्ततव और व शटता क बार मं पूरी तरह स जानत हं। फर भी हमार भगवान न उनक पास दूत भज हं, उनहं व गल तयाँ बताइ हं, जनमं व फँस गए हं, और उनका अंध ववासों का तयाग करक सचच धमर क अनुसार जीवन बतान का आवान कया ह। और इ तहास क सभी कालों मं, आ स्तक और ना स्तक रह हं, व जनक दल मं शुध भरोसा रहता ह और व जो उलट रास्त पर नीच चल गए हं।

समूच इ तहास मं, फ रशतों क साथ रहन वाल आ स्तक लोगों न बहुत सभ्य स्थ तयों मं उचच-गुणवता क जीवन का आनंद लया ह। व नोआह, अर ाहम, जोसफ, मोसस और सोलोमन (उन सबको शां त मल) जस फ रशतों क दनों मं प रषकृत सामा जक व्यवस्था क भीतर रह हं, जस क व आज रहत हं। सभी युगों मं, आ स्तकों न पूजा की ह, र त रख हं, भगवान वारा बनाइ गइ सीमाओं का पालन कया ह, और साफ और नयमों का जीवन जया ह। पुरातात्तवक खोज उन लोगों क सवोत्तम, सबस भल और साफ मानकों क जीवन का खुलासा कया ह जो भगवान पर प वर ववास रखत थ। फ रशतों और सचच आ स्तकों न अपन समय मं उपल ब्ध उसकी रजामंदी क उपयु त तरीकों स बहतरीन उपायों का इस्तमाल कया ह।

नमु द क समय मं फ रशत अर ाहम न (अ.) और उनहोंन जो उनमं भरोसा करत थ, सभी रौयो गकी संबंधी तरक्की का सबस बहतर तरीक स रयोग कया। फरोह क समय की तकनीकी जानकारी का इस्तमाल फ रशत जोसफ, मोसस, आरोन (उन सबको शां त मल) और उस समय क सचच भरोसा रखन वालों न कया। फ रशत सोलोमन (अ.) क समय मं भवन- नमा ण, कला और संचार क ष रों मं हा सल की गइ उचचतम स्तर की रौयो गकी की उपल ब्ध का सबस बु धमतापूणर तरीक स नयोजन कया गया। हमार भगवान न फ रशत सोलोमन (अ.) पर संप त और शान का जो आशीवा द बरसाया था, उसन पीढ यों को आतं कत कए रखा।

हमं हमशा याद रखना चा हए क संकडों हजारों साल पहल क लोगों, और आज रहन वाल लोगों क पास जो सूचना और तरीक हं, व सब भगवान का आशीवा द हं। जन लोगों न संकडों हजारों साल पहल सभ्यता की नीव रखी, जनहोंन द सयों हजारों साल पहल गुफाओं मं सुंदर पं टंग बनाइं, जनहोंन परा मड और जगुरात बनाए, जनहोंन पतथर क वशाल स्मारकों का न मा ण कया, और जनहोंन पू की उचचतम ऊँचाइ पर महान संरचनाएँ बनाइं, उनहोंन वह सब भगवान की र रणा और शष ा स कया। जो लोग आज उप-आ णवक कणों का अध ययन करत हं, जो अंत रष मं शटल भजत हं और जो कंप यूटर सॉ फटवयर लखत हं, व ऐसा इस लए कर पात हं क इव र की ऐसी इचछा ह। मानव की रचना क समय स उसक पास जो भी जानकारी रही ह वह भगवान क आशीवा द स रही ह, और जस भी सभ्यता की उसन स्थापना की ह वह भी उसी तरह स हमार भगवान का काम रहा ह।

भगवान न आदमी को कुछ नही स बनाया और उसक पूर जीवन मं वह उस वभनन परीषण और आशीवाद दता रहता ह। हर दया जान वाला आशीवाद भी परीषण ही ह। जो लोग यह जानत हं क जो सभ्यता, रौयोगकी और उपाय उनक पास हं, व सब दरअसल भगवान का आशीवाद हं, व भगवान को धनयवाद दत हं, जो उन पर अपना आशीवाद और बढा दता हः

और जब हमार भगवान न घोषणा कीः "यद आप एहसानमंद होंग, तो मं नचत ूप स आपको और जयादा दूँगा..." (सुरह इराहमः 7)

भगवान अपन पवर सवकों को इस संसार और यहाँ क बाद दोनों जगह सुखदायक जीवन का आनंद लन का इंतजाम करता ह। इसका कुरान मं खुलासा कया गया हः

जो भी अचछा काम करता ह, चाह पुष हो या महला, जो भरोसा करता ह, हम उस अचछा जीवन दंग और उनक कामों पर सवोत्तम तरीक स षतपूतरकरंग। (सुरत अन-नलः 97)

इस छंद क रकटीकरण क अनुसार, समूच इतहास मं मुसलमों क पास उस युग क बहतरीन साधन थ, जसमं व रह थ, और उनहोंन सुख का जीवन बताया। स्वाभावक ूप स, कुछ की कठनाइयों और परशानयों स परीषा भी ली गइ, लकन इसका यह मतलब नहीं ह क व मुशकल, पुरातन दशाओं मं रह और उनहोंन सभ्य, मानवीय जीवन नही बताया। और जन लोगों न भगवान स इंकार कया और अपन इंकार मं जद कए रह, जो उचत नतक मूल्यों क साथ नहीं रह पाए और जो धरती पर रटाचार ल आए, उनका अंत हमशा नराशा मं हुआ चाह व अपनी सभ्यता मं कतन भी धनवान, सुवधापूणर और उननत रह हों। इसक अलावा, उनमं स अनक न शायद आज क समय क समाज मं उपलब्ध रौयोगकयों स भी उननत रौयोगकयों का आनंद लया होगा। इसका भी कुरान मं खुलासा कया गया हः

कया उनहोंन धरती का रमण नही कया और अपन स पहल क लोगों का अंत नही दखा? उनक मुकाबल उनमं जयादा ताकत थी और उनहोंन उनक मुकाबल मं जयादा जमीन पर खती की और उस पर रह। उनक संदश भी उनक पास अधक साफ संकतों मं आए। भगवान न उनहं कभी भी गलत नही कया; पर उनहोंन खुद को गलत कर लया। (सुरत अर-रमः 9)

सांस्कृतक संरह कसी वकासपरक रया का कोइ उदाहरण नहीं ह

वकासवादयों का मानना ह क पहल मानव आध बंदर राण थ जनकी दमागी और शारीरक वशषताएँ समय क अनुसार वकसत हुइं, उनहोंन नइ योगयताएँ हासल की, और इस कारण स सभ्यता का वकास हुआ। इस दाव क अनुसार, जो कसी भी वज्ञानक सबूत पर आधारत नहीं ह, हमार राचीन पूवर्जों न पशुओं का सा जीवन बताया, मानव बनन पर ही व सभ्य बन, और अपनी मानसक षमताओं क वकास होन क साथ ही उनमं सांस्कृतक रगत हुइ। राचीन मानव की काल्पनक छव, जसमं शरीर पूरी तरह स फर स ढँका हुआ ह, या जानवर की खाल लपट वह झुका हुआ आग जलान की कोशश कर रहा ह, या कंध पर ताजा मार हुए जानवर को लाद पानी क पास चलता हुआ, या अपन साथयों क साथ इशारों और गुराहट स संरषण की कोशश करता हुआ, इस अवज्ञानक दाव क आधार पर झूठी पुनः रचनाएँ हं।

जीवाशम का रकाडर इस फंतासी का समथर्न नहीं करता। सभी वज्ञानक खोजं इस नषकषर की ओर संकत करती हं क आदमी को कुछ नहीं स, आदमी क ूप मं बनाया गया था, और जस दन स उस बनाया गया ह उसी दन स वह मानव का जीवन बता रहा ह। पुरातात्त्वक खोजं वकासवादयों क कालरम का इस तरह स समथर्न नही करतीं। उस समय की खोजं, जब वकासवादयो का दावा ह क आदमी बस बोलना सीखा था, दखाती हं क मानव क पास रसोइ थी और वह पारवारक जीवन का आनंद लता था। उस समय की खुदाइ मं सजावटी चीजं और पंट करन की कचची सामरी मली ह, जब वकासवादयों का कहना ह क मानव कला स अनभज्ञ था। इस कताब क बाद क अधयायों मं वस्तार स अनक उदाहरणों पर वचार कया जाएगा।

य सब खोजं खुलासा करती हं क मानव न कभी भी पशु जसा राचीन जीवन नहीं बताया। असभ्य युग कभी नहीं रहा जब सभी लोग पतथर और लकडी क उपकरणों का रयोग करत थ। भरोसा करन वालों न हमशा मानव की जीवन शली जी ह और कपडों, पलटों, कटोरों, चममचों और काँटों का उसी तरह स इस्तमाल कया ह जस क मानव को करना चाहए। लोग हमशा उनहीं स्थतयों मं रह हं, बोल हं, भवन बनाए हं और कलाकृतयों की रचना की ह, जो मानवों क उपयुत ह। स्थापत सामाजक व्यवस्थाओं मं डॉकटर, अधयापक, दजी, इंजीनयर, वास्तुकार और कलाकार रह हं। भगवान की ररणा स, लोगों क पास कारण रहा ह और अचछी चतना न हमशा धरती पर आशीवाद का बहतरीन रयोग कया ह।

नचत ूप स, जस-जस रौयोगकी का वकास हुआ ह और लोगों न ज्ञान इकठा कया ह, स्वाभावक ूप स रौयोगकी संबंधी बदलाव भी हुए हं। ततकालीन स्थतयों क अनुसार नए उपकरणों का वकास हुआ ह, वज्ञानक खोज हुइ हं, और सांस्कृतक बदलाव आए हं। तथाप, इतहास क अनुसार ज्ञान क इकठा होन और रौयोगकी संबंधी रगत स यह अथर नहीं नकलता क कोइ वकास हुआ ह।

ज्ञान का इकठ होत रहना पूरी तरह स स्वाभा वक ह। राथ मक स्कूल मं, अपन उचच स्कूल क सालों मं और वव व यालय मं व्यक त व भनन स्तर की शषा का आनंद लता ह। ल कन य द कोइ व्यक त अपन जीवन भर ज्ञान को लगातार इकठा करता ह, तो इसका यह मतलब नहीं ह क वह अ नय मत रभावों क माधयम स लगातार वकास और तरककी कर रहा ह। समाज क जीवन पर भी समान ग तशीलता लागू होती ह। समाज की ज़ू रतों क अनुसार नइ खोजं भी होती हं, नइ रणा लयों का आ वषकार होता ह और उनका बाद की पीढ यों वारा सुधार कया जाता ह। ल कन यह वकास क र र या नहीं ह।

सभ्यताएँ उलटती हं और साथ ही र ग त करती हं

डा वसवाद का मानना ह क आदमी – और इस लए उसकी संस्कृ त – आधारभूत, आ द, जनजातीय चरणों स सभ्यता की ओर ग त करती ह। तथा प, पुरातात्वक खोजं दखाती हं क मानव इ तहास क पहल दन स ही, समाज मं वह समय रहा ह, जसमं बहुत उननत सं सकृ तयाँ रही हं, ल कन दूसरी संस्कृ तयाँ पछडी हुइ रही हं। न चत ू प स, अ धकतर समय मं बहु धनवान और साथ ही पछडी हुइ सभ्यताएँ रही हं। इ तहास क पूर समय मं, एक समय क अ धकतर समाजों मं रौयो गकी और सभ्यता क बहुत अलग-अलग स्तर रह हं जसमं बहुत ही सामा जक और सांस्कृ तक अंतर रह हं – जसा क आज भी ह। उदाहरण क लए, हालाँ क आज उतरी अम रकी महावीप दवाइ, वज्ञान, नमा ण कला और रौयो गकी क मामल मं बहुत उननत ह, ल कन द ष ण अम रका मं रौयो गकी की दृ ट स काफी पछडा हुआ ह, जसका बाहर की दु नया क साथ कोइ संपकर नहीं ह। दु नया क कुछ भागों मं अतय धक उननत छायांकन तकनीकों और वलषण वारा रोगों की पहचान की जाती ह, और उनक बहुत आधु नक अस्पतालों मं इलाज कया जाता ह। ल कन दु नया क अनय भागों मं, ऐसा माना जाता ह क रोग बुरी आतमाओं क असर स पदा होत हं, और रोगी को ठीक करन की को शशों मं ऐसी बुरी आतमाओं को भगान क समारोह शा मल हं। इसा पूवर 3,000 क आसपास रहन वाल संधु, राचीन मर और सुम रयाइ जस समाजों मं, ऐसी संस्कृ तयाँ थीं, जो आज क समय की जनजा तयों स अतुलनीय ू प स और यहाँ तक की अतय धक वक सत समाजों स भी समृध थीं। इसका अथर यह ह क इ तहास क सभी कालों मं, अतय धक उननत सभ्यताओं क समाज बहुत पछड हुए समाजों क साथ जी वत रह हं। हजारों साल पहल वयमान कोइ समाज वास्तव मं 20 वीं शताब्दी क समाज स अ धक वक सत रहा हो सकता ह। य द दखाता ह क वकासवादी र र या क भीतर कोइ वकास नहीं रहा ह – दूसर शब्दों मं, आ दकाल स सभ्यता क काल तक।

इ तहास क समय स, न चत ू प स, सभी ष रों मं बडी तरककयाँ हुइ हं, और वज्ञान और रौयो गकी मं बहुत छलांग और वकास हुए हं, इसक लए संस्कृ त और अनुभव क इकठा होन को धनयवाद। तथा प, इन बदलावों को "वकासवादी" र र या कहकर वणर्न करना न तो यह तकर्पूणर ह और न ही वज्ञा नक, जसा क वकासवादी और भौ तकतावादी करत हं। जस क आज क मानव और हजारों साल पहल जी वत रह मानव की कोइ भौ तक वशषताओं मं कोइ अंतर नहीं ह, इस लए बु ध और षमताओं क मामल मं भी कोइ अंतर नहीं ह। यह वचार क हमारी सभ्यता अ धक उननत ह, क्यों क 21 वीं शताब्दी क आदमी क दमाग की षमता और बु ध अतय धक वक सत ह, एक खराब दृ टकोण ह, जो वकासवादी रचार क प रणाम स्वू प आया ह। तथय यह ह क बहुत अलग-अलग ष रों क लोगों की आज भनन संकल्पनाएँ और संस कृ त हो सकती हं। ल कन य द कसी दशीय ऑस्र लया क पास वसा ही ज्ञान न हो जसा क अम रका क वज्ञा नक क पास ह, तो इसका यह अथर नहीं ह क उसकी बु ध या दमाग काफी वक सत नहीं हो पाया ह। हो सकता ह क ऐस समाजों मं पदा हुए अनक लोग बजली क अ स्तत्व स प र चत न हों, ल कन व फर भी अतय धक बु धमान हो सकत हं।

इसक अलावा, व भनन स दयों मं व भनन ज़ू रतं पदा हुइ हं। फशन क हमार मानक वस ही नहीं हं, जस क राचीन म र यों क थ, ल कन इसका यह अथर नहीं ह क हमारी संस्कृ त उनकी संस्कृ त स अ धक वक सत ह। जब क 21 वीं सदी मं गगनचुंबी इमारतं सभ्यता की नशानी हं, मर क काल मं सभ्यता क सबूत परा मड और फी नक्स थ।

महतव उस दृ टकोण का ह, जसस तथयों की व्याखया की जाती ह। इस पूवर्धारणा स शु करन वाला व्यक त क तथय तथाक थत वकासपरक वकास का समथर्न करत हं, अपन वारा रापत सभी जानकारी को इसी पूवरह की रोशनी मं मूल यांकन करंग। इस लए वह अपनी धारणाओं का काल्प नक कहा नयों स समथर्न करन की को शश करगा। जीवाशम ह डयों क टुकडों क आधार पर, वह अनक ववरणों का अनुमान लगाएगा जस उस ष र मं रहन वाल लोग अपना रोजमरा का जीवन कस बतात थ, उनक पा रवा रक जीवन की संरचना और उनक सामा जक संबंध, जो उसकी पूवर धारणा क अनुकूल होंग। ह डयों क उन टुकडों क आधार पर वह नषकषर नकालगा क उनस संबं धत जी वत लोग कवल आध सीध थ और गुरा त थ, व बालों स ढँक हुए थ और पतथर क औजारों का रयोग करत थ – इस लए नहीं क वज्ञा नक सबूत ऐसा सुझात हं, ब ल्क उसकी वचारधारा की यही ज़ू रत ह। वास्तव मं, जो तथय मलत हं व ऐस दृशय ब ल्कुल नहीं उभरता। यह काल्प नक तस्वीर डा वर्सवादी मान सक की व्याखया क वारा सामन आती ह।

फ लहाल, जो पुरातत्व वज्ञा नक जीवाशम क अवशषों, गुफाओं की दीवारों पर नककाशी क पतथर या पं टंग, क आधार पर इस समय क बार मं वस्तृत व्याखया करत हं, ऊपर क उदाहरणों स बहुत कम भनन हं। ल कन फर भी वकासवादी अभी भी तथाक थत आ द मानव क जीवन क सभी पहलुओं क बार मं सबूतों क पूवरह-पूणर

वलषण क आधार पर लख रह हं। उनक काल्पनक ववरण और चरण अभी भी अनक प रकाओं और अखबारों क पजों को सजात हं।

यह एक प रदृशय मं स एक ह जसकी रचना तथाक थत आ द मानव क रोजमरा क जीवन पर लुइस लीक न की ह, जो समसाम यक वकासवा दयों मं सवा धक र सध स एक हं।

आइए एक पल क लए हम कल्पना करं क हम लगभग बीस या तीस हजार साल पहल चटान क आर य मं होन वाली घटनाओं को वहाँ खड होकर दख रह हं।

पाषाण युग का शकारी शकार की तलाश मं घाटी मं टहल रहा ह क तभी वह अपन ऊपर बाहर नकली चटान क एक ओर चटान का आर य दखता ह। सावधानीपूवर्क, और पूर धयान स वह ऊपर चढता ह, और उस डर ह क शायद वहाँ उस पत थर युग क प रवार क कुछ सदस्य कब्जा जमाए मल सकत हं, या शायद यह शर या गुफा भालू का घर हो। आ खरकार वह काफी नजदीक चला जाता ह, और वह दखता ह क वहाँ कोइ नहीं ह, इस लए वह भीतर चला जाता ह और अचछी तरह जाँच-पडताल करता ह। वह तय करता ह क वह आवास उस छोट आर य की तुलना मं अ धक उपयुत ह, जहाँ वह और उसका प रवार फलहाल रह रहा ह, और वह उनहं लान क लए चला जाता ह।

फर हम प रवार को आत हुए और नए घर मं व्यव स्थत होत हुए दखत हं। या तो पुरान घर स सावधानीपूवर्क लाए गए और संभाली गए अंगारों स या सरल, लकडी की आग की मशककत स आग जलाइ जाती ह। (हम पतथर युग क आदमी वारा आग रापत करन क तरीक क बार मं नचत ू प स कुछ नहीं कह सकत, ल कन हम यह जू र जानत हं क बहुत पुरान समय स ही वह आग का रयोग करता था, क्यों क अलाव गुफा और पतथर क घरों मं कसी भी पश क स्तर स लगभग एक आम चीज ह।)

इसक बाद संभवतः प रवार क कुछ सदस्य घास या झाड याँ इकठा करन क लए चल जात हं, जसस क खुरदुर बस्तर तयार कए जा सकं, जस पर व सोएँग, जब क अनय लोग पास क जंगल स शाखाएँ और झाड याँ तोडन क लए चल गए जसस क आर य क सामन कठोर दीवार बनाइ जा सक। इसक बाद व भनन जानवरों की खाल खोली जाती ह और अनय घरलू चीजों क साथ नए घर मं जमा कर ली जाती ह।

और अब प रवार पूरी तरह स व्यव स्थत हो चुका ह और उनक रोजमरा क काम एक बार फर चालू हो जात हं। आदमी भोजन क लए जानवरों का शकार करत हं और उनहं पकडत हं, और म हलाएँ शायद इसमं मदद करती हं और साथ ही खान योग य फल और ग र या जड इकठा करती हं। [2]

अपन सार बारीक ववरण क साथ यह वणर्न कसी भी तरह की वज्ञा नक खोज पर नहीं, ब ल्क मार इसक लखक की कल्पना पर आधा रत ह। इस तरह की समान कहा नयों को व भनन वज्ञा नक शब्दों का जामा पहनान वाल वकासवादी, अपन सभी ववरण को ह डयों क कुछ टुकडों क आधार पर तयार करत हं। (वास्तव मं, य जीवाश्म र द शर्स करत हं क कभी भी वकासपरक र र या नहीं हुइ – एकदम वपरीत जो क वकासवादी दावा करत हं!) स्वभावतः, ह डयों क टुकड कोइ नचत सूचना रदान नहीं कर सकत क बहुत राचीन काल मं लोगों को कौन सी भावनाएँ उव लत करती थीं, उनका रोजमरा का जीवन कसा था, या व अपन बीच काम का बँटवारा कस करत थ।

तथा प, मानव वकास की कहानी ऐस अन गनत प रदृशयों और कल्पनाओं स समृध ह, और वकासवादी इनका वस्तृत रयोग करत हं। खुद को वकासवाद की शु आत स, इस सधांत स मुत करन मं असफल करन क कारण उनहोंन उपयुस्त प रदृशय क भनन-भनन संस्करण पश कए हं। ल कन उनका उदशय स्थ त को स्पष्ट करना नहीं ह, अ पतु सधांतों और र चार को हवा दना ह, जसस क लोगों को ववा स दलाया जा सकत क आ द मानव कभी वास्तव मं था।

अनक वकासवादी ऐस प रदृशय पश करक अपन दावों को सा बत करना चाहत हं, चाह समथर्न मं कोइ सबूत न भी हों। लक न हर नइ खोज की जब पष पातपूणर् तरीक स व्याखया की जाती ह, तो व बहुत साफ तरीक स उनक सामन कुछ तथयों का खुलासा करती ह, जनमं स एक हः आदमी अपन अ स्ततव क पहल दन स ही आदमी था। बु ध और कलातमक योग यता जस गुण इ तहास क सभी कालों मं समान थ। पछल समय मं रहन वाल लोग आ दमानव, आध आदमी आध जानवर नहीं थ, जसा क वकासवादी चाहत हं क हम ववा स करं। व हमारी तरह ही सोचन वाल, बोलन वाल मानव थ, जनहोंन कला क कायर् पश कए और संस्कृ त और न तक संरचनाएँ वक सत कीं। जसा क हम शीर ही दखंग, पुरातात्वक और पुराजीवन शास्र की खोजं इस साफ तौर स और बना शंका क सा बत करती हं।

हमारी अपनी सभ्यता स क्या बचा रहगा?

कल्पना करं क आज की महान सभ्यताओ स आन वाल संकडों हजारों साल बाद क्या बचा रहगा। हमारी सारी सांस्कृ तक संपदा – पंटंग, मू तर्याँ और महल – सब गायब हो जाएँग, और हमारी वतर्मान रौयो गकी का लश मार ही बचा रह सकगा। टूट-फूट को रोकन क लए डजाइन की गइ अनक साम रयाँ धीर-धीर, रा कृ तक

स्थ तयों मं, नट होन लगंगी। स्टील मं जंग लगता ह। कंकरीट नट होता ह। जमीन क नीच की सु वधाएँ ढह जाती हं, और सभी साम रयों को रखरखाव की जू रत होती ह। अब कल्पना करं क द सयों हजार साल बीत गए हं, और इस बीच हजारों गलन बा रश हुइ ह, अनक स दयों की तज हवाएँ चली हं, बार-बार बाढ आइ और भूकंप आए हं। संभवतः जो बचा रहगा व होंग नक्काशी क बड पतथर, खुदाइ क खंड जनस भवन बनत हं और व भनन मू तयों क अवशष, जस की पुरान समय स हमार पास आया ह। या हो सकता ह क हमारी वक सत सभ्यता को कोइ न चत नशान न बच, जसक आधार पर हमार रोजमरा क जीवन को पूरी तरह स समझा जा सक, कवल अफरीका, ऑस्ट्र लया या दु नया क कुछ अनय स्थानों जनजा तयों क नशान बचं। दूसर शब्दों मं, हमार पास जो रौयो गकी ह (टली वजन, कंप यूटर, माइर ोवव ओवनों, आ द) को कुछ भी नशान न बच और कवल भवन की मुखय ू परखा या मू तयों क कुछ टुकड ही शायद बच रहं। भ वषय मं, वज्ञा नक इन बखर हुए अवशषों को दखंग और हम जस समय मं रह रह हं उन सब समाजो का वणन "सांस्कृ तक ू प स पछड हुए" क ू प मं करंग।

या, य द कोइ मंडा रन मं लख गए कसी काम को दखगा और कवल इसी पाठ क आधार पर नषकषर नकालगा क चीनी प छड हुइ जा त थी, जो अजीब संकतों क आधार पर संर षण करती थी। औगुस्ट रो डन की मू तर "द थंकर" क उदाहरण पर गौर करं, जसस पूरी दु नया प र चत ह। कल्पना करं क द सयों हजार साल बाद पुराततव वज्ञा नक इस मू तर की फर स खोज करत हं। य द उन अनुसंधान-कता ओं क हमार समाज क व वासों और जीवन-शली क बार मं अपन खुद क कुछ पूवरह होंग, और उनक पास पया प त ऐ तहा सक रलखन की कमी होगी, तो व इस मू तर की अलग-अलग ढंग स व्याखया कर सकत हं। व कल्पना कर सकत हं क हमारी सभ्यता क सदस्य सोचत हुए व्य त की पूजा करत थ, या दावा कर सकत हं क वह मू तर कसी म थकीय झूठ दवता का र त न धतव करती ह।

आज, न चत ू प स, हम जानत हं क "द थंकर" कायर मार सु च, कला क कारणों स रचा गया था। दूसर शब्दों मं, य द द सयों हजार साल बाद का अनुसंधानकता क पास काफी जानकारी नहीं ह और पुरान समय क बार मं उसक खुद क पूवर रह युत वचार हं, तो उसक लए सचचाइ पर पहुँचना क ठन होगा, क्यों क वह "द थंकर" की व्याखया अपन पूवरहों क आधार पर करगा और कोइ उपयुत प रदृशय बना लगा। इस लए, अपन पास की सूचना का सभी तरह की पूवर धारणाओं स बचत हुए, बना कसी पूवरह या दुरार ह क मूल्यांकन करना, और व्यापक दृ ट स सोचना सबस जयादा महतवपूणर ह। कभी न भूलं क हमार पास इस बात क कोइ सबूत नहीं हं क समाज वक सत होत हं या पछल समय मं समाज आ दम थ। य सुझाव मार कल्पनाएँ हं और कवल उन इ तहासकारों क वलषण पर आधा रत हं, जो वकास का समथन करत हं। उदाहरण क लए, गुफा की दीवार पर जानवर क चर का ततकाल गुफा मानव क आ दम चर क ू प मं वणन कया जाता ह। फर भी य चर उस समय क मानव क सौंदयबोध की समझ क बार मं बहुत कुछ कहत हं। सवा धक आधु नक वस्र धारण कए एक कलाकार न हो सकता ह क उनहं कवल कला क कारणों स तयार कया हो। न चत ू प स, अनक वज्ञा न क अब संभावना पर बल दत हं क य गुफा क चर कसी आ दम दमाग का काम नहीं हो सकत।

तज धार वाल पतथरों की "बंदर-मानव" वारा न मस पहल औजारों क ू प मं व्याखया एक अनय उदाहरण ह। हो सकता ह क उस समय क लोगों न इन पतथरों को नुकीला कया हो और सजावट क लए उनका रयोग करत हों। इस बात का कोइ सबूत नहीं ह, कवल अनुमान ह क इन रा पत हुए टुकडों को इन लोगों न औजारों की तरह न चत ू प स रयोग कया था। वकासवादी वज्ञा नक न खुदाइ क दौरान मल सबूतों की पष पातपूणर दृ टकोण स समीषा की ह। उनहोंन अपन नज रय स कुछ जीवाशमों क साथ खल कया ह, अपन सधांतों को सा बत कया ह, और अनय क सधांतों को नजरअंदाज कया ह या यहाँ तक क खा रज भी कया ह। यह दखान क लए भी इसी तरह क खल खल गए हं क इ तहसा भी वक सत होता ह। [3] अम रकी नृततव शास्री मल वल हस्को वटस न वणन कया ह क "इ तहास क वकास" का सधांत कस वक सत हुआ और वकासवादी इन सबूतों की व्याखया कस करत हं:

सांस्कृ तक वकास क हर रचारक न अपनी समझ स र ग त का राकल्पना-परक ब्लू रंट रदान कया ह, जस क मानव का वकास हुआ होगा, इस लए गरु-रखीय र म क अनक उदाहरण रकाडर हो गए हं। इनमं स कुछ तरक्की संस्कृ त क एकल पहलू तक सी मत रही ह... [4]

हस्को वटस की वचारधारा की पु ट क लए सबस महतवपूणर उदाहरण एक अधययन ह, जो वकासवादी एथनोरा फर लुइस हनरी मोगन न की थी, जनहोंन समाज क उन चरणों का अधययन कया ह, जनमं स वह पतृक या मातृक संरचना बनन क लए गुजरता ह, जसका उनका दावा ह क आ दम स अ धक वक सत की ओर "वकास" हुया ह। ल कन अपना अनुसंधान करत हुए, उनहोंन अपन उदाहरणों क ू प मं पूरी दु नया स व भनन समाजों का रयोग कया ह, जो एक दूसर स बल्कुल भी जुडी हुइ नहीं थी। इसक बाद उनहोंन उनहं अपन वां छत प रणाम हा सल करन क लए र मबध कया। यह साफ ह क दु नया की संकडों हजारों संस्कृ तयों मं स उनहोंन कवल उनहीं को चुना जो उनक पूवरधारणा क रबंध स संगत थीं।

हस्को वटस न दखाया ह क अपन वचारों को पु ट करन क लए मोगन न इ तहास की पुनः व्यवस्था कस की। बहुत आ दम मातृक ऑस्ट्र लया स शु ू करक, उनहोंन एक रखा बनाइ जो पतृक अम रकी भारतीयों तक जाती थी। इसक बाद व अपनी शृंखला को रोटो-ऐ तहा सक काल की र सयन जनजा तयों तक ल गए, जब क अवरोह न चत ू प स पु ष रखा मं आता थी, ल कन एक ही व्य त स ववाह की कोइ सखत परंपरा नहीं थी। उनक

बढत पमान मं आज क समाज वारा र त न धतव इस अंतम र वट न कया ह – पु ष रखा मं अवरोह और एक क्य त स ववाह की सखती।

इस काल्प नक र म पर हस्को वटस की टप प णयाँ:

ल कन ऐ तहा सक उपागम क दृ टकोण स यह शृंखला, काफी काल्प नक ह... 5

गुफाओं की उननत कला

वकासवा दयों का मानना ह क युरोप मं लगभग 30-40,000 साल पहल, और अफरीका मं इसस भी पहल की अव ध मं, तथाक थत बंदर-जस मानवों न आक स्मक संचरण र र या का अनुभव कया, और अचानक उनमं सोचन की योग यता आ गइ और व चीजं उतपा दत करन लग, जस की आज क समय क मानव करत हं। यह इस लए ह, क्यों क उस काल की पुराता त्तवक खोजं वकासवाद क सधांत क महतवपूणर सबूत दती हं, जनकी व्याखया नहीं की जा सकती। डा वनवा दयों क दावों क अनुसार, पतथर क उपकरणों की रौयो गकी, जो लगभग 200,000 सालों स अप रव तर्त रही ह, अचानक ही अ धक उननत और तजी स वक सत हो रही हाथ स न मर्त रौयो गकी मं बदल गइ। तथाक थत आ द मानव, जो अचानक पडों स नकला था और कवल कुछ समय पहल ही आधु नक बनना शु हुआ था, न अचानक कलातमक र तभा का वकास कर लया और गुफाओं की दीवारों पर असाधारण सौंदयर वाली और प रषकृत चर उकरना शु कर दया और उनस कंठहार और कंगन जस अतय धक सुंदर सजावटी चीजं बनाना शु कर दया।

ऐसा वकास करन क लए क्या हुआ था? "आध-बंदर आ दम रा ण" मं ऐसी कलातमक योग यता कस और क्यों आइ? वकासवादी वज्ञा नकों क पास इसका कोइ व्याखया नहीं ह क यह कस हुआ होगा, हालाँ क व अनक राककल्पनाएँ अवशय रस्ता वत करत हं। वकासवादी रोजर ल वन इस वषय पर अपनी पुस्तक ओ र जन ओर माडनर युमंस मं उन क ठनाइयों का वणर्न करत हं, जनका डा वनवादी सामना करत हं: "शायद इस लए क अभी तक का अधूरा पुराततव संबंधी रकाडर अभी तक भी अस्पट ह, इस लए ववान इन रनों का उतर बहुत अलग-अलग तरीकों स दत हं।" [9]

तथा प, पुरात्तवक खोज खुलासा करती हं क आदमी सांस्कृ तक समझ तब स ह जब स वह अ स्ततव मं ह। समय-समय पर, वह समझ वक सत, उलटी हो गइ होगी, या उसमं अटपट बदलाव आ गए होंग। ल कन इसका यह अथर नहीं ह क कोइ वकासवादी र र या हुइ होगी, सवाय इसक क सांस्कृ तक वकास और बदलाव हुए थ। जस कला क कायर को क रकट होन को वकासवादी "आक स्मक," क प मं व णर्त करत हं, वह कोइ जीववज्ञा नक मानव र ग त को नहीं दशा ता (खास तौर स बौ धक योग यता क मामल मं)। उस समय लोगों को व भनन सामा जक बदलावों का अनुभव हुआ होगा, और उनकी कलातमक और उतपादक समझ बदल गइ होगी, ल कन इसस आ दम स आधु नक मं संचरण का कोइ सबूत नहीं बनता।

पुरान समय मं लोगों वारा छोड गइ पुरात्तवक अवशषों और जीव-संरचना और ज वक अवशषों क बीच जो वरोध होना चा हए – वकासवा दयों क अनुसार – वह एक बार फर डा वनवा दयों क इस वषय पर दावों को अमानय कर दता ह। (तथाक थत मानव प रवार वृ ष क वज्ञा नक ध्वंस क वस्तृत सबूत क लए, जसका डा वनवादी पुरातनपंथी दावा करत हं, दख ए डा वनजम रफयूटड, लखक हा रु न याया।) वकासवा दयों का दावा ह क मानव का सांस्कृ तक वकास उसक ज वक वकास क अनुपात मं होना चा हए। उदाहरण क लए, मनुषय को पहल अपन भाव सरल चरों क वारा रकट करन चा हए, और फर इसका आग वकास करना चा हए जब तक क उनका र मक वकास कलातमक उपल ब्ध की ऊँचाइ पर नहीं पहुँच जाता। तथा प, मानव इ तहास क शु आती कलातमक अवशष इस अनुमान को गलत सा बत करत हं। कला क पहल उदाहरणों क प मं व्यापक प स प र चत गुफा पं टंग, नक्काशी और रलीफ सा बत करत हं क उस युग क मानव क पास बहुत उतकृट सौंदयबोध की समझ थी।

गुफाओं पर शोध करन वाल वज्ञा नक इन चरों को कला क इ तहास मं सवा धक महतवपूणर और मूल्यवान कामों मं स एक क प मं मूल्यां कत करत हं। इन चरों को शड करना, दृ टकोण का रयोग और नयो जत की गइ बारीक रखाएँ, रलीफ मं वशषज्ञ क प मं गहराइ क भाव का र त बंब, और नक्काशी पर सूयर की करणों क पडन स उभरन वाल सौंदयबोध क र तदशर – व वशषताएँ हं जनहं वकासवादी स्पट करन मं अष म हं क्यों क डा वनवा दयों क वचार क अनुसार, ऐसा वकास बहुत बाद मं होना चा हए।

फरांस, स्पन, इटली, चीन, भारत, अफरीका क भागों और दु नया क अनय व भनन ष रों मं मली अनक गुफा पं टंग मानवता की पूवर सांस्कृ तक संरचना क बार मं महतवपूणर सूचना रदान करती हं। इन चरों मं अपनाइ गइ शली और रंग की तकनीकं ऐसी गुणवता की हं क व अनुसंधान-कता ओं को दंग कर दती हं। ल कन फर भी, डा वनवादी वज्ञा नक उनका मूल यांकर अपन खुद क पूवर्ह क वारा करत हं, और इन कायो की व्याखया पष पातपूणर ढंग स करत हं जसस क व उनकी वकासवादी प र कथाओं क उपयुत हो सकं। उनका दावा ह क उन रा णयों न जो अभी-अभी मानव बन हं, उन जानवरों की तस्वीरं बनाइ हं, जनस या तो व डरत थ या जनका व शकार करत थ, और उनहोंन यह काम गुफाओं की अतय धक आ दम स्थ तयों मं कया जनमं व

रहत थ। ल कन इन कायो मं जो तकनीक अपनाइ गइ ह, वह दखाती ह क उनक चरकारों क पास बहुत गहरी समझ थी, और व इस सवा धक रभावशाली ढंग स च रत करन मं सषम थ।

इनमं नयोज त पंटंग की तकनीक यह भी दखाती ह क व आ दम स्थ तयों मं बल्कुल भी नही रहत थ। इसक अलावा, गुफा की दीवारों पर य चर इस बात का कोइ सबूत नही ह क उस समय क लोग उन गुफाओं मं रहत थ। कलाकार पास क कसी वक सत आर य मं रहत होंग, ल कन उनहोंन गुफा की दीवारों पर अपनी छ वयों की रचना करना चुना होगा। रस्तु त क ल ए उनहं कन भावों और वचारों न र रत कया, यह कवल कलाकार को ही ञात था। इन चरों क बार मं बहुत अटकलं लगाइ गइ हं, जनमं स सबस जयादा अव्यावहा रक व्याखया यह ह क व उन रा णयों न बनाइ हं जो अभी भी आ दम स्थत मं थ। न चत ू प स, बीबीसी क वञान वब पज पर 22 फरवरी 2000 को रका शत एक रपोटर मं गुफा पंटंग क बार मं नमन ल खत पं तयाँ शा मल थीं:

... [हमन] सोचा था क उनहं आ दम मानव न बनाया था... ल कन द षण अफरीका मं काम करन वाल दो वञा नकों क अनुसार, राचीन पंटरों का यह वचार पूरी तरह स गलत ह। उनका ववास ह क य पंटंग ज टल और आधु नक समाज का रमाण हं। [10]

य द आज क हमार अनक कला-कायो का हजारों साल क समय क उसी तरक स वलषण कया जाए, तो इस बार मं अनक बहस उभर सकती हं क 21 वीं सदी का समाज आ दम जनजा त था या वक सत सभ्यता। य द आज क समय क कलाकारों क साबुत चरों की 5,000 साल बाद खोज होती ह, और आज क समय का कोइ ल खत रलखन नहीं बचता, तो हमार खुद क युग क बार मं लोग क्या सोचंग?

य द भ वषय क लोग वन गोग या पकासो क चरों की खोज करंग, और उनका मूल्यांकन वकासवादी दृ टकोण स करंग, तो व आज क समाज को क्या मानंग? क्या क्लाउड मोनट क प रदृशय इस तरह की टप प णयों को र रत करंग क "अभी तक उयोग का वकास नहीं हुआ था, और लोग कृ ष की जीवन शली बता रह थ," या व स ल कं डंस्की क अमूतर चर इस तरह की टप प णयों को र रत करंग क "लोग अभी भी पढन- लखन मं सष म नहीं थ और व भनन संकताषों स संर षण करत थ"? क्या इस तरह की व्याखयाएँ उनहं मौजूदा समय क हमार समाज क बार मं कसी अंतदृरट तक ल जाएँगी?

राचीन सभ्यताओं के स्तव करने वाले अवशेष

सामा जक-आ थरक वकास की ु टपूणर संकल्पना व भनन समय पर औगस्ट कोमट, हबटर स्पंसर और लुइस हनरी मोगरस जस वचारकों न रस्ता वत कया – और बाद मं यह कहत हुए चाल्स डा वरस क सधांत क साथ जोड दया गया क सभी समाज आ दम स ज टल सभ्यता की ओर वकास करत हं। इस ु ट न, जो 19 वीं सदी मं पनपी और उसका असर पहल वव युध क बाद क समय मं बढ गया, तथाक थत ू प स नस्लवाद, उप नवशवाद, और ू र शुध जा त आंदोलन का "वञा नक"आधार पश कया। दु नया क व भनन भागों मं व भनन संस्कृ तयों, तवचा क रंग और शारी रक वशषताओं क साथ समाज क साथ अमानवीय व्यवहार हुआ, जो इस अवञा नक पूवरह स र रत था।

.

एडम फगुरसन, जॉन मलर और एडम स्मथ जस लखकों और चंतकों न सुझाव दया क सभी समाज चार मूल चरणों स नकल हं: शकार और इकठा करना, पशु-पालन और घुमक्कडी, खती और अंततः, वा णज्य। वकासवा दयों क दाव क अनुसार, हाल ही मं बंदरों स नकल आ दम मनुषय न कवल सरलतम उपकरणों स शकार कया और पौध और फल इकठ कए। जस-जस उनकी बु ध और योग यताओं का र मशः वकास हुआ, उनहोंन भड और गाय जस चरन वाल जानवरों को पालना शु ू कया। उनकी बु ध और योग यता र मशः उस बंदु तक बढी क व खती का काम करन लग, और आ खर मं, व व्यापार और सामान क लन-दन मं लग गए।

तथा प, पुराततव, नृ वञान, और वञान की अनय शाखाओं मं र ग त और हाल की खोजों न "सांस्कृ तक और सामा जक वकास" की कहानी क मूल दाव का अमानय कर दया ह। यह आदमी को बु धहीन जानवरों स वक सत हुआ च र त करन क और इस मथ को – जस तरीक स व दाशर्नक कारणों को समझत हं – वञान पर थोपन क भौ तकतावा दयों क रयासों अ धक कुछ नहीं ह।

इस बात स यह पता नहीं चलता क मानव शकार और खती स बचा रहा, क वह अ धक पछडा हुआ या अ धक वक सत बु ध का था। दूसर शब्दों मं, कोइ भी समाज शकार मं इस लए नहीं लगता क यह पछडा हुआ और मान सक ू प स बंदरों क नजदीक होता ह। खती मं लगन का अथर यह नहीं ह क समाज आ दमता स दूर हो गया ह। समाज की कसी भी ग त व ध का यह मतलब नहीं ह क नवासी अनय रा णयों स नकल हं। ऐसी ग त व धयाँ, कसी भी तथाक थत वकासवादी र र या स, ऐस व्य त पदा नहीं करतीं, जो बु ध या योग यता मं अ धक उननत हों। रौयो गकी की दृ ट स पछडी हुइ आज की अनक जनजा तयाँ कवल शकार और इकठा करन मं लगी हुइ हं, ल कन इसका न चत ू प मं यह अथर बल्कुल नहीं ह क व मानव स कसी ू प मं कम हं। यही बात भ वषय मं द सयों हजार साल बाद रहन वाल मानवों पर लागू होगी, जस क यह संकडों हजारों साल पहल रहन वाल लोगों पर लागू होती ह। बाद वाल आ दम मानव नहीं थ, और न ही व जो भ वषय मं अ धक उननत जा तयाँ होंगी।

समाज की जीवन-शली क आधार पर सभ्यता का वकासवादी इ तहास बनाना अवज्ञा नक उपागम ह। यह दृ टकोण व भ नन पुरातात्वक खोजों को वज्ञा नकों क भौ तकतावादी पूवर्ग्रहों क अनुसार व्याखया करन पर आधा रत ह, जो इस अनुमान पर आधा रत ह क जन मानवों न पतथरों क औजारों का रयोग कया था, व बंदर-मानव थ, जो गुरा त थ अपन घुटन झुकाकर चलत थ, और उनमं जानवरों जस व्यवहार दखता था। फर भी खोज कया गया कोइ भी अवशष इन लोगों की मान सक षमताओं क बार मं कोइ संकत नहीं करता। यह सब कवल अनुमान ह। जसा क पहल ही कहा जा चुका ह, य द आज क काल क व भनन उदाहरण 100,000 साल क बाद खोज जाएँग और य द भ वषय क लोगों को पास और जानकारी नहीं होगी, तो इस बात की संभावना ह क व आज की मानवता और हमारी रौयो गकी की बहुत अलग व्याखया करंग।

जसा क हमन दखाया ह, यह वचार कसी भी तरह क वज्ञा नक सबूत पर आधा रत नहीं ह क समाजों का वकास हुआ ह। इस सधांत का आधार गलत, और अवज्ञा नक ह क आदमी क पास मूल बंदर-जसा दमाग था। हॉवडर वव वयालय क वकासवादी नृ वज्ञानी व लयम होवल्स न माना ह क वकास क सधांत अनय सवाल उठाता ह, शरीर क बार मं नहीं ब ल्क व्यवहार क बार मं जनका संबंध दशर्स, वज्ञा नक तथयों को तय करन स ह, जो बहुत अ धक क ठन ह। होवल्स संकत करत हं क व्यवहार का इस ूप मं "जीवाशम" नहीं होता जसा क खोपडी का होता ह और यह पतथर क औजार की तरह बचा नहीं रहता। इस लए, उनका कहना ह क हमार पास इस बात का बहुत कम संकत ह क राचीन काल मं क्या हुआ होगा। व यह उल्लख भी करत हं क इस तरह की राककल्पना का परीष ण करना लगभग असंभव ह। [36]

हाल ही मं, न चत ूप स, अ धसंखयक सामा जक वज्ञा नकों न वकासवादी वचारों मं ु टयों को माना ह, और कहा ह क सामा जक- वकास का सधांत नमन ल खत बातों पर वज्ञान स वरोध मं हः

1. व भनन समाजों की पष पातपूणर् व्याखया करन क कारण यह जातीय भदभाव स नकट स जुडा हुआ ह, उदाहरण क लए, यह अनुमान क प चमी समाज अ धक सभ्य थ।

2. यह सुझाव दता ह क सभी समाज एक ही मागर् पर, एक ही तरीक का रयोग करक र ग त करत हं, और उनक समान उदशय होत हं।

3. यह समाज को भौ तकतावादी दृ टकोण स दखता ह।

4. यह रमुख ूप स खोजों स संगत नहीं ह। आ दम स्थ तयों मं रहन वाल अनक समुदायों क पास आधु नक मान जान वाल व भनन समुदायों की तुलना मं अ धक सभ्य आधया तमक मूल्य होत हं
– दूसर शब्दों मं व शां त- रय होत हं और समानता का पष लत हं। अपनी खुराक क कारण, अनक स्वस्थ और मजबूत नहीं होत।

जसा क य बातं साफ तौर स दखाती हं, यह संकल्पना क समाज आ दम स सभ्यता की ओर र ग त करता ह, वज्ञा नक मूल्यों और तथयों स संगत नहीं ह। यह सधांत भौ तकतावादी वचारधारा क रभाव मं तोडी-मरोडी गइ व्याखयाओं पर आधा रत ह। पछली सभ्यताओं वारा छोड गए अवशष और कला-कृ तयाँ "इ तहास और संस्कृ त क वकास" मं ु टयों का खुलासा करती हं।

अतीत के नशान र म वकास का खंडन करते है

वगत सभ्यताओं स रापत नषकषर् "आ दम स सभ्य की ओर र ग त" क सधदांत का खंडन करत हं। जब हम इ तहास की र ग त का परीष ण करत हं तो जो सच उभर कर आता ह वह यह ह क मनुषयों को सदव एक जसी बु धदमता और रचनातमकता हा सल रही ह। लाखों वषर् पहल क लोगों क कायो और उनक नशानों का वास्तव मं उसस बहुत भनन अथर् ह जसा वकासवादी दावा करत हं। जब हम इन नशानों पर नजर डालत हं तो हम दखत हं क वगत क सभी युगों मं लोगों न अपनी बु धदमता और षमताओं क साथ नयी-नयी खोजं की हं, अपनी जू रतों की पू तर् की ह और सभ्यताओं का नमा ण कया ह।

भज गय पगंबरों न बड प रवतर्नों की शु आत कराकर अपन कौमों को वकास और र ग त मं सहायता की। अल्लाह क इन पगंबरों क पास वस्तृत वज्ञा नक ज्ञान था। उदाहरण क लए पगंबर नूह (अ.) नाव बनान की रौयो गकी जानत थ, जसा क हम कुरान स समझ सकत हं क उनका जहाज भाप स चलता था (खुदा सचचाइ जानता ह) :

यहाँ तक क जब हमारा हुक्म (अजाब) आ पहुँचा और *तननूर स जोष मारन लगा* तो हमन हुक्म दया (ऐ नूह) हर कस्म क जानदारों मं स (नर मादा का) जोडा (या न) दो दो ल लो और जस (की) हलाकत (तबाही) का हुक्म पहल ही हो चुका हो उसक सवा अपन सब घर वाल और जो लोग इमान ला चुक उन सबको कषती (नाँव) मं बठा लो और उनक साथ इमान भी थोड ही लोग लाए थ (सुरा हुद : 40)

तननुर क नाम स मशहूर इस रकार की भठी का रयोग अभी भी वभनन षरो मं कया जाता ह। यह इस आयत मं कही गइ ह क यह भठी पानी आग छोडती ह। इस रकार, यह जहाज चूलह क बुलबुल छोडन स या दूसर शबों मं चूलह क खौलन स आग बढन क लए तयार था। अपनी तफसीर मं एलमाली क हमदी याजर कहत हं क कशती "कसी स्टोव स ऊजा रापत करन वाला एक रकार का भाप का जहाज था।"

तननुर : इस शबकोश मं बंद भठी या स्टोव क ूप मं वणस कया गया ह। "फरा" शब का मतलब उबलना और काफी जोर और वग क साथ फुहारं छोडना ह। दूसर शबों मं इसका यह नहताथर ह क नौका अकल पतवार स ही चलन वाली नही ह बलक स्टोव स ऊजा रापत करन वाल स्टीमर की याद दलाती ह।[37]

पगंबर हजरत सुलमान (अ.) क समय मं भी वजान, कला और रौयोगकी क षर मं काफी रगत हुइ। उदाहरण क लए कुरान हमं बताता ह क उनक काल मं हवाइ जहाज जतन तज परवहन क वाहन काम मं लाय जात थ : "और हवा को सुलमान का (ताबदार बना दया था) क उसकी सुबह की रफ्तार एक महीन (मुसाफत) की थी और इसी तरह उसकी शाम की रफ्तार एक महीन (क मुसाफत) की थी । (सुरा सबा :12)

यह आयत साफ-साफ इस बात का संकत दती ह क लंबी-लंबी दूरयों को तजी क साथ पार कया जा सकता था। यह हवा मं चलन वाल उन वाहनों क बार मं बताता ह जो क हमार अपन समय मं काम आन वाली रौयोगकी की तरह की रौयोगकी का रयोग करत थ। (अललाह सचचाइ जाता ह।) इसक अलावा, कुरान हमं बताता ह :

गरज सुलमान को जो बनवाना मंजूर होता य जननात उनक लए बनात थ (जस) मसजदं, महल, कल और (फरशत अमबया की) तसवीरं और हौजों क बराबर पयाल और (एक जगह) गडी हुयी (बडी बडी) दगं (क एक हजार आदमी का खाना पक सक) ऐ दाऊद की औलाद शुर करत रहो और मर बनदों मं स शुर करन वाल (बनद) थोड स हं (सुरा सबा : 13)

दूसर शबों मं, पगंबर सुलमान (अ.) न अपन लोगों को नमाण एवं वासुशलप की अतयंत उननत रौयोगकयों को काम मं लान पर लगाया। एक दूसरी आयत बताती ह क : और (इसी तरह) जतने शयातीन (देव) इमारत बनाने वाले और गोता लगाने वाले थे (सुरा साद : 36-37)

यह तथय क पगंबर सुलमान (अ.) गोताखोर दव को नयंरत कर सकत थ, समुर क नीच क संसाधनों की जगह और उसक उतखनन का संकत दता ह। समुर क नीच क तल और बशकीमती धातु क उतखनन की ररयाओं और काम क लए अतयधक उननत रौयोगकी की आवशयकता पडती ह। य आयत इस बात पर जोर दती हं क इस रकार की रौयोगकी का असतव भी था और उस काम मं भी लाया जाता था। एक और आयत "पघले हुए तांबे के उगम" क बार मं बताता ह (सुरा सबा : 12)। पघल हुए तांब का रयोग इस बात का संकत दता ह क पगंबर सुलमान (अ.) क समय मं बजली को उपयोग मं लान वाली उननत रौयोगकी का असतव था। जसा क हम जानत हं तांबा धातु और ऊषमा क बहतरीन चालकों मं स ह, यही वजह ह क यह बजली उयोग क आधार का रतनधतव करता ह। यह शबावली, "हमन पघल हुए तांब क रवाह का रोत तयार कया ह" संभवत: इस बात को दशाता ह क बड पमान पर बजली पदा की जाती थी और बहुत स रौयोगकीय षरों मं उसका इसतमाल होता था। (अललाह सचचाइ जानता ह।)

कइ आयतं बताती हं क पगंबर दाऊद (स.) को लोह क काम और कवच बनान की अचछी जानकारी थी :

और उनक वासत लोह को (मोम की तरह) नरम कर दया था,
क फराख व कुशादा जरह बनाओ और (कडयों क) जोडन मं अनदाज का खयाल रखो और तुम सब क सब अचछ (अचछ) काम करो वो कुछ तुम लोग करत हो मं यकीनन दख रहा हूँ (सुरा सबा : 10-11)

कुरान मं इस बात का भी उललख ह क जुल-कुरनन न दो पहाडयों क बीच अवरोध नमस कया जस क पार नहीं कया जा सकता या उस समय क समाजों वारा जनस होकर सुरंग नही बनायी जा सकती थी। संबंधत आयत क मुताबक व लोह की सललयों और ढलुआ तांब का रयोग करत थ :

(अचछा तो) मुझ (कहीं स) लोह की सलली ला दो (चुनांच वह लोग) लाए और एक बडी दीवार बनाइ यहाँ तक क जब दोनो कंगूरो क बीच (दीवार) को बुलनद करक उनको बराबर कर दया तो उनको हुकम दया क इसक गदर आग लगाकर धौंको यहां तक उसको (धौंकत-धौंकत) लाल ऍगारा बना दया (सूरा अल-कहफ: 96)

यह जानकारी इस बात का संकत दती ह क जुल-कुरनन सुदृढीकृत ठोस रौयोगकी का रयोग करत थ। नमाण कायो मं रयोग मं लायी जान वाली सबस मजबूत सामरयों मं स एक लोहा इमारतों, पुलों और बांधों की तरह क वासुशलपीय कायो की शत मं वृधद करन क लए अतयावशयक ह। इस आयत स ऐसा जान पडता ह क उनहोंन एक सर स दूसर सर तक लोहा बछाया और उसक ऊपर मसाला डालकर मजबूत ठोस इमारत का नमाण कया। (सचचाइ अललाह जानता ह।)

राचीन मधय अमरकी सभयताओं क शलालख एक लंब, दाढीवाल वयत का उललख करत हं जो क सफद कपड पहन हुए आता ह। व हमं इस बात की भी जानकारी रदान करत हं क थोड समय क भीतर अकल अललाह मं ववास का रसार होगा और कला एवं वजान क षर मं लंबी छलांग लगाइ जाएगी।

हजरत याकूब (अ.), हजरत यूसुफ (अ.), हजरत मूसा (अ.) और हजरत आरोन (अ.) की तरह बहुत स पगंबरों को राचीन म र में भजा गया। इन पगंबरों और उनमं ववास करन वाल लोगों न बहुत संभव ह क व भनन युगों मं मर वारा की गयी तव रत कलातमक और वजा नक र ग त मं महतवपूणर असर डाला होगा।

कुरान और हमार पगंबर (स.) की सुननत पर चलत हुए मु स्लम वजा नकों न नष र वजान, ग णत, ज्या म त औष ध और अनय वजानों मं महतवपूणर खोजं की। इनकी वजह स वजान और सामा जक जीवन मं रमुख प रवतन हुए और उल्लखनीय र ग त हुइ। इन मु स्लम वजा नकों और उनक कायो मं स कुछ इस रकार ह :

अब्द अल-लतीफ अल-बगदादी शरीर रचना वजान पर अपन काम क लए जान जात हं। उनहोंन नचल जबड और उरोस्थ की तरह की शरीर स जुडी पहल की बहुत सी र ां तयों को दूर कया। उनका अल-इफादा वा अल-इ तबार 1788 मं सामन आया और ल टन, जमन और र ांसीसी भाषा मं उसका अनुवाद हुआ। उनहोंन अपन मकालतून फअल-हवास मं पांच जानं रयों का अध ययन कया।

इब्न सीना (अ वसीनना) बहुत सी बीमा रयों का उपचार दया। उनकी सुर स धद रचना कताब अल-कानून फ अल- तब अरबी मं लखी गयी थी और 12वीं सदी मं उसका ल टन मं अनुवाद कया गया। यूरोपीय व व वयालयों मं 17 वीं सदी तक बु नयादी पाठयपुस्तक क ू प मं इसको मानयता मली हुइ थी और इसी ू प मं इसकी पढाइ करवाइ जाती थी। इसकी बहुत सी च कत्सकीय जानकारी आज भी रयोग मं लायी जाती ह।

जका रया अल - कज वनी न म स्तषक और हृदय की बाबत बहुत स र ांत वचारों को दूर कया जनहं अरस्तु क समय स ही सही माना जाता रहा था। इन दो अंगों क बार मं जो जानकारी उनहोंन मुहया करायी वह हमार आज क जान स काफी मलती-जुलती ह।

जका रया अल-कज वनी, हमद अल्लाह मुस्तौफी कज वनी (1281-1350) और इब्न अल - नफीस न शरीर रचनाशास्र का अध ययन कया और आधु नक च कतसा वजान की नींव डाली।

अ ल इब्न इसा न आंख की बीमा रयों पर तीन खंडों मं तज करात अल - काहहलीन नामक पुस्तक की रचना की। पहला खंड पूरी तरह स आंखों की रचना को सम पत ह और इसमं काफी उपयोगी जानकारी रदान की गयी ह। कालांतर मं चलकर इसका ल टन और जमन मं अनुवाद कया गया।
अल-बू नी न गली लयो स 600 वषर पहल यह र द शत कया क पृथवी घूमती ह और नयूटन स 700 वषर पहल उसक व्यास का आकलन र स्तुत कया।

अली कुशजी न चंरमा की अवस्थाओं का अध ययन कया और इसी वषय पर पुस्तक लखी। उनका अध ययन भावी पी ढयों क लए मागदशक बना।

था बत इब्न कुरा न नयूटन स स दयों पहल वभदक आकलन की खोज की।

अल-बतानी क नष र वजान संबंधी पयवष णों की सटीकता न बाद क वजा नकों को आचयच कत कर दया।

उनहोंन 533 सतारों का अवलोकन कया और पृथवी स सूयर की अ धकतम दूरी की सटीक गणना र स्तुत की। र कोण मत पर उनक अधययनों और आकलनों न उनहं ग णत क ष र मं पथ-र दशक बना दया। र कोण म त को *सकटंट* और *कोसकटंट* की शबावली अबुल वफा की वजह स ही हा सल हुइ।

अल-खवा रज्मी न बीजग णत पर पहली पुस्तक लखी।

अपनी पुस्तक *तोहफत अल-अदा* मं अल-मगरीबी न र कोणों, चतुभुजों और वृतों समत ज्या मतीय आकृ तयों क धरातल ष र फल की गणना करन की पधद त वक सत की।

इब्न अल-हैसम र काश-वजान क संस्थापक हं। बकन और कपलर न उनकी कृ तयों का उपयोग कया और गली लयो न दूरबीन की खोज मं उनक कायो का उपयोग कया।

अल- कंदी न आइंस्टीन स 1,100 वषर पहल सापष ता और सापष ता क स धदांत को सामन रखा।

अकशमसदीन इतालवी च कतसक र कास्तोरो स 100 साल पहल जीवाणुओं क अ स्ततव क बार मं बतान वाल पहल व्य त थ।

अली इब्न अबास अल-मजूसी च कतसा वजान क पथ-र दशक थ और उनकी पुस्तक *का मल अस-सीना* को बहुत सी बीमा रयों क उपचार मं मूलभूत संदभर रंथ क ू प मं दखा जाता ह।

इब्न अल-अल जज्जर न कोढ क कारणों और उपचार का वर्णन किया ह।

ऊपर बहुत थोड स मुस्लिम वज्ञानिकों क बार मं बताया गया ह। उनहोंन ऐसी महतवपूर्ण खोजं की जो क कुरान और हमार पगंबर (स.) का अनुसरण करक आधुनिक वज्ञान का आधार निर्मित करंगी।

जसा क हमन दखा, पहल की बहुत सी कौमों न अपन पास भज गय पगंबरों क जरिय कला, चिकितसा, रौयोगिकी और वज्ञान क षर मं रगित की। पगंबर की आज्ञा मानकर और इन लोगों क सुझावों और रोतसाहन स सीखकर उनहोंन ज्ञान हासिल किया और उस आन वाली पीढियों को दिया। इसक अतिरित, सचच मजहब स वमुख हान और अंधविवासों को अपना लन वाल समाज इन पगंबरों क रयतनों क जरिय एक अल्लाह मं विवास करन लग।

जब पूर्व रह क बिना बीत युगों स संबंधित निषकर्षों पर वचार किया जाता ह तो मानवता क इतिहास को एकदम स्पष्ट और साफ ढंग स समझा जा सकता ह।

जसा क पहल ही बताया जा चुका ह, इतिहास की सभी अवधियों मं पिछडी और उननत सभ्यताएं एक साथ विद्यमान रही हं, जस व आज अस्तित्वमान हं। हमार अपन समय मं हमार पास अंतरिष रौयोगिकी ह जबक वव क कइ दूसर हिस्सों क लोग आदिम अवस्थाओं मं रह रह हं, इसी रकार स अतीत मं राचीन मिर मं जहां एक तरफ गौरवशाली सभ्यता का अस्तित्व था वहीं दूसरी तरफ वव क अनय हिस्सों मं अपषाकृत जयादा पिछड समाज थ।

माया संस्कृति क लोगों न अति वकसित शहर बनाया। उनक छोड हुए निशानों स पता चलता ह क उनक पास स्पष्ट रूप स वकसित रौयोगिकी थी। उनहोंन शुर रह की कषा की गणना की और वृहस्पति रह क चंरमाओं की खोज की। उसी दौर मं यूरोप क अधिकतर लोग यह विवास करत थ क पृथवी सौर रणाली का कंर ह। जहां मिर क लोग दमाग की सफल सर्जरी कर रह थ, दूसर षर मं लोगों का यह मानना था क बीमारियां बुरी आतमाओं की दन हं। अपनी कानूनी व्यवस्था, साहितय, कला की समझ और खगोल शास्त्र क ज्ञान की बदौलत सुमरियाइ लोगों न मसोपोटामिया मं गहरी जडों वाली सभ्यता वकसित की जबक दुनिया क एक दूसर कोन मं समाज निरषर था। इसलिए, जस तरह आज की सभी सभ्यताएं वकसित नहीं हं, अतीत मं कभी ऐसा नही रहा जब सभी कौमं पिछडी ही रही।

अब तक, हमन इतिहास क विभिनन दौर स जुड रमाणों का परीषण किया और दसियों या सकडों या हजारों साल पहल की सभ्यता क उदाहरणों की समीषा की। जयादा नजदीक क इतिहास पर नजर डालत हुए, हम पुन: रमाणों का अवलोकन करत हं क मानव समाज हमशा मानव ही रहा: यहां हम कवल "आदिम" लोगों का अधययन नही कर रह हं जो नरवानर स कुछ ही समय पहल अलग हुए, बलकि सभ्य मानव जाति की चर्चा कर रह हं जसक पास हजारो साल स टिकी सभ्यता की वरासत हो।

बीसवीं सदी मं रौयोगिकी क वकास क साथ, पुरातातविक अनुसंधान अतयंत तज हुआ, और मानव जाति क वास्तविक इतिहास स जुड अधिक स अधिक रमाण खोज गए। यह हकीकत उभर कर आइ क मिर, मधय अमरिका, मसोपोटामिया और अनय षरों मं हजारों साल पहल का जीवन कइ मायनों मं आज क जीवन जसा ही था।

महापाषाण: मानव इतिहास के वस्मयकारी शल्प-तथय

महापाषाण वशाल पाषाणखंड वाल कीर्तस्तंभों को दिया गया नाम ह। अनक राचीन महापाषाणीय अवशिष आज भी मौजूद हं। इन स्मारकों का सबस आचर्यजनक पहलू यह ह क इतन बड चटान, जनका वजन एक टन स अधिक ह, का उपयोग निर्माण मं कस किया गया, इतन भारी खंड निर्माण स्थल तक कस और कस तकनीक स लाए गए। इतन बड पाषाण खंडों को लोग कस निर्माण कार्य क नीच स ऊपरी हिस्स तक ल गए। य माहापाषाण आमतौर पर ऐस पतथरों स बनाए गए ह जनहं बहुत दूर स लाया गया और इनहं आजकल निर्माण और अभियांरकी का चमतकार कहा जाता ह। जन लोगों न ऐसा कार्य किया उनक पास निचित तौर पर कुछ अति वकसित तकनीक रही होगी।

सर्वरथम, बशक इस कीर्तस्तंभों क निर्माण क लिए योजना जरूरी ह, और उसकी जानकारी सटीक रूप स परियोजनाओं मं शामिल सभी लोगों को दी गइ होगी। जहां स्मारक बनाना ह वहां की तकनीकी राइंग तयार करना होगा। इसक अतिरित, इन राइंग की गणना बिना किसी रुटि क करना होगा कयोंक मामूली सी रुटि भी निर्माण को असंभव कर सकती ह। इसक अलावा, अगर निर्माण करना ह तो इसक रमिकं संगठित करन का काम भी दोषरहित रखना होगा। वांछित ढंग स निर्माण मं रगित क लिए रमिकों क समनवय और उनकी आवशयकताओं (भोजन, आराम आदि) भी अहम ह।

स्पष्टत:, इन स्मारकों क निर्माण मं जुट लोगों क पास संचित ज्ञान तथा उसस बहतर तकनीक रही होगी जसकी कल्पना की जाती ह। जसा क इस पुस्तक मं पहल दर्ज किया गया ह क, सभ्यताएं हमशा आग की

दशा मं नही चलती, कइ बार य पीछ भी चलती हं। और वास्तव मं, अ धकतर समय, दु नया क अलग-अलग भागों मं वक सत और पछडी दोनों सभ्यताएं साथ साथ मौजूद रहती हं।

यह ज्यादा स ज्यादा संभव ह क जन लोगों न इन कीतस्तंभों का नमाणर कया, उनक पास एक वक सत और समृधद सभ्यता रही हो जसा क पुराता तवक एवं ऐ तहास क अवशषों वारा दशा या गया ह। उनक नमा ण दशा त हं क उनक पास ग णत और ज्यामी त का बहुआयामी ञान था। मसलन, इस तरह क कीतस्तंभ क नमा ण क लए पवर्तीय इलाकों मं स्थर बंदु की गणना कर क स्मारकों क नमा ण क लए आव यक रौयो गकी उनक पास थी; क भौगो लक स्थ त की जानकारी क लए उनहोंन जो उपकरण (मसलन कुतुबनुमा) इस्तमाल कए और आवशयकता पडन पर नमा ण कायर क ल ए व सकडों-हजारों कलोमीटर दूर स सामरी ढोकर ला सकत थ।

स्पट ू प स, उनहोंन यह नमा ण कायर सफर आ दम उपकरणों और र मबल की सहायता स तो नही ही कया होगा। वास तव मं, अनुसंधानकता ओं और पुराततव वदों क अनक रयोगों मं यह दशा या गया ह क र मक वकास सधदांत मं रस्ता वत हालात मं इस तरह क स्मारकों का नमा ण असंभव सा काम रहा होगा।

वकासवा दयों क बताए काल्प नक "पाषाण काल" हालात मं इस तरह क स्मारकों क नमा ण का अनुसंधानकता ओं न रयास कया, ल कन व पूरी तरह असफल रह। इन अनुसंधानकता ओं न इस तरह क कसी ढांच क नमा ण मं कवल क ठनाइ ही महसूस नही की ब ल्क उनहोंन एक स्थान स दूसर स्थान तक इतन बड पतथरों को लान-ल जान मं भी बहुत क ठनाइ महसूस की। यह पुन: दशा ता ह क उस युग क लोगों न पछडा जीवन नही व्यतीत कया जसा क वकासवादी हमं ववास द लात ह। उस युग क लोगों न वास्तु शल्प को समझा और उसका उपयोग कया, नमा ण तकनीक का दष ता स इस्तमाल कया। व खगोलीय अनुसंधान मं भी व्यस्त रह।

यह पूणर समझन योग य ह क हजारों साल पुरानी सभ्यताओं क कवल चटान, पतथर क ढांच और पतथर क व भनन औजार ही बच रहं। यह कसी भी तरह तकर्संगत नही होगा क पतथर क कुछक ढांच और शल्प-तथयों को दखकर हम यह नषकषर नकाल ल क उस युग क लोग अ वक सत सभ्यता क थ जनक पास कसी भी तरह की कोइ रौयो गकी नही थी और व कवल पतथर का ही इस्तमाल करन मं सष म थ। व भनन मतारहों पर आधा रत ऐस दावों का कोइ वञा नक महतव नहीं ह। परंतु य द हम कसी पूवार्धारणा क नकारातमक रभाव मं आए बना इन नषकषो का मूल्यांकन करं तो अपन नष कषो को सचचाइ क ज्यादा करीब ला सकत हं। अगर लाखों साल पुराना समाज लकडी क शानदार घरों मं रहता था, शीश की खड कयों वाल खूबसूरत घर बनाए थ और बहुत आकषर्क सजावट का इस्तमाल कया था, तो उनमं स बहुत कम ही चीजं इस बीच की स दयों क दौरान हवा,पानी, भूकंप और बाढ का मार सह पाएंगी। रा कृ तक प र स्थ तयों मं लकडी, शीशा, तांबा, कांस्य और अनय साम र यों क नट होन मं 100 स 200 साल लगत ह। दूसर शब्दों मं, दो शताब्दी मं आपक घर की दीवारं खुद नट हो जाएंगी और अंदर की सजावट का बहुत थोडा हस्सा ही शष रह पाएगा। अगर भूकंप, बाढ या तूफान वगरह आए तो और भी कम अवशष बचंग। जो कुछ बचंग व पतथर क टुकड होंग जनहं नट होन मं बहुत समय की आवश यकता पडती ह। तब तक पतथर की साम र यां भी छोट टकडों मं तब्दील हो जाएंगी। पतथर क इन टुकडों क आधार पर, उस दौर क लोगों क द नक जीवन क बार मं व्याखया करना असंभव ह। उस दौर क लोगों क सामा जक संबंधों, आस्थाओं, ु च यों और कला की समझ क बार मं सटीकता क कसी स्तर पर नषकषर नहीं नकाला जा सकता।

फर भी वकासवादी मथया व्याखया स व भनन खोजों को रंगन और व भनन प रदृशय इजाद कर असंभव को अंजाम दन क रयास मं लग हं। तथय को तोड-मरोड फंतासी का नमा ण करना ऐसी चीज ह जसकी वास्तव मं खुद कुछ वकासवादी ही आलोचना करत हं। उनहोंन दरअसल इस रयास को "बस दास्तानें" का नाम दया ह।

यह शब्दावली र स धद वकासवादी जीवाशमशास्त्री स्टीफन ज गोउल्ड की आलोचना मं आया जस उनहोंन इसी नाम स र टश लखक-क व ु डयडर क प लंग (1865-1936) की 1902 मं र का शत कताब स लया था। बचचों क लए लखी गइ इस कताब मं क प लंग न अनक कल्पनाशील कहा नयां पश की क कस जीव-जंतुओं न अपन व भनन अंग एवं वशषण पाए। उदाहरण क तौर पर उनहोंन हाथी क सूंड क बार मं लखा:
रा चीन काल मं हाथी की सूंड नहीं होती थी। उसक पास कवल काली सी और उभरी हुइ नाक थी। ल कन एक हाथी था- एक नया हाथी, हाथी का एक बचचा- जो बहुत ज ञासु था.....अत: वह बढता गया वशाल भूरी-हरी तल्प लमपोपा नदी क उस कनार तक जहां उसक हसाब स लकडी का एक लठ था। ल कन वहां वास्तव मं एक मगरमचछ था... तब हाथी क बचचा अपना सर मगरमचछ क मुंह क पास ल गया और मगरमचछ न उसकी छोटी सी नाक पकड ली...तब हाथी का बचचा अपन छोट कूल्ह क सहार बठ गया और उस खीचता गया, खीचता गया और खीचता गया और उसकी नाक खंचन लगी। और मगरमचछ पानी मं छटपटाता रहा...अपनी पूछ पटक कर पानी को गदला करता रहा और वह उस खीचता रहा खीचता रहा खीचता रहा।[38]

गोउल्ड और कुछ अनय वकासवा दयों न इस तरह की कल्पनाओं स सा हतय को भरन की आलोचना कर चुक ह जसमं उन हं सही ठहरान क लए आवशयक र माण नहीं हं। यही उन लोगों पर भी लागू ह जनहोंन र म वकास क सधदांत क अनु ू प समाज क वकास का व्याखया करन की को शश की। क प लंग की कहानी की तरह,

वकासवादी सामाज शास्रयों न मार कल्पनाशीलता पर भरोसा कया। वास्तव मं, ऐस समाज पर आधा रत मानव जा त क कसी ऐस इ तहास पर गौर करं जसक क थत पूर्वज सफर घुरघुरात थ और पतथर क अनगढ औजारों का रयोग करत थ, गुफाओं मं रहत थ और शकार और कंद-मूल इकठा कर जी वत रहत थ और बाद मं धीर-धीर वक सत हुए और खती करन लग और फर धातुओं का रयोग क या और जस-जस उनकी मान सक श त वक सत हुइ आपस मं सामा जक संबंध बनान लग। यह "इ तहास" भी उस कहानी स भनन नहीं ह जसमं बताया गया ह क हाथी न सूंड कस पाइ।

गोउल्ड इस अवञा नक नज रए पर कहत हं:

वञा नक जानत ह य सब कहानी मार ह; दुभा ग यवश, उनहं पशवर सा हतय मं रस्तुत कया गया ह जहां उनहं बहुत गंभीरता स लया जाता ह। वहां य "तथय" बन गए और लोक रय सा हतय मं रवश कर गए। [39]

इसके अलावा, गोउल्ड यह भी कहता है क ये कहा नयां र मक वकास के सधदांत के ूप में कुछ भी सा बत नहीं करती:

वकासवादी रा कृ तक इ तहास की "जस्ट सो स्टोरी" की परंपरा की ये कहा नयां कुछ भी सधद नहीं करती। ले कन इनका और इनहीं की तरह अनय मामलों के बोझ ने र मवाद पर मेरा भरोसा कम कया है। अ धक कल्पनाशील लोग अब भी इनहें सं चत कर सकते है मगर कमजोर कयास आराइ पर टकी अवधारणाएं मुझे कतइ रभा वत नहीं करती।[40]

नयूरंज

डब लन क पास स्थत इस स्मारक समा ध क बार मं सहम त ह क यह इसा पूर्व 3,200 मं बनी ह। नयूरंज मर की सभयता क अ स्ततव मं आन और बबीलो नया और र टन सभ्यताओं स भी पहल की ह। दु नया मं पतथरों क सबस र सधद ढांच मं स एक स्ओनहंज भी तब नहीं बना था। शोध स पता चलता ह क नयूरंज कवल समा ध ही नहीं ब ल्क इसक बनान वाल खगोल वधा क गहर जानकार थ और उनक पास अ भयां रकी और वास्तुशास्र का वशद ञान था।

अनक पुराततव वदों न नयूरंज को रौयो गकी क चमतकार क ूप मं प रभा षत कया ह। उदाहरण क तौर पर ढांच क ऊपर का गुंबद अपन आप मं अ भयां रकी का एक कमाल ह। पंदी मं भारी और उपरी हस्स मं हलक एक पतथर को दूसर क ऊपर इतनी महारत स रखा गया ह क हरक दूसर स हल्का सा बाहर नकलता ह। इसस 6 मीटर ऊंची एक षटकोणीय चमनी ढांच क मधय भाग स ऊपर की ओर उठती ह। चमनी क शीषर पर पतथर का ढककन ह जस जब चाह बंद या खोला जा सकता ह।

स्पट ूप स यह वशाल ढांचा अ भयां रकी की बहुत अचछी समझ रखन, सटीक गणना करन, सही योजना बनान, भरी पतथर ढोन और नमा ण की अपनी जानकारी का अचछा इस्तमाल करन की षमता वाल लोगों न बनाया होगा। वकासवादी, इस तथय पर रकाश नहीं डाल सकत क यह नमा ण कस बना जब क उनक अयथाथवादी वचार क अनुसार उस समय क लोग आ दम एवं पछडी स्थ तयों मं काम करत थ। ल कन यह असंभव ह क इतना वशाल स्मारक ऐस लोगों वारा बनाया गया हो जनक पास अ भयां रकी और नमा ण क कुशल ञान का अभाव रहा हो।

इस ढांच की खगोल शास्रीय वशषताएं अकली ही आचयर्च कत कर दन वाली हं। यह वशाल स्मारक इस तरीक स बनाया गया ह क मकर सर ां त मं यह रोशनी का रभावशाली रदशन पश करती ह। उसक शीघ बाद वषर क सबस छोट दन (21 दसंबर) को सुबह होन क थोडी ही दर बाद सूयर की करणों का पूंज नयूरंज क समा ध कष को जगमगा दता ह। इस ष ण रोशनी का एक शानदार खल होता ह। उगत सूरज की करणं रवश मागर पर छत पर बन कष क तल मं बन एक संकर छद मं रवश करती हं और ग लयार को जगमगाती हुइ अंदर क कष मं पहुंचती हं। पतथरों क तमाम ब्लाक इस कोण स चुन गए ह क उन तक रकाश पहुंच पाती ह और उनस पराव तस हो सकती ह। यह एक अहम कारक ह जो पूर ढांच मं रकाश कीडा को संभव बनाता ह।

आप दख सकत ह क इस वशाल स्मारक क नमा ताओं क पास अ भयां रकी का ञान ही नहीं था ब ल्क उनहं खगोल व या की भी जानकारी थी जसस उनहं दन क आकार और सूयर की ग त की गणना कर सकत थ।

नयूरंज इंग लंड मं अभी तक बच राचीन काल क पतथर क अनक ढांचों मं स कवल एक ह। इस ढांच को दखकर आप इस नषकषर पर पहुंच सकत ह क इस ऐस लोगों न बनाया जनक पास ञान का बहुत अचछा संचय था और जो अ त वक सत तकनीक और व ध का इस्तमाल करत थ। अब उस युग क लोगों की जीवन शली क संबंध मं कस तरह की व्याखया की जा सकती ह? इस तरह क ढांचों का नमा ण करन वाल लोग आरामदह और सभ्य वातावरण मं रहन वाल होंग । अगर उनक पास खगोल शास्र का ञान था और अपन

आकलनों की सही तरीक स व्याखया करन की पर्याप्त वशषज्ञता हासल थी तब उनका दनक जीवन नचततौर पर संचत ज्ञान क इसी अनुपात मं सधा रहा होगा। यह पाषाण स्मारक उस समाज की एकमार बची इमारत हो सकती ह जो आरामदह मकान मं रहत होंग, जनक पास अचछ बाग-बगीच होंग, जो अचछ अस्पताल मं बहतर उपचार पात होंग, जो व्यवसायक गतवधयों मं लग होंग, कला एवं साहतय का सममान करत होंग और एक वृहद, अहम सांस्कृतक वरासत का आनंद उठात होंग। यह इस पाषाण स्मारक क बनान वाल लोगों क बार मं सब पुरातातवक नषकषो एवं ऐतहासक तथयों पर आधारत यथार्थवादी व्याखयाएं हं। फर भी, सफर भौतकवादी दशा मं सोचन क आदी वकासवादी वज्ञान स मल खान वाली तर्कसंगत व्याखयाएं करन क बजाय ऐसी दास्तान सुनाना पसंद करत हं जो वशट मतारह का फल हं। बहरहाल, उनकी कहानी नचत व सही व्याखया की अभव्यक्त कभी नही हो सकती।

स्टोनहेंज

{0><0}
इंगलंड स्थत स्मारक स्टोनहंज मं कोइ 30 बड-बड पतथरों क ब्लॉक हं जनहं एक वृता मं व्यवस्थत कया गया ह। इनमं स रतयक ब्लॉक औसतन 4.5 मीटर (15 फीट) ऊंचा और औसतन 25 टन वजनी ह। इस स्मारक न बहुत स शोधकताओं का धयान आकषत कया और इस बात को लकर बहुत स सधदांत रस्तावत कय गय क इसका नमाण कयों और कस कया गया। यहां जो बात मायन रखती ह वह यह नहीं क इनमं स कौन-सा सधदांत (अगर कोइ ह) वास्तव मं सही ह, बल्क यह ह क यह स्मारक एक बार फर मानवजात क इतहास मं "र मक वकास" क सधदांत को अमानय करार दता ह।

शोध स पता चलता ह क स्टोनहंज लगभग 2,800 इ. पू. स शुरू होकर तीन रमुख चरणों मं नर्मत हुआ था। दूसर शब्दों मं, उसक नमाण का इतहास कोइ 5,000 वर्ष पीछ जाता ह। इमारत क रारंभक चरण मं खाइ, टील और करों का खोदा जाना शामल था। दूसर चरण मं, जगह क कंर क इर्दगर्द दो घरों मं कोइ 80 नील पतथर स्थापत कय गय और इसक बाहर हील पतथर खडा कया गया। कालांतर मं, लगातार चौखटं रखत हुए भीमकाय सारसन क पतथरों का बाय घरा नर्मत कया गया।
इस स्मारक की सवाधक उल्लखनीय वशषता उसमं रयोग मं लाय गय नील पतथर हं, कयोंक इस रकार क पतथरों का आसपास मं कोइ रोत नहीं ह। इन पतथरों को कोइ 380 क.मी. (240 मील) दूर स्थत रस्ली की पहाडयों स ढोकर उस जगह पर लाया गया। अगर यह सच ह जसा क वकासवादी दावा करत हं क उस समय क लोग आदम अवस्थाओं मं जीवनयापन कर रह थ और उनक पास सफर लकडी और पतथर क औजार ही होत थ तो व इन पतथरों को इस षर मं उस जगह पर कस ल जा सकत थ जहां आज स्टोनहंज स्थत हं? इस रन का उतार उस परदृशय क वारा नहीं दया जा सकता जो क महज कल्पना की उडान का फल ह।

शोधकताओं क एक समूह न उन उपकरणों को पुनर्नर्मत करक नील पतथरों की स्टोनहंज तक ढुलाइ करन की कोशश की जनक बार मं समझा जाता ह क उनका उस समय उपयोग होता था। इस काम को करन क लए उनहोंन लकडी क रंकों का रयोग कया, लठों का बडा बनाया जो क तीन बडों को एक साथ करक अपन आकार का पतथर ला सक, लकडी क बल्लों को उपयोग मं लाकर बड को धारा मं उतारा और फर आखर मं अनगढ ढंग स नर्मत पहयों को रयोग मं लाकर पत थरों को पहाडयों पर पहुंचान का रयास कया। लकन उनका रयास फलीभूत न हो सका। यह तो महज यह स्थापत करन क लए कय गय रयोगों मं स बस एक रयोग था क नील पतथरों को कस रकार स उस जगह पर पहुंचाया गया होगा जहां पर आज स्टोनहंज स्थत ह। और भी बहुतर रयोग हुए और शोधकताओं न यह समझन का रयास कया क उस समय क लोगों न ढुलाइ क लए कन तरीकों को काम मं लाया होगा। फर इस रकार क रयासों मं स कोइ भी रयास सफलता क नकट नहीं पहुंच पाया कयोंक व सभी इस गलत मानयता स रस्थान कर रह थ क स्टोनहंज को नर्मत करन वाल लोगों की संस्कृत पछडी हुइ थी और व कवल पतथर और लकडी क बन अनगढ औजारों का ही रयोग करत थ।

एक और नुता जस पर जोर दय जान की आवशयकता ह यह ह क रनाधीन रयोगों को वर्तमान समय की रौयोगकी का लाभ मला। उनहोंन नौसना क जहाज क याडो मं नर्मत वभनन मॉडलों का रयोग कया, अतयाधुनक कारखानों मं नर्मत रस्सयों को काम मं लया और वस्तृत योजनाएं बनायीं तथा आकलन कय। यह सब करन क बावजूद उनहं कोइ सकारातमक परणाम हासल नहीं हुए। लकन, कोइ 5,000 हजार वर्ष पहल रहन वाल लोगों न कइ टन वजनी इन पतथरों की ढुलाइ की और उनकी ठीक-ठीक भौगोलक स्थतयों की गणना करक उनहं एक घर मं व्यवस्थत कया। साफ ह क यह सब उनहोंन लकडी और पतथर स नर्मत अनगढ औजारों स नहीं कया। स्टोनहंज और दूसर बहुत स मगालथों का नमाण ऐसी कसी रौयोगकी को काम मं लाकर कया गया था जनक बार मं आज हम अनुमान भी नहीं लगा सकत।

तयाहुअनाको के शहर के वस्मयकारी अवशेष

बोलवया और पू क बीच समुर तल स लगभग 4,000 मीटर (13,000 फीट) ऊपर एंडीज पहाडयों पर स्थत तआहुअनाको शहर हरत मं डालन वाल अवशषों स भरा ह जो सलानयों को चकत कर दत हं। इस षर को दषण अमरका ही नहीं बल्क समूच वव मं पुरातातवक आचयरक ूप मं दखा जाता ह।

तआहुअनाको मं एक सवा धक आचयरमं डालन वाला अवशष वह कलंडर ह जो वषुव, मौसम और रतयक घंट चंरमा की स्थत और उसकी ग तयों को दशा ता ह। यह कलंडर इस बात का एक साषय ह क वहां पर रहन वाल लोगों क पास अतय धक उननत रौयो गकी थी। आचयरमं डालन वाल तआहुअनाको क दूसर अवशषों मं पतथर क बड-बड ब्लॉकों स नमस स्मारक आत हं, जनमं स कुछ का वजन 100 टन तक ह।

रीडसर डाइजस्ट का एक लखक लखता ह, "...आज क बहतरीन इंजी नयर अभी भी स्वयं स पूछत हं क कया व उस तरह की बडी-बडी चटानों को काटकर इतन ऊपर पहुंचा सकत हं जस तरह की चटानों का रयोग शहर को नमस करन मं हुआ ह। भीमकाय चटानं ऐस नजर आती हं मानो उनहं काटन क लए डाइ का रयोग कया गया हो ..."41

उदाहरण क लए, शहर की दीवारं 60 टन वजनी ब्लॉकों को कोइ 100 टन वजनी बलुआ पतथर क दूसर ब्लॉकों क ऊपर रखकर नमस की गयी हं। इन दीवारों क नमा ण क लए पतथरों का जस रकार स इस्तमाल कया गया ह उसक लए जबदस्त वशषञता की आवशयकता होती ह। सटीक लकीरों क साथ वशालकाय चौकोर ब्लॉकों को एक दूसर क साथ जोडा गया। 10 टन वजनी ब्लॉकों मं अढाइ मीटर (8 फीट) लंब छद कय गय। अवशषों क कुछ हस्सों मं 1.8 मीटर (6 फीट) लंबी और आधा मीटर (डढ फीट) चौडी पतथर की बनी पानी की ना लयां हं। इनमं इतनी व्यवस्था ह क जसका मुकाबला आज भी मु शकल स ही कया जा सकता ह। इन लोगों क पास अगर उस तरह स रौयो गकीय साधन नहीं होत तो उनक लए इन कामों को पूरा करना असंभव रहा होता जसा क वकासवादी दावा करत हं। इसकी वजह यह ह क कथत ूप स आदम अवस्थाओं मं इस तरह क ढांचों मं स महज एक ढांच को खडा करन क लए मनुषय क जीवनकाल स अ धक का समय चा हए था। रकारांतर स इसका मतलब यह हुआ क तआहुअनाको को बनान मं स दयों का समय लगा ह, जो क अकल ही यह दशा ता ह क र म वकास की अवधारणा गलत ह।

तआहुअनाको मं एक सवा धक उल्लखनीय स्मारक तथाक थत गट ऑफ द सन ह। अकल ब्लॉक स नमस यह तीन मीटर (10 मीटर) ऊंचा और पांच मीटर (16.5) चौडा ह और इसका वजन अनुमानत: 10 टन स अ धक ह। यह गट व भनन नक का शयों स स ज्जत ह। इस गट को बनान क लए कन व धयों को रयोग मं लाया गया इस बार मं कोइ जवाब नहीं दया जा सकता। इस रकार क शानदार ढांच को खडा करन क लए कस रकार की रौयो गकी काम मं लायी गयी? कस रकार स 10 टन वजनी पतथर क ब्लॉकों को काटकर नकाला गया होगा और कस तरीक स उनहं पतथर की खदानों स ढोकर लाया गया होगा? यह स्पट ह क इन सब कायो को उननत रौयो गकी का रयोग करक कया गया होगा न क अनगढ औजारों क ज रय जसा क वकासवादी दावा करत हं।

इसक अलावा जब आप उस षर की भौगो लक दशाओं पर वचार करत हं जहां पर तआहुअनाको स्थत ह, तो समूची वश टता और भी आचयरजनक आयाम रहण कर लती ह। यह शहर कसी सामानय बस्ती वाल षर स कइ कलोमीटर दूर ह और कोइ 4,000 मीटर (13,000 फीट) ऊंच पठार पर स्थत ह, जहां पर वायुमंडलीय दबाव समुर तल क लगभग कवल आध क बराबर होता ह। यहां पर आक्सीजन का अतयंत कम स्तर मनुषयों क लए काम करन को और भी मु शकल बना दता ह। य तथय यह दशा त हं क वव क दूसर बहुत स षरों की तरह यहां भी वगत मं उननत स्भ्यताएं वयमान थीं, जो क इस थी सस को अमानय करार दती हं क समाजों का वकास हमशा स ही सरल स ज टल की ओर होता ह।

राचीन मर : कला और वञान के संदभरमें वैभवशाली सभ्यता

कला और वञान क संदभर मं मानवजा त वारा स्था पत अतयंत वभवशाली सभ्यताओं मं स एक राचीन मरी सभ्यता क पास उसस अ धक ञान और अनुभव था जो क उस स्थ त मं संभव न हुआ होता अगर वह कसी आ दम समाज की "उतारा धकारी" या नरंतरता हुइ होती। भटक और मू तपूजक म र यों क बीच कला की जानकारी रखन वाल यहूदी कारीगर थ। इस कला का उगम पगंबर हजरत नूह (अ.) और हजरत इराहीम (अ.) क समय मं हुआ। इन हुनरमंद लोगों न उस ञान का रयोग कया जस उनहोंन पूवर क पगंबरों क दनों स रापत कया था।

मर वा सयों की उपलब्धयों को अब भी वव क बहुत स भागों मं हा सल नहीं कया जा सका ह। स्वयं मर समत ए शया, द षण अम रका या अरीका क व भनन हस्सों मं वगत सभ्यता क स्तर स ऊपर का जीवन-स्तर अभी भी हा सल नहीं ह। वशषकर, औष ध, शरीर रचना वञान, शहरी नयोजन, वास्तु शल्प, ल लत कलाओं और वस्त्रोयोग क षर मं इस रकार की शानदार उपलब्धयां हा सल करन वाली राचीन मरी सभ्यता का आज भी वञा नकों वारा भारी वस मय और कौतूहल क साथ अधययन कया जा रहा ह।

राचीन मरी च कतसा का उभ्व

राचीन मर मं च कतसकों न जो उननत कस्म का ञान हा सल कया था वह हरत मं डालन वाला ह। खुदाइ स रापत नषकषो न पुराततवश्ास्रयों को हरत मं डाल दया, कयों क कसी भी इ तहासकार न एक ऐसी

सभ्यता में इस रकार की अतय धक वक सत रौयो गकी की अपषा नही की थी जो क 3,000 इ. पू. वयमान थी।

म मयों क एक्सर वलषण स पता चला ह क राचीन मर में दमाग का ऑपरशन कया जाता था। 43 और तो और इन ऑपरशनों को अतय धक पशवर र व धयों को काम मं लाकर कया जाता था। जब सजरी वाली ममी की खोपडी का परीष ण कया जाता ह तो यह दखा जा सकता ह क सजरी क चीर बल्कुल साफ-साफ लग हं। वापस जुडन वाली खोपडी की ह डयां यह सा बत करती हं क रोगी इस रकार क ऑपरशनों क बाद लंब समय तक जी वत रहत थ। [44]

एक दूसरा उदाहरण व भनन दवाओं स जुडा हुआ ह। 19 वी सदी मं र तज वकों की खोज समत रायो गक वज्ञान क षर मं हुइ तव रत र ग त क चलत च कतसा वज्ञान न खूब र ग त की। फर भी "खोज" शब्द पूरी तरह स सटीक नहीं ह क्यों क इनमं स बहुत सी र व धयां राचीन मर क लोगों को पहल स ही ज्ञात थीं। [45]

वज्ञान और शरीर रचना वज्ञान मं मर क लोग कतन आग थ इसक कुछ बहद महतवपूणर साषयों मं स व म मयां हं जो क व अपन पीछ छोड गय हं। ममीकरण की र र या मं उनहोंन सकडों व भनन र व धयों का रयोग कया, इसस शवों को हजारों वषो क लए सुर ष त रख दया गया ह। ममीकरण की र र या अतय धक ज टल ह। सबस पहल म स्तषक और मृतक क कुछ आंत रक अंगों को वशष उपकरणों को काम मं लाकर अलग कर लया जाता ह। र र या क अगल चरण मं नरोन स शरीर का नजर्लीकरण शा मल ह। (नरोन एक ख नज लवण ह, मुखयत: सो डयम क्लोराइड और सो डयम सल्फट की अल्प माराओं क साथ सो डयम बाइकाबोरट और सो डयम काबोरट का म रण ह।) शरीर क अतय धक तरल पदाथो को घटान क बाद शरीर की गुहा को लनन, बालू या बुराद स भर दया जाता ह। तवचा क ऊपर वशष रकार क औषधीय लप लगाय जात हं और फर उसक ऊपर तरल राल लगायी जाती ह ता क उस आग भी संर ष त कया जा सक। आ खर मं शव को लनन की प टयों स सावधानी क साथ लपटा जाता था। [46]

शरीर क आकार को बना ष त पहुंचाय और मृतक क सभी आंत रक अंगों को नकालकर कया जान वाला ममीकरण यह दशा ता ह क इस काम को अंजाम दन वाल लोगों क पास शरीर रचना वज्ञान का पया प त ज्ञान था और व व भनन अंगों की स्थ त क बार मं जानत थ।

ममीकरण की र व धयों क अलावा मर वा सयों क पास 5,000 वषर पहल अनय च कतसकीय वशषज्ञताओं की एक पूरी शृंखला थी। उदाहरण क लए :

- मर मं च कतसा स जुड पुरो हतों न अपन मं दरों मं बहुत सी बीमा रयों का इलाज कया। ठीक आज की भां त मरी डॉक टरों को च कतसा क व भनन षरों मं वशषज्ञता हा सल थी। रतयक डॉक्टर अपनी वशषज्ञता क ष र मं सवा मुहया कराता था।

- मर मं डॉक्टरों क ऊपर राज्य नगरानी रखता था। रोगी अगर उपचार स ठीक नही हुआ या मर गया तो राज्य इसक कारणों की जांच करवाता क ऐसा क्यों हुआ और इस बात का पता लगाता क क्या डॉक्टर वारा काम मं लायी गयी उपचार वध नयमों क अनु प थी। अगर उपचार क दौरान हुइ कसी रकार की भूल का पता चलता तो कानून क ढांच क भीतर डॉक्टर को दं डत कया जाता।

- रतयक मं दर मं सुस ज्जत रयोगशाला होती थी जसमं औष धयां तयार की जाती थी और उनका भंडारण होता था।

- औषध वज्ञान और प टयों एवं कोमरसों क ष र मं पहला कदम राचीन मर क लोगों न उठाया था। स्मथ प परस (जो पूरी तरह स औष धयों स संबं धत ह) मं इस बात का ववरण दया गया ह क कस रकार स लनन की चपकन वाली प टयों को घावों को ढंकन क लए काम मं लाया जाता था। यह बंडज बनान की आदशर सामरी ह।

- पुराता तवक अनवषणों स मर की च कतसकीय प रपा टयों की वस्तृत तस्वीर रकट हुइ ह। इसक अलावा, अपन ष रों मं वशषज्ञता रखन वाल 100 स अ धक डॉक्टरों क नामों और उपा धयों का पता चला ह। कोम ओमबो क मं दर की दीवार पर शल्य च कतसा मं काम आन वाल उपकरणों का बॉक्स रखा ह। इस बॉक्स मं धातु की कतरनी, स ज्रकल चाकू, चरनी, सलाइ, छोट हुक और चमटी रखी हुइ ह।
- काम मं लायी जान वाली र व धयां व वध रकार की और तरह-तरह की हं। र कचर और टूट-फूट को सट कया जाता था, खपच्ची को काम मं लाया जाता था और घाव को सलाइ स भरा जाता था। भारी सफलता क साथ उपचार क बाद भरन वाल र कचर बहुत-सी म मयों मं पाय गय हं।

- हालां क म मयों मं शल्य र या क घाव क कोइ नशान नही पाय गय हं पर स्मथ प परस मं घाव को सीन क 13 हवाल मलत हं। इसस संकत मलता ह क मर क लोग लनन क धागों को काम मं लाकर घाव को ठीक रकार स सलन मं सषम थ। सुइयां बहुत संभव ह क तांब की बनती रही होंगी।

- मर क डॉक्टर रोगाणुमुत घाव और संर मत घाव क बीच फकर करन मं सषम थ। व संर मत घावों को साफ करन क लए जंगली बकर की चबी , दवदार क तल और पसी हुइ मटर क मर ण का रयोग करत थ।

.

- प न स लन और र तज वकों का अपष ाकृत अभी हाल मं आ वषकार हुआ ह। ल कन, राचीन मर क लोगों न इनक रथम ज वक संस्करणों और दूसर व भनन रकार क र तज वकों का रयोग कया और व भनन रकार की बीमा रयों क ल ए नुस्ख लख। [47]

औष ध क ष र मं इस रकार की रमुख उपलब्धयों क साथ-साथ खुदाइ स यह भी पता चला ह क शहरी नयोजन और वास्तु शल्प जस वषयों मं मर वा सयों की गहरी दलचस्पी थी।

राचीन मर में वक सत धातुकमर

सामानय अथो मं धातुकमर वज्ञान और रौयो गकी की वह शाखा ह जसक अंतगरत कचच माल का शोधन, धातुओं और उनक यौ गकों को आकार दना और उनका संरष ण आता ह। मर की राचीन सभ्यता की गवषणाकरन स पता चलता की तीन स साढ तीन हजार साल पहल म र यों न व भनन ख नजों और धातुओं, वशष ू प स सोन, तांब और लोह क उतखनन और उन पर काम करन की कला मं महारत हा सल कर ली थी। उनक उननत धातुकमर को दखन स पता चलता ह क म र क लोग अयस्कों का पता लगान, उनका उतखनन करन और उन पर काम क मामल मं काफी र ग त कर चुक थ और रसायनशास्त्र का उनका ज्ञान काफी उननत था।

पुराता तवक शोधों स पता चलता ह क मर क लोग 3400 वषर इसा पूवर मं ही तांब क अयस्क पर गहन कायर कर रह थ और धातवीय यौ गकों का उतपादन करत थ। चौथ राजवंश (लगभग 2900 वषर इसा पूवर) क कायर काल मं उतखनन संबंधी शोधों और उतखनन कायो की नगरानी अतयंत उचच पदों पर आसीन अ धकारी करत थ और उनकी दख- रख फराओ क बट करत थ।

तांब क अलावा राचीन मर ी लोह का भी बहुतायत उपयोग स करत थ। टन का इस्तमाल कांसा बनान और कोबाल्ट का रंग बरंग कांच तयार करन मं कया जाता था। ऐसी धातुएं जो रा कृ तक ू प स मर मं नहीं पायी जाती थीं, दूसर ष रों, वशष ू प स फारस स आयात की जाती थीं।

व सोन का सबस जयादा उपयोग करत थ और सोना उनका सबस कीमती धातु था। मर मं और आज क सूडान क कुछ इलाकों मं सोन की सकडों खानों का पता चला ह। इसा पूवर की चौदहवीं सदी की एक पपाइरस मं अपो लनोपो लस क पास सोन की एक खान थी जो राचीन काल क म र यों की व्यवसा यकता का खुलासा करती ह। पपाइरस कसी खान क पास उसमं काम करन वाल 1,300 मजदूरों क रहन क लए बनायी गयी बस्ती होती ह। इसस राचीन मर मं सुनारी और आभूषण नमा ण कला क महतव का खुलासा हो जाता ह। दरअसल, पुराता तवक खुदाइ स मल सोन क सकडों सजावटी सामान इस बात का संकत हं क राचीन काल क मर ी मंझ हुए ख नक और धातुकमी थ।
इसस इस तथय की भी पु ट होती ह क राचीन म र यों क पास धातुओं क संस्तरों की शनाखत और उनस धातुओं क उतखनन, उनक शोधन और मर धातुएं बनान क लए उनको मलान क लए आवशयक ज्ञान, और रौयो गकी थी।

राचीन मर की शहरी आयोजना और उनका ढांचा

मर की शुषक जलवायु न ऐस बहुत स संकतों को अष ुणण रखा ह जो इस बात का सुबूत हं क मर क राचीन काल क शहरों क पास सु वक सत ढांचा था।

उननत ढांच का अथर होता ह क जन लोगों न उन शहरों का नमा ण कया उनको स्थापतय कला और अ भयां रकी का समुननत ज्ञान था। नीव कतनी गहरी खोदी जानी चा हए, हवा आन- जान की रणाली की योजना कस बनायी जानी चा हए, स्वचछ और गंद पानी की नकासी की की व्यवस्था ता क व एक- दूसर मं मल न सकं और दूसरी बहुत- सी चीजों पर धयान दना होता ह। और सबस महतवपूणर बात यह क उनमं स कसी मं कसी तरह की चूक नहीं की जा सकती। म र यों क पास य सारी तकनीकं थीं और उनहोंन अपन पीछ जो इमारतं छोडी व इसकी पु ट करती हं।

इसा स तीन हजार साल पहल उनहोंन स्थापतय कला की जस रौयो गकी का इस्तमाल कया वह रौयो गकी बहुत व्यवसा यक थी उसन ढांचागत समस्याओं और क ठनाइयों को दूर करन का रयास कया। मर जसी शुषक जलवायु क दश क लए पानी अतयंत महतवपूणर होता ह। दरअसल, उनहोंन पानी की समस्या का स्थायी समाधान तलाशा जसमं पानी- जमा करन की भू मगत व्यवस्था भी शा मल थी।

फयूम मु यान की धसकन मं पाया गया इस तरह का एक वशाल जलाशय उनहीं मं स एक ह। खास- खास ष रों मं जीवन को कायम रखन क लए म र यों न कुछ कृ र म झीलं भी बनायी थीं। इन छोटी- छोटी झीलों मं नील नदी स आकर पानी जमा होता था जसस मर क मु स्थल मं उननत सभ्यता का वकास संभव हुआ। उनहोंन मौजूदा का हरा शहर क 80 कमी (50 मील) द षण- प चम मं एक नहर क ज रय नील नदी

स लाकर पानी जमा करन क लए लक मोरस का नमा ण कराया। इस जलाशय क करीब ब स्तयां बसायी गयी थीं और मं दर बनवाय गय थ। 48

म र यों का च कतसा, शहरी आयोजना, और अ भयां रकी और उनक व्यावहा रक उपयोग का ज्ञान उनकी अनूठी और व क सत सभ्यता का रमाण ह। उनक तरीकों न एक बार फर इस धारणा को गलत सा बत कर दया ह क आ दम स्तर स व कास करक सभ्य समाज बनत हं। उसी दश का एक समाज पांच हजार साल पहल जतना वक सत था उसक कतन ही समुदाय आज भी वकास क उन सोपानों तक नही पहुंच सक हं। यह ऐसी चीज ह जव वकासवादी रग त क अथो मं जसकी व्याखया नही की जा सकती। इसमं दो राय नही क जस समय मर क लोग वक सत सभ्यता का सुख ल रह थ, उसी दौर मं अ रीका और दु नया क दूसर कइ हस्सों मं बहुत ही पछड समुदाय थ जहां लोग बहुत ही अप रषकृत स्थ तयों मं जी रह थ। फर भी उन लोगों मं स कोइ भी अपन नयन- नक्श मं इनसानों स पछडा नही था, या कसी मं भी क प जस लष ण नही थ। मर ी और उसी युग मं आ दम स्थ तयों मं जी रह दूसर लोग और लाखों- लाख साल पहल मौजूद मानव समुदाय हर लहाज स उतना ही मानव था जतना आज क इंसान हं। कुछ समुदाय अपष ाकृत वक सत स्थ तयों मं रह होंग और कुछ पछड रह होंग ल कन इसस यह सा बत नही होता जसा क डार वनवादी कहत हं क व क पयों क वंशज हं या यह क एक जा त का दूसरी जा त स वकास हुआ ह। इस तरह की व्याखया वज्ञान और ववक का उल्लंघन करती ह।

वस्र के षे र में राचीन म र यों की उपल ब्ध

ढाइ हजार साल इसा पूवर क मल लनन क टुकडों को दखन स पता चलता ह क म र यों न बहुत ही अचछ कस्म लों कपड बनाय थ- कपड और बुनावट, दोनों की दृ ट स। बहरहाल, सबस महतवपूणर ह उन कपडों की बारीक बुनावट। 2500 साल इसा पूवर मं राचीन मर ी उस कस्म क बारीक कपड तयार करत थ जस कपड आज- कल उननत रौयो गकी की मशीनों स बनत हं। उन कपडों का उपयोग म मयों को ढंकन क लए कया जाता था। मर क जानकार इन कपडों की बारीक बुनावट को दख कर वस्मय वमुग ध हं।46

उन कपडों की बुनावट इतनी बारीक होती ह क रशम स उनको अलग करन क लए खुदर्बीन की जू रत पडती ह। और य कपड आधु नक युग क यां रक लूमों स बन बहतरीन स बहतरीन कपडों क समतूल्य हं।5 आज भी य कपड अपनी गुणवता क लए जान जात हं और मर मं आज जो कपड बनत हं उनकी खया त 2000 वषर इसा पूवर क बुनकरों की दन ह।

उचच स्तरीय ग णत
राचीन मर मं बहुत ही आ दम काल स अंकों का उपयोग होता था। इसा स 2000 साल पहल की ग णतीय समस्याओं का वणर्न करन वाली पपाइरस पायी गयी हं। जनका उल्लख सबस ज्यादा कया गया ह, व चार दस्तावज हं काहुन क टुकड, और ब लन, मास्को और रंद की पपाइरसं। य दस्तावज, उदाहरण क साथ माप लन क आधारों का वणर्न करत हं। म र यों को पता था क जन रकोणों की भुजाओं की लंबाइयों का अनुपात 3: 4: 5: होता ह व समकोण रभुज होत हं और अपन इन ज्ञान का (जस आज पाइथागोरस रमय कहा जाता ह) उपयोग व अपन नमा ण कायो संबंधी गणना मं करत थ।51

इसक अलावा मर ी रहों और तारों का अंतर समझत थ। उनहोंन अपन खगोलशास्रीय अधययन मं उन तारों को भी शाम ल कया था जो नंगी आंखों स मु शकल स दख जा सकत हं।

और चूं क म र यों का जीवन नील पर अवलं बत था इस लए हर साल आन वाली बाढ क समय उनहं उसका जल स्तर मापना होता था। शासक न नदी का जलस्तर मापन क लए नीलोमीटर बनवा रखा था और इस काम क लए अ धका रयों की नयु त की थी।52

रहस्यों से भरी एक नमा ण रौयो गकी
राचीन मर मं बनी सबस महतवपूणर इमारतं जनहं दशर्क आज भी हरत भरी नजरों स दखत हं वहां क रहस्यमय पराम ड हं। उनमं स र ट पराम ड सबस भव्य ह जस पतथरों स बनी आज तक की दु नया की सबस बडी इमारत माना जाता ह। हरोडोटस क समय स ही इ तहासकार और पुराततववता तरह- तरह क मत व्यत करत आ रह हं क इन परा मडों का न मा ण कस कया गया होगा। उनमं स कुछ का कहना ह क इनको बनवान मं गुलामों का इस्तमाल कया गया था और इसक न मा ण की अलग- अलग तकनीक सुझायी हं। इन प रकल्पनातमक तरीकों स जो तस्वीर उभर कर सामन आती ह वह यह ह:

अगर इन परा मडों का नमा ण गुलामों न कया होता तो उनकी तादाद असाधारण ू प स बहुत बडी 240,000 क आस- पास होती।
अगर इन परा मडों क नमा ण क लए रपट बनवाय गय होत तो परा मडों क बनन क बाद उनको ढान मं आठ साल लग जात। डनमा क स वल इंजी नयर गाडर हंशन का कहना ह क यह धारणा हास्यास्पद ह क्यों क रपटों को गराय जान क बाद अनगढ छाप बन रह जात। ल कन इस तरह क कोइ संकत दखाइ नहीं दत।53

यह कहत हुए क गाडर हंशन न दूसर सधदांतकारों क कम करक आंक गय पहलुओं पर गौर कया ह, मुस्तफा गदला अपनी पुस्तक हस्टारकल डसपशन: द अनटोल्ड स्टोरी आफ एंशएंट इजपट मं कहत हं:

जब आप परामड दखन जायं तो इन अलग- अलग आंकडों की कल्पना कीजए: लगभग 4,000 साल खदान मजदूर हर दन 330 शलाखंड तोडत हं। बाढ क मौसम मं हर दन 4,000 शला खंड नील नदी तक ढोकर लाय जात हं, नाव स उनहं नदी क पार लाया जाता ह, और गजा क पठार पर रपट को खीच कर लाया जाता ह और कोर मं 6।67 शला खंड रत मनट की दर स उनहं जडा जाता ह! कल्पना कीजए, रत 60 सकंड 6।67 शला खंड!54

इसक अलावा इस तथय पर भी गौर कीजए क हर परामड क मुखपट का तल षर 5।5 एकड ह। इस तरह हर पावरफलक की दीवारों की चनाइ क लए 115,000 कसंग पतथरों की जूरत थी। इन पतथरों की चनाइ इतनी बारीकी स की गयी ह क उनक बीच इतनी भी जगह नहीं ह क उनमं कागज चला जाय।55

य कुछ ऐसी आपतयां हं जो बताती हं क इक्कीसवीं सदी का वज्ञान और रौयोगकी अभी तक परामडों क नमाण की गुतथी नहीं सुलझा सकी ह।

अगर कोइ फर से परामडों को बनवाना चाहे

इंडयाना लाइमस्टोन इंस्टीटयूट आफ अमरका, इनकारपोरेशन न चूना पतथरों की वशषज्ञ दुनया भर की जो अरणी कंपनी ह, 1978 मं यह जानन क लए वचारोतजक अधययन कराया क अगर गजा स्थत रट परामड जतना बडा परामड बनवाना हो तो कतन मजदूर और कसी तरह की सामरी लगगी। कंपनी क अधकारयों म यह कहत हुए उसक नमाण मं आन वाली परशानयों का बौरा दया क जतन चूना पतथर की जूरत होगी उसक उतपादन, उस तोडन, गढन और उनकी ढुलाइ की रफ्तार अगर तीन गुनी कर दी जाय तब भी उसमं 27 साल लग जायंग।

ऊपर स यह सारा काम आधुनक अमरीकी रयोगकी का इस्तमाल करक कया जायगा- दूसर शब्दों मं हाइरोलक हमरों, रस्टल की नोंक वाली आरयों का इस्तमाल करक। सफर चूना पतथर तोडन और उसकी ढुलाइ क लए बुहत महनत करनी होगी। परामडों क नमाण क लए आवशयक रयोगशाला परीषण और तयारयों संबंधी दूसर काम उसमं शामल नहीं हं।57

आखर राचीन मरयों न इन वशाल परामडों का नमाण कस कया? कस ताकत स, कस मशीनरी स, कस तकनीकी स चटानी छतं सजायी गयीं? कस तरह स चटानी मकबर बनाय गय? नमाण क दौरान रोशनी की व्यवस्था कस की गयी होगी? (परामडों, और मकबरों क भीतर की दीवारों, छतों पर कहीं कोइ धबा नहीं लगा ह, न कहीं कालख लगी ह।) खदानों स पतथर की शलाएं कस हटायी गयी होंगी और ब्लाकों क अलग- अलग आकृतयों क शलाखंडों की सतहं कस चकनी की गयी होंगी? कइ- कइ टन वजन क इन शला खंडों की ढुलाइ कस हुइ होगी और उनहं एक संटीमीटर क हजारवं भाग तक बलकुल सटीक तरीक स कस बठाया गया होगा? सवालों की सूची बहुत लंबी हो जायगी? क्या मानवजात क इतहास की जव वकासवादी गलत अवधारणाओं क तहत इन सवालों क ताक और ववक सममत जवाब दय जा सकत हं? कदाप नहीं!

अपनी कला, चकतसा पधदत, और संस्कृत क साथ राचीन काल क मरयों न एक महान सभ्यता को जनम दया। उनहोंन जो नमाण कय, जन चकतसा पधदतयों का उपयोग कया और उनक पास जो संचत ज्ञान और अनुभव थ व इसक कुछ सबस महतवपूणर रमाण हं। आज क कुछ वज्ञानक भी दावा करत हं क मरयों न जनक लए इतहास क वकासवादी सधदांत क तहत परामडों का नमाण अतयंत कठन रहा होगा, जो काम कय, दरअसल व काम कनहीं असाधारण आगंतुकों न कय थ।

दरअसल, इस तरह क दाव नतांत अताक और असंगत हं। फर भी वकासवादी इनकी ओट लत हं क्योंक उनकी सारी शाबक गोलंदाजी इसकी बहतर व्याखया करन मं असमथर ह। जब वकासवादी महसूस करत हं क व संयोग स या काल्पनक जववकासवादी ररया क तहत कोइ व्याखया नहीं कर सकत तो व तुरंत 'आसमान स उतर आगंतुकों' की धारणा की ओट ल लत हं। दरअसल उनहोंन यह हास्यस्पद धारणा तब दी जब उनहं लगा क कोशका क नाभक मं पाया जान वाला डीएनए और जीवन की पहली मौलक रचनातमक इकाइ रोटीन इतनी जटल और असाधारण रचना ह क संयोगक तौर पर नजीव पदाथो स उसका सृजन नहीं हो सकता था। और इसलए, अंतरष स आय आगंतुक पहल सजीव राणी को धरती पर ल आय होंग और यहीं छोड गय होंग। यह हास्यास्पद दावा उस नराशाजनक स्थत की कहानी कहता ह जसमं वकासवादी खुद को पात हं।

राचीन मरी सभ्यता और इतहास की दूसरी तमाम सभ्यताओं को ऐस लोगों न जनम दया जो ववकवान और दृढ इचछाशत क लोग थ। आज हम इसा स 3000 साल पुरानी शल्प कृतयां दखकर वस्मय वमुगध हो जात हं और इस षर क वज्ञानक और वशषज्ञ इस बात को लकर बहसं करत हं क य शल्पकृतयां बनी कस होंगी। लकन महतवपूणर बात यह ह क पांच हजार साल पुरानी सभ्यताओं की जडं और पीछ जाती हं। इसका आशय यह क बलकुल अनादकाल मं कोइ आदम, अधर्द पशुवत, बोलन मं अषम और पूरी तरह शकार पर आरत मानव नहीं रहत थ, जसा क इतहास क वकास क सधदांतकार दावा करत हं। जब पहल

इनसान को सरजा गया था तभी स इनसान मधा, सौंदयर बोध, समझदारी, चतनता और न तक मूल्य जस तमाम मानवीय वशषताओं का आस्वादन करता आ रहा ह जस आज का मानव करता ह।

सुमे रयाइ सभ्यता

मानवजा त क इ तहास क क ल्पत 'वकासर म' की व्याखया करन हुए डार वनवादी वज्ञा नक एक और मुद पर सर स असहाय हं: मानव चतना क मुद पर, जसक बल- बूत पर मानवजा त न वव वयालय बनाय, अस्पताल, फकट रयां और राज्यों का नमा ण कया, संगीत की रचना की, ओलं पक खलों का आयोजन कया और अंत रष यारा एं की- संष प मं कहं तो उस सबस महतवपूणर स्वभाव क मामल मं जो इनसान को इनसान बनाता ह।

वकासवादी दावा करत हं क मानव चतना न अपनी मौजूदा ष मता चंप जयों स भनन दशा मं अपना वकास करक रापत की, जो हमार तथाक थत सबस करीबी जी वत सग-सहोदर हं। चतना क वकास र म मं आयी क थत छलांगों क लए व म स्तषक मं होन वाल बतरतीब प रवतर्नों और औजार बनान की कुशलता क सुधारातमक रभावों को जममदार मानत हं। आप राय: इस तरह क दाव टीवी पर दखायी जान वाली टप प णयों, पर- प र काओं मं छप लखों मं दखत- पढत होंग जनमं क पमानवों क बार मं बडी-बडी बातं बतायी जाती हं जनहोंन पहल-पहल पतथरों स चाकू और फर नज बनान की कला सीखी। ल कन यह कुतसा रचार सही नहीं ह। हालां क व ऐस दृशयलख रस्तुत करन क रयास करत हं जनहं व वज्ञा नक दृशयलख कहत हं, ल कन वस्तुत: व डा वनवादी पूवर धारणाओं पर आधा रत और पूरी तरह अवज्ञा नक हं। सब स महतव पूणर बात यह ह क मानव चतना का मोल कम करक उस रव्य करार नहीं दया जा सकता। पदाथर्वाद की असारता का अनुलखन करत समय यह अकला तथय चतना क वकास स संबं धत दावों को पूरी तरह खोखला सा बत कर दता ह।

वकासवादी दावा करत हं। क चतना का वकास हुआ ह। ल कन उनक पास इस तथय क भावन का कोइ साधन नहीं ह क आ दम रज्ञा कस स्तर की रही होगी और न क थत वकास र र या की स्थ तयों की अनु र या ही तयार कर सक हं। व कासवादी होन क बावजूद वकासवादी सामरी क लए मशहूर प र का नचर क संपादक हनरी गी, स्पट शब्दों मं स्वीकार करत हं क य दाव अपनी मूल र कृ त मं अवज्ञा नक हं।

मसलन, कहा जाता ह क मानवजा त का वकास अंग-संचालन, म स्तषक क आकार, और हाथ और आंख क बीच समनवय मं सुधार स हुआ ह जसकी वजह स आग जलान, औजारों क उतपादन और भाषा क उपयोग जसी तकनीकी उपल ब्धयां हा सल हुइं। ल कन इस तरह क दृशयलख व्य त परक हं। उनहं रयोगों की कसौटी पर कभी कसा नहीं जा सकता इस लए व अवज्ञा नक हं। उनका रचलन वज्ञा नक कसौटी पर नहीं ब ल्क उनकी सारह और स धकार अ भव्य त पर आधा रत ह। 16

अवज्ञा नक होन क साथ- साथ इस तरह क दृशयलख ता क दृ ट स अमानय हं। वकासवादी दावा करत हं क रज्ञा बु धद या वचार श त की बदौलत जो संभवत: वकासर म मं वक सत हुइ, औजारों क इस्तमाल की ष मता वक सत हुइ, जसकी वजह स रज्ञा या बु धद वक सत हुइ। फर भी इस तरह का वकास तभी संभव ह जब मानव रज्ञा पहल स मौजूद हो। इस आधार पर भी यह सवाल अनुत रत ही रह जाता ह। क वकास र म मं पहल रौयो गकी वक सत हुइ या चतना।

डा वर्नवाद क सबस कारगर आलोचक फ लप जानसन इस वषय मं लखत हं:

ऐसा स धदांत जो खुद ही चतना का उतपाद ह उस चतना की कभी भी सटीक व्याखया नहीं कर सकता जसन उस स धदांत को जनम दया ह। परम सतयों का शोध करन वाली महान वज्ञा नक चतना की पु ट तभी तक हो सकती ह जब तक हम चतना को रदत चीज मानत हं। ल कन जस ही हम चतना को उसक अपन अ वषकारों क उतपाद क ू प दखन लगत हं खुद को आइन जड ऐस हाल मं खडा पात हं जसस नकलन का कोइ मागर नहीं होता। 62

इस तथय क मदनजर क डार वनवादी खुद अपनी चतना की व्याखया करन मं अष म हं, व मानव संस्कृ त और सामा जक इ तहास की बाबत जो दाव करत हं व दाव अपन- आप अमानय हो जात हं। दरअसल, अभी तक हमन जन तथयों, नषकषो की समीष ा की ह व तथय और नषकषर डार वनवा दयों क 'इ तहास क वकास' संबंधी दावों को पूरी तरह बमानी करार द दत हं।

वकासवा दयों क दावों क वपरीत मानवजा त का इ तहास ऐस रमाणों स भरा पडा ह क राचीन काल क लोगों क पास उसस कहीं बहुत वक सत तकनी कयां और सभ्यताएं थीं जतना क समझा जाता ह। उनहोंन अपन पीछ जो शल्पकृ तयां छोडी हं व उनक हजारों बरसों क सं चत ज्ञान का रमाण हं।

सुमे रयाइ: एक उननत सभ्यता

यूनानी भाषा मं मसोपोटामया का अथर होता ह 'नदयों क बीच मं'। यह दुनया का सबस उवर षर ह। इसकी उवरता न इस महान सभ्यता का उदगम बना दया ह।

इन भूभागों क दषण क लोगों का एक समूह, उस इलाक क लोग जो आज कुवत और उतरी सऊदी अरब क नाम स जाना जाता ह, दूसर समुदायों स अलग भाषा बोलत थ, शहरों मं रहत थ, कानूनी ढांच पर आधारत राजतंर स शासत थ और लखना जानत थ। य सुमरयाइ थ जनहोंन 3000 साल इसा पूवर स बड-बड नगर राज्यों की स्थापना करक तजी स वकास कया और बडी तादाद मं लोगों को अपन अधकार मं कर लया। 63

आग चलकर सुमरयाइ एक्काडयाइयों स हार गय और उनकी दासता स्वीकार कर ली। बहरहाल, सुमरयाइ संस्कृत, धमर, कला, कानून, राज्य रणाली और साहतय अपना कर एक्काडयाइयों न उस सभ्यता को मसोपोटामया मं अषुणण रखा।

अपन दौर मं सुमरयाइयों न रौयोगकी स कला तक और कानून स साहतय तक हर षर मं उल्लखनीय वकास कया। उनका व्यापार और अथव्यवस्था अतयंत सुगठत थी। कांस क काम, पहय वाल वाहन, नावं, रतभाएं, और स्मरणीय इमारतं उनक ुत वकास का रमाण हं जो आज भी जीवत हं। इसक अलावा सुमरयाइ कइ हस्तकलाएं जानत थ जो अब नहीं बची हं। ऊन की बुनाइ और रंगाइ जो मसोपोटामयाइ शहरों का नयमत होन वाला महतवपूणर जनस था, उनकी वकसत कनठ कलाओं का उदाहरण ह। 64

सुमरयाइयों का सामाजक ढांचा भी उननत था। उनकी राजव्यवस्था राजतंरीय थी जसमं पुरोहत शासक अधकारयों की मदद स शासन करता था। फसल की कटाइ क बाद य अधकारी उस जनता क बीच बांटत थ और खतों मं जाकर उनकी नगरानी करत थ। नौकरशाही सुमरयाइ रशासनक तंर का आधार था। धमाधकारी हर इलाक क रत जममदार होता था और उनक बीच खायानन का समान वतरण सुनचत कराता था, खास तौर स शहरों मं। धमाधकारी क कायो का अभलख तयार कया जाता था और उस अभलखागार मं रखा जाता था।

हमार समय स पांच हजार साल पहल क सुमरयाइयों का सामाजक, कलातमक, वज्ञानक, आथक जीवन वकासवादयों क आदम स वकसत जीवन की ओर रयाण क मानक स पूरी तरह अलग था। सुमरयाइयों की महान सभ्यता न सफर अपन समय स काफी आग थी बल्क बहुत स समुदायों की तुलना मं हमार समय क भी आग थी। इस स्तर क सांस्कृतक वकास को मानव जीत क वकासवादी दावों क आधार पर व्याखयायत नही कया जा सकता- इस आधार पर क उनहोंन पहल कपवत नयन- नकश, घुरघुराहटों स मुत पायी, सामाजक हुए, जानवर पालना, और उसक बाद खती करना सीखा। यह स्पट ह क इतहास क हर काल मं मानव जात अपनी सारी बुधद, षमताओं और ुचयों क साथ हमशा मानव थी। गुफाओं मं आग क सामन बठ, पतथरों क अनगढ औजार बनात कपमानवों की वकासवादयों की बहुतायत स दशायी छवयां पूरी तरह काल्पनक और तमाम ऐतहासक, पुरातातवक और वज्ञानक रमाणों क वरोधाभासी हं।

सुमेरयाइ वज्ञान

सुमरयाइयों की अपनी अंक रणाली थी। आज की आधार - 10 (दशमलव) रणाली की जगह उनहोंन 60 अंकों (षाटक) गणतीय रणाली की रचना की थी। उनकी इस रणाली का आज क हमार युग मं भी महतवपूणर स्थान ह, इस मामल मं क एक घंट मं 60 मनट, एक मनट मं साठ सकंड और वृत मं 360 अंश होत हं। इनही कारणों स सुमरयाइ, जनक गणतीय ज्ञान न ज्यामतीय और बीजगणतीय सूर दय, आधुनक गणत क संस्थापक मान जात हं।

इसक अलावा, सुमरयाइयों का खगोल शास्त्रीय ज्ञान और वषो की गणना काफी उननत थी। उनक महीन और दन लगभग हमार जस ही थ। सुमरयाइ कलंडर का, जसक एक साल मं 12 महीन होत थ, राचीन मर्ी, यूनानी और बहुत- स सामी समाज भी उपयोग करत थ। इस कलंडर क अनुसार साल मं दो ऋतुएं होती थीं- रीषम और शीत ऋतु। गमी की शुआत वसंत वषुव और सदी की शुआत शरतकालीन वषुव स होता था। 65

सुमरयाइ मीनारों स, जनहं 'जगुरटं' कहत थ, नवमंडल का भी अधययन करत थ और सूयर और चंर रहण की भवषयवाणी कर सकत थ। इसक बहुत स दस्तावजी सबूत उपलब्ध हं। अपन खगोलीय आवषकारों का अभलख तयार करन क लए उनहोंन बहुत स नषरों की तालका बना रखी थी। सूयर और चांद क अलावा उनहोंन बुध, मथुन, मंगल, बृहस्पत और शन रहों का भी अधययन कया और उनकी गत दजर की। सुमरयाइयों न पांच हजार साल पहल जो गणनाएं की अंतरषयानों स भजी गयी छवयों स उनकी पुट होती ह।

नस्संदह य तथय इतहास क वकास क दावों क वरोधाभासी हं। हम उन सूचनाओं की ओर दख रहं हं जन का अवषकार पांच हजार साल पहल हुआ था और जो सूचनाएं हमं वशाल दूरदशयों, उननत कंपयूटरों और तरह -तरह की रौयोगकयों की मदद स अभी हाल मं मली हं। इन तथयों क मदनजर वकासवादी वज्ञानकों को अपनी पुरानी अवधारणाओं को पर रख कर वज्ञानक और ऐतहासक तथयों की रोशनी मं काम करना चाहए। सचचाइ डारवनवादयों क इन दावों को झूठा साबत कर दती ह क सभ्यता हमशा आदम स उननत की दशा मं वकास करती ह। बहुत स सधदांतक रतठान कल्पत वकास ररया क तहत मानव वकास का बौरा दन का

रयास करत हं। उस मानव क वकास का जो सभ्यताओं की स्थापना करता ह, संगीत की रचना करता, अंतरष का संधान करता ह, वज्ञानकों क काम का सही तरीका यह ह क व सधदांतक आधार पर आचारण करन क बजाय रयोगों, अनुसंधानों और पयरवषणों की रोशनी मं आचरण करं।

इतहास क वकास की धारणा को झुठलान वाली एक और राचीन सभ्यता: माया जात

तकरीबन तमाम वकासवादी रकाशनों मं एक चीज साझी होती ह। लगभग सभी इस काल्पनक परदृशय को दशान क लए काफी जगह दत हं क कसी सजीव राणी की खास आंतरक संरचना या रकृत का वकास कस हुआ होगा। उल्लखनीय कारक यह ह क वकासवादी जन कहानयों क सपन बुनत हं उनहं वज्ञानक तथय क ूप मं दशाया जाता ह। सचचाइ यह ह क य क्योर डारवनवादी काल्पनक कहानयों क सवा कुछ नही होत। वकासवादी ऐस दृशयलख पश करन क रयास करत हं जनहं वह वज्ञानक रमाण मानत हं जबक व रामकहोत हं और उनकी कोइ वज्ञानक उपादयता नहीं होती। और व कभी भी वकासवादी दावों क रमाण नहीं बन सकत।

वकासवादी साहतयों मं इस तरह की एक कहानी जो राय: छपती ह वह कसी कपवत राणी क इनसान मं ूपांतरत होन और एक पछड मानव क रमक ूप स सामाजक राणी बनन की कहानी होती ह। उनकी पुट करन वाल कोइ वज्ञानक रमाण नही हं फर भी इस कल्पत आदम मानव जात की छवयां इस दृशयलख क सबस जान पहचान हस्स हं- जनमं उनको थोडा- सा ऊपर उठ कर झुककर चलत, घुरघुरात, पतथर क अपन अनगढ हथयारों स शकार करत दखाया जाता ह।

इन पुनरचनाओं को कल्पना करन और उन पर ववास करन क आमंरण क ूप मं पश कया जाता ह। उनक साथ वकासवादी लोगों को ठोस तथयों क आधार पर नहीं बल्क काल्पनक अनुमानों क आधार पर यकीन दलान की कोशश करत हं क योंक य वज्ञानक तथयों पर आधारत होन क बजाय इनक लखकों क पूवागहों और पूवरपरकल्पनाओं पर आधारत होत हं।

वकासवादी व्यावसायक साहतय मं इन कहानयों को परोसन और उनको वज्ञानक तथय बना कर पश करन मं तनक भर भी संकोच नही करत । हालांक व अपन बौरों की ु टपूणररकृत स अचछी तरह परचत होत हं। बहरहाल य दृशयलख जनहं वकासवादी इतनी बहुतायत स पश करत हं, दरअसल वकास क सधदांत का रमाण नही, अटकल भर हं क्योंक इस बात क कोइ रमाण नहीं हं क मानव जात का जनम कप जस कसी पूवरज स हुआ ह। इसी तरह, कोइ भी पुरातात्वक या ऐतहासक रमाण यह नही कहता क आदम स उननत समाजों का वकास हुआ ह। इंसान जब पहली बार अस्तत्व मं आया तब स इंसान ही रहा ह और इतहास क वभनन कालखंडों मं उसन सभ्यताओं और संस्कृतयों का सृजन कया ह। माया सभ्यता इसी तरह की सभ्यताओं मं स एक ह, जनक अवशष आज भी कौतूहल जगात हं।

ऐतहासक रोत सफद लबाद मं ढंकी उस ऊंची आकृत का उल्लख करत हं जो इस षर क समुदायों मं आयी। स्मारकों पर अंकत सूचनाओं क अनुसार कुछ समय क लए एकवरवादी आस्था का रसार हुआ जबक वज्ञान और कला क षर मं बहुत सारी रगत हुइ।

गणत की माहर मायाजात

माया जात लगभग 1000 साल इसा पूवरमं मधय अमरीका मं रहती थी- मर, यूनान और मसोपोटामया- जसी वकसत सभयताओं स काफी दूर। खगोल वज्ञान और गणत क षर मं रगत और उनकी जटल लखत भाषा माया जात की सबस रमुख वशषता ह।

समय, खगोलवज्ञान और गणत का माया जात का ज्ञान उस समय की पचमी दुनया क मुकाबल हजारों साल आग था। मसलन पृथवी की वाषरक गत की उनकी गणना कंपयूटर का आवषकार होन स पहल तक की दूसरी तमाम गणनाओं की अपषा सबस सटीक थी। पचम क गणतज्ञों क शून्य की अवधारणा का आवषकार करन स हजारों साल पहल ही माया जात शून्य की गणतीय अवधारणा का उपयोग करती थी और अपन समकालीनों क मुकाबल जयादा उननत आकृतयों और चयनों क लए उसका इस्तमाल करती थी।

माया कलंडर

माया क लोग जस नागरक कलंडर हाब का इस्तमाल करत थ, उसमं 365 दन थ। यह उनकी वकसत सभ्यता का एक नतीजा था। वास्तव मं वह जानत थ क एक वषर 365 दनों स जरा लंबा होता ह; उनका आकलन 365.242036 दन का था। रगोरयन कलंडर, जो आज इस्तमाल होता ह, मं 365.2425 दन हं।[67] जसा क आप दख सकत हं, इन दोनों आंकडों मं बहद मामूली अंतर ह जो गणत और खगोलशास्र क षर मं उनकी दषता का रमाण ह।

माया सभ्यता क लोगों का खगोलशास्र ज्ञान

माया क लोगों स जो तीन पुस्तकं हमं मली हं उनहं माया कोडीसज क ूप मं जाना जाता ह। उनमं उनक जीवन और खगोलशास्र क उनक ज्ञान क बार मं महतवपूणर जानकारी ह। तीन कताबों - म र ड कोडक्स, प रस कोडक्स और ड्ªसडन कोडक्स - मं स अं तम कताब खगोलशास्र क उनक ज्ञान की गहराइ दशा न क संदभर मं काफी महतवपूणर ह। उनकी लखन रणाली काफी गूढ ह जसस 30 र तशत स भी कम ही समझा गया ह। ल कन इतना भी यह दखान क लए काफी ह क व वज्ञान क कस स्तर तक पहुंच थ।

उदाहरण क लए ड्ªसडन कोडक्स क पृठ 11 पर शुर रह क बार मं जानकारी ह। माया क लोगों न गणना की थी क शुर ीय वषर 583.92 दन का होता ह और उनहोंन उस 584 दन गना। इसक अलावा उनहोंन रह क हजारों वषर क चर क रखा चर बनाय थ। कोडक्स क दो अनय पृठ मंगल, चार पनन बृहस्प त और उसक उपरहों तथा आठ पृठ चंरमा, बुध और श न को सम पत्त हं जनमं सूयर क इदर्गदर इन रहों क कंर, एक दूसर स इनक सबंधों और पृथवी क साथ इनक संबंधों क ज टल आकलन हं।

माया क लोगों का खगोलशास्रीय ज्ञान इस कदर सटीक था क उनहोंन नधा रत कर लया था क शुर ीय कषा स हर 6,000 वषर पर एक दन घटाना होगा। उनक पास ऐसी जानकारी कहां स आइ? खगोलश्ासरयों, खगोल-भौ तक श्ास रयों और पुराततव वदों क लए यह एक बहस का वषय ह। आज, ऐसी ज टल गणनाएं कंप यूटर रौयो गकी की सहायता स की जाती हं। बाहरी अंत रष क बार मं जानकारी वज्ञा नक तमाम तकनीकी और वयुत यंरों स सुस ज्जत वधशालाओं मं पात हं। इसक बावजूद माया जा त न अपना ज्ञान वत्तमान रौयो गकी की इजाद स स दयों पहल रा पत कया। इसस एक बार फर इस मानयता खं डत होती ह क समाज न हमशा आ दम स स एक वक सत राजय क ूप मं र ग त की। अतीत क कइ समाजों की सभ्यता उतनी ही वक सत थी जतनी क वत्तमान सभ्यताएं हं और कइ बार तो इसस भी अ धक वक सत थीं। आज क कइ समुदायों न उन स्तरों को नहीं छुआ जहां अतीत क समाज पहुंच चुक हं। संष प मं, सभ्यताएं कभी कभी आग बढती हं और कभी कभी पीछ और कभी कभी वक सत और आ दम, दोनों सभ्यताएं एक ही समय उप स्थत रहती हं।

राचीन माया शहर तकाल मं सडकों का नटवकर

राचीनतम माया शहरों मं स एक तकाल, 8वीं सदी इसा पूवर मं बसाया गया था। घन जंगल क बीच स्थत इस शहर मं पुराता तवक उतखनन स घरों, महलों, परा मडों, मं दरों और सभा स्थलों का पता चला ह। यह सभी ष र एक दूसर स सडकों स जुड हुए हं। रडार तस्वीरों स पता चलता ह क शहर क पास एक मुकममल जल नकासी रणाली क अलावा वृहत संचाइ रणाली भी थी। तकाल न तो कसी नदी और न ही कसी झील क कनार स्थत था परंतु शहर दस जलकुंडों का इस्तमाल करता था।

तकाल की पांच मुखय सडकं जंगल मं जाती थीं। पुराततवशास्री इनका जर नुमाइशी सडकों क ूप मं करत हं। आकाश स ली गइ तस्वीरों स पता चलता हं क माया शहरं एक दूसर स सडकों क एक नटवकर स जुड हुए थ जनकी लंबाइ लगभग 300 कलोमीटर (190 मील) थी। यह एक अ भयां रकीय कौशल का नमूना थी। सभी सडकं तोडी गइ चटानों स बनाइ गइ थी और इनपर हल्क रंग की एक परत थी। यह सडकं एकदम सीधी थीं, जस ूलर स बनाइ गइ हों। य महतवपूणर सवाल बन रह जात हं क सडक नमा ण क समय मायावासी कस इन सडकों की दशा नधा रत्त कर सक थ। उनहोंन कौन स उपकरण व औजार इस्तमाल कय गय थ। र मक वकास की मान सकता स यु त संगत और ता कक उतर नहीं मलंग। कयोंक हमार सामन इंजी नय रंग का अजूबा ह, सकडों कलोमीटर लंब मागर, यह बलकुल साफ ह क यह सडकं वस्तृत गणनाओं और नापजोख तथा आवशयक सामरी व उपकरणों क इस्तमाल का नतीजा थ।

मायावा सयों क इस्तमाल मं आन वाल दंतचर

माया जा त क ष रों क शोध स पता चलता ह क व दनतचर वाल यंरों का इस्तमाल करत थ।
ऊपर दखाया गया चर, माया जा त क रमुख शहर कोपान का ह और इसका एक रमाण ह। एक समाज जो दनतचर रौयो गकी का इस्तमाल करता ह, उसक पास यां रक अ भयां रकी का ज्ञान होना आवशयक ह।

इस ज्ञान क बना दनतचर रणाली का उतपादन करना कसी क लए भी असंभव ह। उदाहरण क लए, अगर आपको तस वीर मं दखाइ गइ रणाली वक सत करनी हो तो बना उ चत र शष ण क आप ऐसी रणाली नहीं बना सकत और न ही यह सु न चत कर सकत हं क यह रणाली ठीक तरीक स काम करगी।

मायावासी ऐसा कर पाए। यह उनक ज्ञान क स्तर का एक महतवपूणर सूचक ह और सधद करता ह क जो अतीत मं रहत थ "पछड" नहीं थ जसा क वकासवादी दावा करत हं।

अब तक सफर चंद उदाहरण ही दय गय हं जो अतीत मं समाजों की तरफ स हा सल सभ्यता क वक सत स्तरों को दशा त हं। यह एक महतवपूणर सचचाइ की तरफ इशारा करत हं: इतन वषो स थोपी गइ यह वकासवादी अ भधारणा गलत ह क अतीत मं समाज सादा, पछडा और आ दम जीवन जीत थ। सभ्यता क अलग अलग स्तरों

और व भनन संस्कृ तयों वाल समाज हर युग मं रह हं; इसक बावजूद कसीन कसी और स र मक वकास नही कया। इस तथय क कुछ पछडी सभ्यताओं का 1000 वषर पहल अ स्ततव था, इसका यह अथर नही ह क इ तहास न र मवकास कया या समाजो न आ दम स अ धक वक सत समाज क ूप मं वकास कया। इन पछड समुदायों क साथ ही ऐस अ तवक सत समाज भी थ जनहोन वज्ञान एवं रौयो गकी मं काफी वकास कया और गहरी सभ्यताएं वक सत की। हां, सांस्कृ तक लनदन और अ जस ज्ञान जो पी ढयों क ज रय फला, उसकी समाजो क वकास मं भू मका हो सकती ह। ल कन यह र मक वकास नहीं ह।

अतीत क इन कौमों क उदाहरण दत हुए, अल्लाह हमं कुरान मं बताता ह क इनमं स कुछ न वक सत संस्कृ तयों का नमा ण कया था।

क्या उन लोगों न ूए जमीन पर चल फर कर नहीं दखा क जो लोग उनस पहल थ उनका अनजाम क्या हुआ (हालाँ क) वह लोग कुवत (शान और उर सब) मं और जमीन पर अपनी नशा नयाँ (यादगारं इमारतं) वगरह छोड जान मं भी उनस कहीं बढ चढ क थ तो खुदा न उनक गुनाहों की वजह स उनकी ल द की, और खुदा (क गजब स) उनका कोइ बचान वाला भी न था .... (सूरा गफीर: 21)

तो क्या य लोग ूए जमीन पर चल फर नही, तो दखत क जो लोग इनस पहल थ उनका क्या अंजाम हुआ, जो उनस (तादाद मं) कहीं ज्यादा थ और कूवत और जमीन पर (अपनी) नशा नयाँ (यादगारं) छोडन मं भी कहीं बढ चढ कर थ तो जो कुछ उन लोगों न कया कराया था उनक कुछ भी काम न आया ... (सुरा गफीर: 82)

गरज कतनी ब स्तयाँ हं क हम न उनहं बरबाद कर दया और वह सरकश थी पस वह अपनी छतों पर ढही पडी हं और कतन बकार (उजड कुएँ और कतन) मजबूत बड-बड ऊँच महल (वीरान हो गए) (सूरा अल-हज: 45)

कुरान की इन बातों का समथर्न पुराततवशास्त्रयों की खोज स होता ह। पुराता तवक खोजों और स्थलों जहां अतीत मं समुदाय रहत थ, की जब जांच की जाती ह तो यह दखा जा सकता ह क तब क कइ समाजों का कुछ वतर्मान समाजों स ऊंचा स तर था और उनहोंन नमा ण रौयो गकी, खगोलशास्त्र, ग णत और दवा क ष र मं बहुत वकास कया था। इसस एक बार फर डार वन का इ तहासों और समाजों क र मक वकास का मथक टूटता ह।

भाषा के र मवकास में ग तरोध

मानव जा त क इ तहास क र मवकास क मथक क वणर्न करन क र म मं वकासवादी अनक गंभीर समस्याओं स दोचार होत हं। उनमं स एक यह ह क मानव चतना का उदय कस होता ह। एक दूसरी चंता बोली की उतप त की ह जो अनय जी वत रा णयों स मानव जा त को भनन करन वाली व शटता ह।

जब हम बोलत हं, तो भला हो भाषा का, हम अपन वचारों को शकल दन मं, और उनहं एक ऐस तरीक स अ भव्यत करन मं समथर होत हं जस दूसरा पष समझ सकता ह। हालां क इसक लए होंटों, गल और जीभ की मांसप शयों को बहुत ही व शषीकृत ूप मं हलान-डुलान की आवशयकता होती ह, हम इसस ज्यादा अवगत नहीं हं। हम ''सफर'' बोलना चाहत हं। ध्व नयां, अष र और शब्द करीब 100 व भनन मांसप शयों क सामंजस्य क साथ सकुडन और फलन स उभरत हं और दुसरों क बोधयोग य वाक्यों का नमा ण कता , कमर्, सवर्नाम जस व्याकरणीय ततवों क उ चत वनयासों एवं र मों स होता ह। यह तथय क हम इस तरह की ष मता का उपयोग करन की "इचछा" स ज्यादा कुछ नहीं करत, यह स्पट ूप स दखाता ह क बोली महज ऐसी कोइ ष मता नही ह जसका उभ्द्व अ नवायर ज वक संरचनाओं स होता हो।

बोलन की मानवीय ष मता एक अ धका धक ज टल प रघटना ह जसकी व्याखया काल्प नक आवशयकताओं या कसी वकासवादी र र या क संदभो मं की जा सकती हो। गहन शोध एवं अनुसंधान क बावजूद, वकासवादी ऐसा कोइ साषय पश करन मं नाकाम रह क बोलन जसी एक अ धका धक ज टल ष मता का र मवकास रा णयों जस सरल ध्व नयों स हुइ ह। पन स ल्व नया यू नव सर्टी क ड वड परमक न इस नाकामी को पूरी तरह उजागर कर दया जब वह कहत हं, "मानव भाषा र मवकास क सधदांत क लए एक उलझन ह..." [68]

सुर सधद भाषावज्ञा नक डरक बकटर्न न इस "उलझन" क कारणों का सार-संकलन कया ह।

"क्या भाषा सीध तौर पर कुछ मानवपूवर वशषताओं स आइ ह? नही। क्या यह रा णयों क बीच क संचार क कसी ूप स मलता ह? नही... गहन र शष ण क बावजूद, कोइ नर वानर अभी तक वाक्य वनयास का राथ मक ूप भी रहण नही कर पाया ह...कस शब्द उभरत हं, कस वाक्य वनयास उभरता ह ल कन य समस्याएं भाषा क र मवकास मं न हत ह।" [69]

इस धरती की सभी भाषा ज टल ह, और वकासवादी भी यह कल्पना करन मं सषम नही ह क इस तरह की ज टलता र मक ूप स कस आइ। वकासवादी जववज्ञा नक रचडर डा कनस क अनुसार सभी भाषाएं - सबस आ दम मानी जानी वाली आ दवासी भाषाएं भी - बहद ज टल हं।

मरा स्पट उदाहरण भाषा ह। कोइ नहीं जानता कस इसकी शु आत हुइ...उतनी ही अस्पट ह अथरवज्ञान की उतप त; शब्दों और उनक अथो की...इस दु नया की तमाम हजारों भाषाएं बहुत ही ज टल हं। मं इस समझ क र त पूवरह स रस्त हूं क यह र मक ह, ल कन यह साफ नहीं ह क ऐसा इनहं होना था। कुछ लोग सोचत हं क इसकी शु आत अचानक हो गइ, कसी वशष स्थान पर कसी खास समय पर कसी एक र तभाशाली क्य त वारा कमोबश इसका अनवषण कया गया।[70]

ए रजोना स्टट यु नव सर्टी क दो वकासवादी अनुसंधानकता , डब्लू. क. व लयमस और ज. वकफील्ड इस वषय पर कहत हं:

भाषाइ र म वकास क मधयवती चरणों क बार मं साषयों की कमी क बावजूद वकल्पों को स्वीकार करना क ठन ह। अगर कुछ र जा त-कृन र त वशषताएं टुकडों-टुकडों मं वक सत नहीं हुइ ह तो ऐसा र तीत होता ह क इसक उभ्भव की व्याख या करन क लए दो ही रास्त हं। या तो इस कसी अब भी खोजी जानी वाली श त, संभवत: द वक हस्तषप क वारा पश कया गया ह या फर यह र जा तयों क वकास मं कसी अपष ाकृत आक स्मक प रवतर्स, संभवत: कसी र कार क स वत:स्फूतर एवं व्यापक उतप रवतर्स का नतीजा हो सकता ह...ल कन इस तरह क उतप रवतर्स की आक स्मक र कृ त इस व्याखया को शंकार द बनाता र तीत होता ह। जसा क इं गत कया जा चुका ह (पंकर एंव ब्लूम, 1990), उतप रवतंर्स स इस तरह की ज टल और भाषा जस कायभ्भार क लए उपयुत व्यवस्था की उतप त की संभावना अतयंत षीण ह।[71]

भाषा वज्ञान क र ोफसर नोआम चोमस्की न बोलन की ष मता की ज टलता पर टप पणी करत हुए कहत हं:

मंन अभी तक भाषा क उतपादन क बार मं कुछ नहीं कहा ह। कारण यह ह क इसक बार मं ू च की बात करन क लए बहुत कम ह। बाहरी पहलुओं को छोड कर, यह रहस्य बना हुआ ह।[72]

उन लोगों क लए बोलन की ष मता की उतप त पूरी तरह साफ ह जो वकासवादी अवधारणाओं क अंदर कद नहीं हं। यह अल्लाह ह जो यह ष मता इंसान को अता फरमाता ह। अल्लाह आदमी मं बोलन की सला हयत अता फरमाता ह जसा क कुरान की आयत मं ना जल कया गया ह:

"...वह जवाब दंग क जस खुदा न हर चीज को गोया (बोलन की ताकत अता) कया उसन हमको भी (अपनी कुदरत स) गोया कया।" (सूरा फु सलात: 21)

जस तरह वकासवादी बोलन की ष मता दन वाली ज वक संरचनाओं की उतप त की व्याखया करन मं असष म ह, उसी तरह व उस चतना की उतप त की व्याखया करन मं भी असष म हं। मानव चतना और भाषा की ज टलता दखाती ह क भाषा का सृजन अल्लाह न कया।

सचचे मजहब का वजूद इ तहास की शु आत से है

इ तहास और समाज की उतप त एवं र म वकास क छलावा को बढावा दन वालों की एक और गलती यह ह क वह दावा करत हं क मजहब - समाज क उचचतम मूल्य - का भी र म वकास हुआ ह। यह दावा 19वीं सदी मं पश कया गया और भौत कवा दयों तथा अ नव रवा दयों न उसका जबरदस्त बचाव कया। ल कन इसकी पु ट करन वाला कोइ पुराता तवक साष य नहीं ह और यह कयास आराइ क दायर मं बना ह।

इस दावा क समथर्स मं कोइ चीज नहीं ह क आ दम युग मं मानव तथाक थत "आ दम" कबायली एवं बहु इव रवादी धमो को मानत थ, और सचचा मजहब - हजरत आदम (अ.) क वत स पूरी इंसा नयत क लए पश कया गया और एक अल्लाह की मानयता पर आधा रत मजहब बाद मं आया। कुछ वकासवादी इस दाव को एक ऐ तहा सक हकीकत क ू प मं परोसन की को शश करत हं, ल कन उनहं सखत गलतफहमी ह। जस ज वक र म वकास का डार वन का सधदांत एक छलावा ह, उसी तरह धा मरक र म वकास का सधदांत भी जसन उसस र रणा र हण की ह।

कैसे "धमो के र म वकास" की गलती हुइ?

करीब डढ सदी पहल, जब डार वन की र जा तयों की उतप त अपन पहल संस्करण मं थी, र म वकास क वचार को भौ तकवा दयों और ना स्तकों का समथर्स मला। उस काल क कुछ चंतकों की समझ बनी क मानव इ तहास की हरक घटना की व्याखया र म वकास स की जा सकती ह। उनका कहना था क हरक चीज की शु आत तथाक थत एक बु नयादी आ दम चरण स हुइ और ज्यादा मुकममल शकल पान क लए उनका वकास हुआ।

यह गलती अनक ष रों मं दोहराइ गइ। मसलन, अथशास्त्र क दायर मं मासर्वाद का दावा ह क इस तरह का वकास अप रहायर था और यह क तमाम लजोग अंतत: सामयवाद अपनाएंग। अनुभव न दखाया क यह सफर एक सपना रहा और माकसवा द क दाव न हकीकत को र त बंबत नहीं कया।

मनो वज्ञान क षर म, सग मंड र ायड न कहा क मानव एक बहद र म वक सत रजा त ह, ल कन मनोवज्ञा नक ू प स उसकी र याएं अब भी उसी नोदन स र रत ह जनस उसक आ दम पूवर्ज न र रत थ। मनोवज्ञा नक शोध न वज्ञा नक ू प स इस बडी ु ट का खंडन कया ह और दखाया ह क र ायडवाद की बु नयादी प रकल्पनाओं का कोइ वज्ञा नक आधार नहीं ह।

इसी तरह समाजशास्र, नृ वज्ञान और इ तहास भी उतप त एवं र म वकास क सध दांत स रभा वत रह हं, ल कन पछली सदी क दौरान की खोजों स मली सूचनाओं न दखाया क इन रभावों क नतीज वपरीत रह हं।

इन वकासवादी सधदांतों की समान वशषता अल्लाह पर कसी आस्था का उनका वरोध ह। यह धमर क र म वकास क गलत वचार क पीछ का दाशर्नक आधार ह। इस ु ट क अरणी रणता हरबटर स्पंसर क गलत दावों क अनुसार रांर भक मानवों का कोइ धमर नहीं था। धमर क "र म वकास" क छलाव का समथर्न करन वाल दूसर नृ वज्ञानी दूसरी अवधारणा पश करत हं। कुछ का कहना ह क धमर का र ोत जीववाद (रकृ त मं दव्य आतमा का गुणारोपण) मं ह; दूसरों की समझ ह क यह टोटमवाद (कसी रतीक पु ष, समूह या वस्तु की पूजा) स उभरा ह। एक अनय नृ वज्ञानी इ. बी. टलर का मानना ह क धमर का वकास जीववाद स मनुषयवाद (पूवर्ज पूजा), बहुइव रवाद (अनक भगवान मं आस्था) और अंत मं एकव रवाद मं हुआ ह।

इस सध दांत को नरीव रवादीनृ वज्ञा नयों न 19वीं सदी मं पश कया और तब स इस जंदा रखा गया ह और व भनन प रदृशयों मं पश कया गया ह। ल कन यह एक छलावा स ज्यादा कुछ नहीं ह। जसा क पुराता तवक और ऐ तहा सक साषय द खात हं, इन वज्ञा नकों की प रकल्पना क वपरीत आ दम काल स एक एकव रवादी धमर रहा ह जस अल्लाह न अपन पगंबरों क माफर्त मानव पर ना जल कया ह। ल कन उसक साथ ही, सचच मजहब क साथ हमशा भनन और गलत और भटकी आस्थाएं बनी रहीं। जस तरह आज ऐस लोग हं जो मानत हं क अल्लाह एक और बस एक ह और उसक ना जल कए गए मजहब क मुता बक जंदगी गुजारत हं, उसी तरह व लोग भी हं जो गलत तरीक स लक डयों और पतथरों की, या शतान की, या अपन पुखो और उसक साथ ही व भनन आतमाओं, जानवरों, सूरज, चांद या सतारों की पूजा करत हं। और उनमं स बहुत स लोग पछड नहीं हं, ब ल्क इसक वपरीत बहुत ही आधु नक हालात मं रहत हं।

समूच इ तहास मं ऐस लोग रह हं जनहोंन अल्लाह क ना जल सचच मजहब की परवी नहीं की ह और उसक न तक मूल्यों को खतम करन की को शश की ह। कुरान मं अल्लाह कुछ ऐस लोगों क बार मं बताता ह जो उनहं ना जल कए गए सचच मजहब मं अंध ववासों का घालमल करना चाहत थ और जनहोंन इसमं फरबदल कया और इस तबाह कया।

पस वाए हो उन लोगों पर जो अपन हाथ स कताब लखत हं फर (लोगों स कहत फरत) हं क य खुदा क यहाँ स (आइ) ह ता क उसक ज रय स थोडी सी कीमत (दु नयावी फायदा) हा सल करं पस अफसोस ह उनपर क उनक हाथों न लखा और फ र अफसोस ह उनपर क वह ऐसी कमाइ करत हं (सूरा अल बर : 79)

यही कारण ह क इस दौरान ऐस कुछ लोग रह जो अल्लाह क वजूद और वहदत (एकातमकता) मं यकीन रखत थ और उसक हुक्म को मानत थ, ल कन उनहोंन सचच मजहब को तयाग दया। इस तरह सचच मजहब स इतर व वा स और तरीक अमल मं आ गए। दूसर शब्दों मं, कुछ लोगों न जो अवधारणाएं पश की, उसक वपरीत कभी धा मर्क र म वकास की कोइ र र या नहीं रही; ब ल्क कुछ वशष समय पर सचच मजहब को तोडा-मरोडा गया जसक प रणाम स्वू प एक इतर व वा स उभरा।

सचचे मजहब में फेरबदल

बीसवी सदी मं धमो की उतप त पर महतवपूणर शोध कया गया ह। भला हो उसका क यह साफ हुआ क धमो क र मव कास क दावों मं कोइ वज्ञा नक मूल्य नहीं ह, और यह क इस तरह क दाव महज काल्प नक प रदृशय हं। एं र यू लांग और वल्हम शमडट जस अरणी नृ वज्ञा नयों क वव धमो क शोध न दखाया ह क धमो का र म वकास नहीं हुआ ह; इसक वपरीत, कभी कभी व वकृ तयों स गुजर हं। शमडट क शोध क नतीज ऐंर ोपोस प रका मं रका शत हुए।

खास कर 1900-1935 क बीच हुए शोधों न दखाया क धमो क र म वकास क दाव पूरी तरह गलत हं। इसन बहुत स नृव ज्ञा नयों को अपन वकासवादी वचारों को तयागन क लए र रत कया। ल कन इन वज्ञा नक एवं ऐ तहा सक तथयों क बावजूद कुछ र डकल नरीव रवादी इस प रदृशय का बचाव करना जारी रख हं।

मर एवं मेसोपोटै मया की पुराता तवक खोजें

मसोपोटमया का मदानी इलाका राचीण मर की सभ्यता स बहुत दूर नहीं ह और "सभ्यताओं का पालना" कहलाता ह।

इन इलाकों क पुरातातवक शोध स सबस अहम जानकारयां उन समाजों की धामक आस्थाओं क बार मं खोजों स उभरी हं। शलालख हमं अनगनत अयथाथर भगवानों की गतवधयों की जानकारी दत हं। जस जस जानकारयां मली और शोधकताओं न आंकडों की व्याखया करन क बहतर तरीक खोज, इन सभ्यताओं की धामक आस्थाओं क बार मं बौर उभरन लग। उनमं स सवाधक रोचक बात यह ह क लोग अयथाथर दवी-दवताओं मं ववास करत थ, लकन साथ ही एक इवर पर भी यकीन करत थ। ऐतहासक साषय दखात हं क सचचा मजहब हमशा मौजूद रहा। आग क पननों पर यह साबत करन क लए मसोपोटमयाइ, मरी और यूरोपीय सभ्यताओं क साथ ही एजटक, इंका और माया सभ्यताओं की भी जांच पडताल की जाएगी क व तमाम एक इवर मं यकीन रखत थ और वहां पगंबर गए थ और उनहं सचच मजहब स ुबु कराया था। पहल शोधकता जसन खोज की क बहुइवरवाद मं शुू मं एकवरवाद था, ऑक्सफोडर यूनवसटी क स्टीफन लंगडोन थ। 1931 मं उनहोंन वजानक वव क सामन अपनी खोज की घोषणा की और कहा क य बहुत अरतयाशत हं और पहल क वकासवादी व्याखयाओं क वूधद हं। लंगडोन न अपन नषकषो की व्याखया इस रकार की:

...मानव की राचीनतम सभ्यता का इतहास एकवरवाद स चरम बहुइवरवाद और खराब आतमाओं मं तज पतन का ह। [73]

पांच साल बाद, लंगडोन न द स्कॉटमन मं अपनी बात फर कही:

साषय नस्संदहपूवकर एक मूल एकवरवाद की तरफ इंगत करत हं, राचीनतम शामी लोगों क शलालख और साहतयक अवशष भी ... एकवरवाद इंगत करत हं, और इरानी एवं अनय शामी धमो की टोटमवादी उतपत अब पूरी तरह खारज ह।[74]

तीन हजार इसा पूवर क सुमरयाइ शहर का स्थल आधुनक तल अस्मर की खुदाइ स जो नषकषर उभर हं व लंगडोन क वचारों का पूरी तरह समथर्स करत हं। खुदाइ नदशक हनरी रंकफोटर न यह आधकारक रपोटर दी ह:

अपन जयादा ठोस नतीजों क अतरत हमारी खुदाइयों न एक अनूठा तथय स्थापत कया ह जसपर बबीलोनयाइ धमो क छारों को अब स धयान दना होगा। अपनी रठ जानकारी मं हमन पहली बार अपनी सामाजक परदृशय मं मुकममल धामक सामरी पाइ।

हमार पास मंदर स और उस मंदर मं उपासना करन वालों क घरों स बराबर मारा मं मल साषय हं। इस तरह हम नषकषर नकालन मं सषम हं, जो अकल खोजों क अधययन स संभव नहीं हो पाता।

मसाल क तौर पर, हमन बलनाकार मुहरों पर चरण, जो आम तौर पर वभनन दवताओं स जुड होत हं, को एक सुसंगत तसवीर मं फट कया जा सकता ह जसमं इस मंदर मं पूजा कए जान वाला एक एकल भगवान कनरीय ूप धारण करता ह। इस लए ऐसा रतीत होता ह क इस राथमक काल मं उसक वभनन पहलुओं को सुमरयाइ-अक्कादयाइ दवकुल मं अलग दवताओं क ूप मं नहीं माना जाता था। [75]

रंकफोटर की खोजों न इस महतवपूणर तथय को उजागर कया क कस अंधववासी बहुइवरवादी रणाली वजूद मं आती ह। धमो क रमवकास क सधदांत का दावा ह क बहुइवरवाद का उभव उस समय होता ह जब लोग रकृत की शतयों का रतनधतव करन वाली खराब आतमाओं की पूजा शुू करत हं। लकन ऐसा नहीं ह। एक कालखंड मं, लोगों न एक इवर क वभनन नूपणों की अलग अलग समझ वकसत कर ली, जसन अंतत: उनहं एक इवर की आस्था स भटकाया। एक अल्लाह क वभनन नूपण अनक की आस्था मं तबील हो गए।

लंगडोन क सुमरयाइ तखतयों की व्याखया स पहल ररक डलटजश नामक एक अनय शोधकता न वसी ही खोज की थी। उसन पाया क बबीलोनयाइ दवकूल क अनक दवी-दवता मरदुक क वभनन खुबयों स अवर मत हुए हं। शोध न दखाया ह क मरदुक मं आस्था एक कालखंड मं एक अल्लाह मं यकीन मं वकृत का नतीजा ह।

एकल दवता मरदुक क कइ नाम थ। वह ननब, या "शतयों का मालक," नरगाल या "जंग का दवता," बल या "रभुतव वाला," नबो या "पगंबरों का स्वामी," सन या "रात मं उजाला करन वाला," शमश या "हर उस चीज का स्वामी जो उचत ह" और अडू या "बारश का दवता" कहलाता था। ऐसा रतीत होता ह क एक कालखंड मं मरदुक क य नूपण उसस अलग हो गए और वभनन दवताओं को मल गए। उसी तरह, लोगों की कल्पना क नतीज मं सूयरदवता या चंर-दवता जस अयथाथर दवता वजूद मं आ गए। मरदुक क साथ इस अयथाथर दवता पर आस्था दखाती ह क यह आस्था रणाली वास्तव मं एक इवर पर यकीन मं वकृत स पदा हुइ।

हम राचीन मर में इस तरह की वकृत क अंश दख सकत हं। शोधकताओं न खोज की ह क राचीन मरवासी सबस पहल एकवरवादी थ, लकन बाद में उनहोंन इस रणाली को खतम कर दया और इस नषर-पूजा या सूयरपूजा में बदल दया। एम दी ू ज लखत हं:

यह नवचाद ू प स सही ह क मरी धमरक उदाततर हस्स वकास की या अपरषकृत क उनमूलन की कसी ररया क अपषाकृत बाद क नतीज हं। उदाततर हस्स वास्तव में राचीन हं; और गर-इसाइ या इसाइ यूनानी और लातीनी लखकों को मरी धमरक जस अंतम चरण की जानकारी ह, वह बहद अपरषकृत और सवाधक रट ह। [76]

नृवज्ञानी सर फ्लंडसर परी कहत हं क अंधववासी बहुइवरवादी आस्था एक एकल इवर में आस्था की रमक वकृत स उभरती ह। इसक अतरत वह कहत हं क वकृत की यह ररया अतीत क समाजों की तरह आज क समाज में भी दखी जा सकती ह।

राचीन धमो और धमखज्ञान में बहुत भनन वगरक दवता हं। कुछ जातयां, मसलन आधुनक हंदू, दवी-दवताओं की रचुरता में खुश होत हं जनमें नरंतर वृधद होती रहती ह। दूसर ... महान दवताओं की पूजा की कोशश नही करत, लकन अनक जीववादी आतमाओं और शतानों स नबटत हं...

अगर कसी दवता की अवधारणा इस तरह की कसी आतमा पूजा का महज एक रमवकास होता, हम एक इवर की पूजा क पहल अनक दवताओं की पूजा पात...हम वास्तव में जो पात हं वह इसक वपरीत ह, एकवरवाद धमखज्ञान में खोजा जा सकन वाला पहला चरण ह...

जहां कहीं हम बहुइवरवाद को उसक आदमतम चरणों में खोज सकत हं, हम पात हं क यह एकवरवाद क संयोग का एक नतीजा ह...[77]

भारत में अंधववासी बहुइवरवाद की उतपत

हालांक भारतीय संस्कृत उतनी राचीन नहीं ह जतनी पचम एशयाइ संस्कृतयां, यह उन राचीनतम संस्कृतयों में स एक ह जो बरकरार हं।

भारतीय मूतपूजा में तथाकथत दवी-दवताओं की संखया वस्तुत: अंतहीन ह। लंब अधययन क बाद एंरयू लंग न नधारत कया क भारत में बहुइवरवादी धमर पचम एशया की तरह की ही ररया क नतीज में उभर हं।

भारतीय धामरक आस्थाओं क बार में लखत हुए एडवडर मकर डी कहत हं क ऋगवद दखाता ह क राचीन काल में दवी-दवताओं को सफर एक एकल दव्य शत क ववध अवभाव क ू प में लया जाता था। [78]

ऋगवद क लोकों में हम एक एकल इवर की एकवरवादी वचार क वधवंस क अंश दख सकत हं। इस षर क एक अनय शोधकता मकस मूलर इसस सहमत जतात हं क पहल एक इवर में आस्था थी:
एक एकवरवाद था जो वद में बहुइवरवाद स पहल आता था; और असंखय दवताओं क आवान में भी एक और असीम इवर का स्मरण गुजरत हुए बादलों स छप नील आकाश की तरह मूतपूजकर मुहावरों को कुहासा तोडता ह। [79]

इसस एक बार फर या स्पट होता ह क धमो का कोइ रमवकास नही हुआ, बलक लोगों न सचच मजहब में अयथाथवादी ततव जोड दए, या कुछ वशष हुकम एवं रतबंधों की उपषा की - जसक नतीज में अंतत: धामरक आस्था में वकृत आइ।

यूरोपीय इतहास में धमो में रदूषण

हम इसी तरह क रदूषण ऐतहासक यूरोपीय समाजों की आस्थाओं में भी दख सकत हं। अपनी कताब द रलजन ऑफ रीस इन रीहस्टोरक टाइमस, एकसल डबलू पससन लखत हं:

...वहां बाद में बडी संखया में कमोबश महतवपूणर हस्तयां वकसत हुइं जो हम यूनानी धामरक मथकों में पात हं। मर वचार स, उनमें इजाफा बडी हद तक मूलत: एक एवं समान दवता क वभनन आवानकारी नामों पर नभर करता ह। [80]

इसी तरह क फरबदल क अंश इटली में भी दख जा सकत हं। आइरीन रोजनवीग नाम एक पुराततवद न एस्काइ काल क इगुवाइन तालकाओं पर शोध करन क बाद यह नषकषर नकाला क "दवताओं को वशषणों स अलग कया जाता ह, जो बाद में स्वतंर दवक शत क ू प में उभरत हं।"[81]

संषप में, पछली सदी क तमाम नृवज्ञानी एवं पुरातातवक साषय इंगत करत हं क पूर इतहास में समाजों न पहल एक इवर पर आस्था जताइ लकन समय गुजरन क साथ इस आस्था में फरबदल कया। शुू में लोगों न

अल्लाह पर यकीन कया जसन शून्य स सभी चीजों का सृजन कया, जो तमाम चीजों को दखता और जानता ह और जो तमाम दुनया का मालक ह। लकन समय क साथ हमार परवरदगार क इन खताबों को गलत ढंग स अलग दवता मान लया गया और लोगों न इन अयथार्थवादी दवताओं की परस्तीश शुरू कर दी। सचचा मजहब एक और वाहद अल्लाह की इबादत ह। बहुइवरवादी धमर सचच मजहब मं फरबदल स वकसत हुए जस हमार परवरदगार न हजरत आदम (अ.) क समय स मानवता पर नाजल कया।

खुदा का नाजल कया गया सचचा मजहब

जब हम दुनया क वभनन हस्सों मं समाजों क सांस्कृतक और धामर्क मूल्यों पर नजर डालत हं, हम दखत हं क उनमं अनक चीजं मलती-जुलती हं। इन समाजों न कसी सांस्कृतक आदान-रदान मं कोइ साझदारी नही की होगी, लकन व फरशतों, शतान और जनन मं यकीन करत हं जो उसी आयाम मं नहीं रहत जसमं इंसान रहता ह। व मरन क बाद की जंदगी मं, मटी स इंसान की पदाइश पर यकीन करत हं; और उनकी इबादत मं अनक साझ ततव हं। मसाल क तौर पर, नूह की कशती का जर राचीन सुमरयाइ रकाडो मं, वल्श धमर मं, और चीनी शलालखों मं और राचीन लथुआनयाइ धमर मं ह।

यह महज एक सबूत ह क एक एकल, सवशतमान इवर - जो अल्लाह ह, दुनयाओं का स्वामी ह - न धामर्क नतकता नाजल की। दुनया भर मं संस्कृतयों को धमो की शषा दी गइ जो उसी एक चरम स्थल स आए और एक अतुलनीय परवरदगार क वजूद को जाहर कया। हमार परवरदगार न इतहास क तमाम काल मं उन पगंबरों क माफत खुद को जाहर कया जनहं उसन चुना और उदात कया; और उनक माफत उस धमर को नाजल कया जस उसन मानव जात क लए चुना। सवशतमान अल्लाह की आखरी कताब कुरान मं वह कहता ह क "और हर कौम क लए एक हदायत करन वाला ह " (सूरा अर-राद: 7)। दूसरी आयतों मं यह नाजल कया गया ह क वह तमाम कौमों को चतान क लए एक पगंबर भजता ह:

और हमन कसी बस्ती को बगर उसक (चतावनी दए) हलाक नहीं कया क उसक समझान को (पहल स) डरान वाल (पगमबर भज दए) थ और हम जालम नही ह (सूरा अश्-शुआरा: 209)
इन पगंबरों न हमशा कौमों को सखाया क उनहं सफर एक अल्लाह पर यकीन करना चाहए, और उनहं नकी पर अमल और बदी स बचना चाहए। इंसान अल्लाह क इन चुनंदा पगंबरों क हुक्म बजा कर और वरासत क तौर पर छोड गए उनकी मुकदस कताबों पर अमल कर क ही नजात का रास्ता पा सकत हं। दुनया पर करम फरमा कर परवरदगार न जो आखरी पगंबर भजा वह पगंबर हजरत मोहममद (स.) हं और परवरदगार की अनंतकालीन सुरषा मं कुरान आखरी मुकदस कताब ह जो मानवता क लए सबस सचचा मागर्दशर्क ह।

नषकषर

समय-शून्यता के यथार्थ को नकारा नहीं जाना चाहए

इस पुस्तक मं हमन जन ऐतहासक और पुरातातवक तथयों का परीषण कया ह व हमं यह झलकात हं क इतहास और समाज क वकास क समबनध मं डावन वारा कए गए दाव मूखर्तापूणर हं और व वज्ञानक रूप स वध नहीं हं। फर भी यद उनहं बरकरार रखा गया ह तो उसका एकमार कारण ह भौतकवाद क खातम की चनता। जसा क हम जानत हं, भौतकवादी लोग सृट की रचना क सतय को नकारन की गलती करत हं -- यह ववास करत हुए क पदाथर एक नरपष सत व ह जो सदा स अस्तितव मं रहा ह और अननतकाल तक अस्तितव मं बना रहगा। दूसर शब्दों मं कहं तो उनहोंन पदाथर का इवरीकरण कर दया ह। (नस्संदह इवर इन सबस पर हं) तथाप, आज वज्ञान इस बात की पुट करन क वनदु पर पहुंच चुका ह क यह रमांड शून्य स अपन अस्तितव मं आया (अथात इसकी रचना की गइ) और इस बात न भौतकवाद और भौतकतावादी खयालों को सहारा दन वाल सधांतों और फलसफों को खारज करक रख दया ह।

फर भी, भौतकतावादयों क खयाल भल ही वज्ञानक रमाणों स वरोधाभास दखा रह हों परनतु व कसी भी कीमत पर यह नही मान सकत क पदाथर नरपष नही बल्क 'नमत' ह। यद व एक षण क लए भी अपन अडयल पूवारह स जरा पीछ हट जात तो व सरल सतय का दशन कर पात और भौतकवाद न उनपर जो जादू फूंक मारा ह, उसस व मुत हो गए होत। ऐसा करन क लए इतना ही पयापत होगा क व अपनी जड जमा चुकी वचारधारा को पर रख दं, वचारक कटरता स आजाद हों और खुल दमाग स सोचं।

सबस पहली बात जस पर उनहं वचार करना चाहए वह ह समय की अवधारणा की वास्तवक रकृत, क्योंक भौतकवादी पदाथर क साथ-साथ समय को भी नरपष मानकर चलत हं। इस धोख मं आकर उनमं स कइ सतय को दखन स वंचत रह गए हं। आधुनक वज्ञान न यह साबत कया ह क समय पदाथर स 'व्युतपनन' ह और पदाथर की ही तरह समय को भी शून्य स नमत कया गया। इसका अथर यह ह क समय का एक आरमभ-बनदु रहा ह। साथ ही, वगत शताब्दी मं यह भी ज्ञात हुआ क समय एक सापष अवधारणा ह अथात वह एक रकार का परवतनशील बोध ह, न क कोइ स्थर और अपरवतनशील सतव, जसा क भौतकवादी लोग सदयों स मानत चल आ रह थ।

समय की अवधारणा की वास्तवक रकृत

हम जस "समय" कहत हं, वह वास्तव मं एक तरीका ह जसस हम एक पल की तुलना दूसर पल स करत हं। मसलन, जब कोइ व्य त कसी चीज को थपथपाता ह तो वह एक खास धव न सुनता ह। जब वह उसी वस्तु को दुबारा थपथपाता ह तो वह एक अनय धव न सुनता ह। यह मानत हुए क दो धव नयों क बीच एक अंतराल ह, वह इस अंतराल को "समय" का नाम दता ह। परनतु जब वह दूसरी धव न सुनता ह तो उसन जो पहली धव न सुनी थी वह उसक म स्तषक मं महज एक कल्पना क ू प मं अव स्थत होती ह, उसक जहन मं एक सूचना मार। कोइ भी व्य त समय समबनधी अपन बोध का सृजन "वत्तमान" पल की तुलना अपनी स्मृ त मं सहजी हुइ वस्तु स करक करता ह। य द वह ऐसा बोध न कर सक तो उस समय का भी बोध नही हो सकगा।

र सध पदाथर वज्ञानी जू लयन बाबोर न समय की प रभाषा इस रकार दी ह :

समय और कुछ नही ब ल्क वस्तुओं की बदलती हुइ स्थ त है। पेंडुलम झूलता है और घडी के कांटे आगे बढते है. 82

संषप मं, समय म स्तषक मं सहजी हुइ सूचनाओं क तुलनातमक प रणाम क कारण रतीत होता ह। य द आदमी क पास स मृ त नही होती तो उसका म स्तषक ऐस वलषण नहीं कर पाता और अत: वह समय का बोध भी वक सत नहीं कर पाता। कोइ व्य त अपन आप को तीस साल का इस लए मान लता ह क्यों क उसन तीस सालों स समब नधत सूचनाओं को सहज रखा ह। य द उसकी स्मृ त का अ स्ततव नहीं होता तो वह ऐस कसी गुजर हुए कालखंड का वचार नही कर सकता था और कवल उसी एकमार "ष ण" का अनुभव कर पाता जसमं वह रह रहा ह।

"अतीत" का बोध हमारी स्मृ तओं में सं चत सूचना मार है

हमं रापत होन वाल सुझावों क कारण हम यह सोच लत हं क हम अतीत, वत्तमान तथा भ वषय नामक अलग-अलग कालखंडों मं जीत हं। परनतु हमार मन मं "अतीत" की अवधारणा का एकमार कारण (जसा क पहल बतलाया गया ह) यह ह क हमारी स्मृ तओं मं अनक घटना-र म सं चत कए गए हं। उदाहरण क लए, जब हम राथ मक स्कूल म दा खल हुए थ उस पल को हम याद कर सकत हं और इस लए अतीत की एक घटना क ू प मं उसका बोध कर सकत हं। परनतु भ वषय की घटनाएं हमारी स्मृ तओं मं नही होतीं और अत: हम उनकी गनती ऐसी बातों मं करत हं जनका अनुभव हम भ वषय की घटनाओं क ू प मं नहीं करत। फर भी, जस रकार हमन अतीत का अनुभव अपन दृ टकोण स कया ह, वस ही हम भ वषय का भी करत हं परनतु चूं क व घटनाएं अभी हमारी स्मृ तओं मं र षत नहीं की गइ हं, हम उनहं जान नही सकत।

य द ऐसा होता क इवर आनवाली घटनाओं को भी हमारी स्मृ तओं मं डाल दत तो भ वषय भी हमार लए अतीत बन जाता। मसलन, तीस साल का एक आदमी अपन तीस साल की यादों और घटनाओं क बार मं सोच सकता ह और अतएव वह यह सोचता ह क उसक पास तीस साल का अतीत ह। य द तीस स लकर सतर सालों तक की आगामी घटनाएं उस व्य त क जहन मं डाली जा सकतीं तो फर इस तीस साल क व्य त क लए उसक वगत तीस साल और तीस स लकर सतर साल तक का "भ वषय" अतीत बनकर रह जाता। ऐसी प र स्थ त मं अतीत और भ वषय दोनों ही उसक लए वत्तमान बन जात और दोनों ही उसक लए स्पट अनुभव-गमय बातं हो जातीं।

चूं क इवर न एक सु न चत कडी क ू प मं हमं घटनाओं का बोध करन वाल राणी क ू प मं रचा ह -- मानों समय अतीत स भ वषय की ओर र वा हत होन वाला पदाथर हो -- अतः व हमं भ वषय क बार मं सू चत नही करत और न ही हमारी स्मृ त मं इस समबनध मं कोइ जानकारी भरत हं। भ वषय हमारी स्मृ त मं नही ह परनतु इवर की अननत स्मृ त मं मनुषय क सभी अतीत और भ वषय प रव्यापत हं। यह मानव जीवन को इस रकार दखन क समान ह मानों एक चल चर की तरह उस समपूणता क साथ च रत और पूरा कर दया गया हो। य द कोइ फल्म की रील को आग नहीं बढा सक तो वह अपन जीवन को एक क बाद एक गुजरत हुए र म क ू प मं ही दख सकता ह। वह इस र मत वचार मं पल रहा होता ह क जो र म वह अभीतक नहीं दख पाया ह, वह भ वषय का हस्सा ह।

दु नया का इ तहास भी एक सापेष अवधारणा है

य सारी सचचाइयां इ तहास और साम जक जीवन पर भी पर भी च रताथर होती हं। दु नया क समाजों और उसक इ तहास क बार मं भी हम समय और स्थान की सी मत अवधारणा क दायर मं ही वचार करत हं। इ तहास को हम कालखंडों मं बांटत हं और इसका अवलोकन भी अपनी सापष अवधारणाओं क सनदभर मं करत हं।

जी वत रहन क लए हम अपनी पांच इ न रयों पर आ र त होत हं। हम कवल इ न रय-गमय वषयों का बोध कर पात हं और अपनी इ न रयों की सीमा-रखा लांघ पान मं हम कभी सफल नहीं हो सकत। हम जस समय और स्थान मं जी रह होत हं, उनका बोध भी इसी तरीक स होता ह। य द इन पांच ज्ञान न रयों क ज रय हमारा म स्तषक कसी वस्तु को दख-समझ नहीं पाता तो हम कह दत हं क वह वस्तु "गायब" हो गइ ह। इसी अनुसार, हमारी स्मृ तयों मं सहजी हुइ तमाम घटनाएं, बमब और अनुभू तयां अभी भी हमार लए वयमान होती हं, या यूं

कहं क व हमार लए जीवत होती हं जबक जो बातं भुला दी गइ हं उनका कोइ अस्तितव ही नही होता। यद इस दूसर ढंग स कहं तो ऐसी वस्तुएं या घटनाएं जो अब हमार जहन मं नहीं हं, हमार लए बीती बातं हो जाती हं। सीध तौर पर कहा जाए तो व "मर" चुकी हं, उनका कोइ अस्तितव ही नहीं ह।

कनतु यह कवल मनुषय की सचचाइ ह कयोक कवल मनुषय क पास ही सीमत स्मृत ह। दूसरी ओर, इवर की स्मृत हर वस्तु स ऊपर और सवरठ ह। वह असीम और अननत ह। परनतु यहां पर एक बात का उल्लख करना लाजमी ह। "इ वर की स्मृत" - इस शब का रयोग यहां कवल स्पटीकरण क उदशय स कया गयाह। बशक, यह संभव नहीं ह क इवर की स्मृत और मानवीय स्मृत क बीच कोइ तुलना या समूपता स्थापत की जा सक। नस्संदह, इवर वह ह जसन शूनय स हर पदाथर की रचना की ह और जो हर कसी क यथाथर को जानता ह -- अंतम लखा-जोखा तक।

चूंक इवर की स्मृत अननत ह अत: उसमं नहत कुछ भी कभी नट होनवाला नही ह। दूसर शबों मं, इवर वारा रचत कोइ भी राणी कभी ओझल नहीं होता। कोइ भी फूल नहीं मुझाता, जल की कोइ घूंट समापत नहीं होती, कसी भी काल का अंत नहीं होता और और न ही आहार पूणस: वनट होत हं। धूल क एक बादल क ूप मं अपन रथम आकार मं यह रमांड इवर की दृट क दायर मं ह और इतहास क रतयक पल उसकी नजर मं वस ही वयमान हं जसक व कभी थ। स टोनहंज क पतथर रख जा रह हं, मर क परामडों का नमाण हो रहा ह, सुमर क लोग तारों को नरख रह हं, नएंडर क जनसमूह अपनी रोजी-रोटी कमा रह हं, लॅसकोक्स की गुफाओं क भत-चर पंट कए जा रह हं, काटल यूक मं लोग रह रह हं और ववयुध का बगुल बज रहा ह। ठीक इसी तरह आज स हजारों साल बाद वकसत होन वाल समाज भी इवर की नजर मं उसी जीवनतता स मौजूद हं मानों व अपनी सभ्यता क नमाण कर रह हों और अपन जीन क संरजाम जुटा रह हों।

जस षण कसी राणी या कसी घटना का जनम होता ह उसी षण उसकी अननतता भी आरंभ हो जाती ह। उदाहरण क लए, जब एक फूल का सृजन होता ह तो वस्तुतः मुझाना और खतम हो जाना उसकी नयत नहीं होती। महज इस सचचाइ स क अब वह फूल कसी की संवदना का अंश नहीं ह और कसी क मनो-मस्तषक स उसकी स्मृत गायब हो चुकी ह, यह मतलब नहीं नकाला जा सकता क फूल मर चुका ह, ओझल हो चुका ह। महतवपूणर बात यह ह क इवर की दृट मं उसकी अवस्थत कया ह। इसक अलावा, इस अस्तितव की तमाम दशाएं -- उसक सृजन क समय स ही -- उसकी जनदगी और मौत क तमाम पलों क साथ-साथ, इवर की स्मृत मं वयमान हं।

नठापूणर वचार

यह सारा ञान मानव जीवन मं अतयंत महतवपूणर ह। और इसमं कोइ सनदह नहीं क यह न तो कोइ फलसफा ह, न कोइ स थापत वचारधारा, बल्क यह ऐस वञानक नषकषो का परणाम ह जनस इनकार कर पाना मुमकन नहीं। बहुत संभव ह क बहुतर पाठक समय-शूनयता और समय की वास्तवक रकृत जस इन तथयों पर अपन जीवन मं बल्कुल पहली बार वचार कर रह हों।

परनतु एक बात का सदा धयान रखा जाना चाहए। कुरान मं इवर न रकट कया ह क "केवल वे जो सचची नठा से इवर की ओर उनमुख होते है" (सूरा काफ: 8), वाकइ सावधान होत हं। दूसर शबों मं, व लोग जो सचमुच इवर का मागरदशरन चाहत हं और उसक अननत सामथर्य और उसकी महानता को समझन क लए रवृत होत हं, व ही इन व्याखयाओं को समझन क रत सचट होंग और इन यथाथो का पूणर बोध पान मं समथर हो सकंग।

कोइ व्यत अपन पूर जीवन-काल भर भौतकवाद स रभावत रह सकता ह। इस रभाव क कारण, संभव ह क वह खुल दमाग स इन तथयों पर वचार कर पान का अवसर न पा सक। परनतु इसका यह मतलब नहीं क वह ताउर एक रमत जीवन जीता रह। जो कोइ भी सतय का दशरन करन वाला ह वह रमत रहन का दुरारह नही पालगा बल्क वह अपन अंत:करण स आती नतक आवाज को सुनगा और उसका अनुपालन करगा। इवर न कुरान मं कहा ह क रतयक व्यत को चाहए क वह ऐसा इनसान बनन स परहज कर जो अपन अंत:करण मं सतय का आभास पाकर भी उसस दूर भाग नकलता ह।

और उनहोंने धृटतापूवरक तथा गलत ढंग से उनहें नकार दया, हालांक वे उनके बारे में आवस्त थे। देखो, यही है रटजनों की आखरी नयत। (सूरत-अन-नमल: 14)

वे लोग जो सतय को देखते और मानते है, अल्लाह चाहेंगे तो वे इस दुनया और परलोक में मुत को रापत करेंगे:
वह जो सतय का संवाहक है और वह जो इसे मानता है -- वे ही है वे लोग जो बुराइयों से बचते है। (सूरत-अज -जुमार: 33)

484
बीच मं : एक गहर शीशानुमा चटान - ऑबसीडयन - स बना यह औजार 10,000 वषर इ.पू. का ह। महज एक पतथर स ठोक-पीट कर ऑबसीडयन को ऐसा आकार द पाना असंभव ही ह।

ऊपर : चममच यह दशा त हं क उस समय क लोग भी "टबुल मनसर" स सुप र चत थ। इसक अलावा यह इस बात का भी रमाण ह क व लोग कोइ आ दम जीवन नहीं जी रह थ, जसा क वकासवा दयों का दावा रहा ह।

नीच : 40,000 साल पुरानी यह बांसुरी इस बात का पुखता सबूत ह क आ दम म सतषक वाल बनदर-मानवों का कभी कोइ अ सततव था ही नहीं।

485
ऊपर : पतथर पर की गइ यह कढाइ 11,000 साल पुरानी ह जब क, वकासवा दयों क नज रय स, उस समय कवल पतथर क बन कचच औजार ही रयोग मं थ। परनतु मार एक पतथर को दूसर पतथर पर घसकर ऐसी कृ त नहीं बनाइ जा सकती। वकासवादी पतथर पर इतनी प रपूणता क साथ उकरी गइ इन आकृ तयों क बार मं कोइ तकसंगत वयाखया नहीं द सकत। ऐसा लगता ह क इन तथा ऐसी ही अनय कृ तयों का सृजन लौह और इसपात का उपयोग करन वाल बु धमान मानवों न कया हो।

नीच : 550,000 साल पुरानी, पतथर स बनी इस हथ-कुलहाडी को इतनी बारीकी स काटन और आकार दन क लए और अध क कठोर धातुओं, जस लोहा या इसपात, का रयोग जू र कया गया होगा।

486
कोइ पाषाण-युग था ही नही

वकासवा दयों न जस कालखंड की तुचछता उस "पाषाण-युग" का नाम दकर सध करना चाहा ह, उस समय लोग इव र की आराधना कया करत थ, उन दवय संदशवाहकों क उपदशों को सुना करत थ जनहं उनक पास भजा गया था, भवन- नमा ण मं नरत थ, अपन रसोइघरों म भोजन पका रह थ, प रवार क साथ वाता लाप मं तललीन थ, पडो सयों क घर आया-जाया करत थ, द ज यों स अपन कपड सलवात थ, च कतसक उनकी दखभाल करत थ, उनकी संगीत मं ु च थी और व प नटंग भी करत थ, मू तयां बनात थ और -- संष प मं कहं तो -- एक समपूणर सामानय जीवन जी रह थ। जसा क पुराता तवक खोजों स जा हर होता ह, इ तहास की पूरी समयाव ध मं तकनीक और सं चत ञान मं प रवतन जू र होत आए हं परनतु मनुषय सदा मनुषय की तरह ही रहा ह।

पतथरों और सी पयों स बना यह उतर-नवपाषाणकालीन नकलस इस सतय को उघा टत करता ह क उस समय क लोगों की कलातमकता और अ भु च ही उननत नहीं थी ब लक व ऐसी आकषरक वसतुओं का सृजन करन क लए आवशयक तकनीक स भी सुस जजत थ।

बरतन, टबुल का एक नमूना और एक चममच -- जो क 7,000 स लकर 11,000 इ.पू. क बीच क हं -- उस समय क लोगों क जीवन-सतर क बार मं महतवपूणर जानकारी दत हं। वकासवा दयों क अनुसार, उस युग क लोगों न अभी हाल ही मं सथाप त जीवन-शली अपनाइ थी और धीर-धीर सभय हो रह थ। परनतु य पदाथर दशा त हं क इन लोगों की संसकृ तयों मं शायद ही कोइ कमी थी और व पूणत: सुसभय जीवन जी रह थ। जसी हमारी आज की जनदगी ह, व भी मज का उपयोग करत थ, प लट मं खात थ, चममच और छुरी-कांटों का इसतमाल करत थ, महमानों को आमं र त करक उनहं अलपाहार दत थ और इस रकार, संष प मं, नय मत जीवन जी रह थ। जब कुल मलाकर इन तथयों की परीष ा की जाती ह तो हम पात हं क अपन कलातमक बोध, च कतसकीय ञान, तकनीकी साधनों और रोजमरा क जीवन क साथ नवपाषाणकाल क लोग पूणत: मानवीय जीवन जी रह थ, उनहीं लोगों की तरह जो उनस पहल थ और जो बाद मं आए।

487
12,000 साल पुरान बटन
10,000 इ.पू. मं रयुत होन वाल य ह डयों क बन बटन यह दशा त हं क उस समय क लोगों क पास कस जा सकन वाल वसर थ। जो समाज बटन का उपयोग जानता हो वह सलाइ, वसर- नमा ण और बुनाइ जस कामों स भी प र चत रहा होगा।

9,000 स 10,00 वषर पुरान सुए और टकुए
7,000 स 8,000 वषर इससी पूवर क य सुए और टकुए, ततकालीन मानव की जीवन-संसकृ त क बार मं महतवपूणर सबूत पश करत हं। यह साफ ह क सुए और टकुए का इसतमाल करन वाल लोग पूरी तरह मानवीय जीवन जी रह होंग, न क जानवरों की तरह, जसा क वकासवा दयों का मत ह।

12,000 साल पुरान मनक
पुराततव वदों की राय मं, लगभग 10,000 इ.पू. क य पतथर मनकों क ू प मं इसतमाल कए जात थ। ऐस कठोर

पतथरों मं इतनी नपुणता स कए गए एक समान छर खास तौर पर धयान दए जान योगय हं कयों क उनमं छद करन क लए इस्पात या लोह स बन औजार जू र इस्तमाल कया गया होगा।

12,000 साल पुराना तामब का टकुआ
लगभग 10,000 इस्वी पूवर वषर पुराना यह तामब का टकुआ इस बात का रमाण ह क उस समय लोग धातुओं क बार मं जानत थ और उनका खनन भी कया जाता था तथा उनहं आकार भी दया जाता था। कचचा तामबा, जो क ठठ ूप मं सफ टक या पाउडर की शकल मं पाया जाता ह, पुरान और कठोर पतथरों मं बारीक सलाइ जस ूपाकार मं पाया जाता ह। कोइ भी समाज जो क तामब का टकुआ बनाया करता था, जू र ही उसन कचच तामब की पहचान कर ली थी, पतथरों क बीच स उस नकालना जान गया था और ऐसा करन क लए उसक पास तकनीकी साधन भी थ। इसस स्पट ह क व हाल क वगत दौर मं आदम नहीं थ, जसा क वकासवा दयों की राय ह।

चर मं दशा इ गइ बांसु रयां औसतन 15,000 साल पुरानी हं। साफ ह क द सयों-हजारों साल पूवर रहन वाल लोग संगीत-संस्कृ त की अ भु च स समपनन थ।

488
"पॉ लशड पतथर" का र म

पुराता तवक अवशषों मं सबस जयादा चमतकृत कर दन वाली पाषाण- न मस कृ त आज भी मौजूद ह। पतथर को ऐसा ज टल और सु नय मत आकार दन क लए आम तौर पर इस्पात क श त शाली उपकरणों की जू रत होती ह। एक पतथर को दूसर पतथर स कवल घस-रगड कर कोइ ऐसी बारीक आकृ तयां और डजाइन नहीं बना सकता। रनाइट जस पतथरों को सही-सही आकार मं काटन और उनपर आकृ तयां बनान क लए तकनीकी अधोसंरचना की जू रत होती ह।

पतथर क कुछ उपकरण तो अभी भी तज और चमकील दखत हं जो क समयक तरीक स काटन और आकार दन क कारण ही संभव हुआ ह। वकासवादी वज्ञा नकों वारा यह वणर्न करना क व "पॉ लशड पाषाण युग" की कृ तयां हं, सरासर अव ज्ञा नक दावा ह। हजारों साल तक पॉ लश की चमक बरकरार रहना असंभव ही ह। रस्तुत पतथरों की चमक का एकमार कारण उनका बहुत ही बारीकी स काटा जाना ह न क यह क उनहं पॉ लश कया गया, जस क दावा कया जाता ह। चमक पत थर क अनदर स आ रही ह।

चर मं जो रसलट दशा ए गए हं, उनमं बाइं ओर का रसलट संगमरमर स बना ह और दाइं ओर का बॅसाल्ट स। व 8500 स लकर 9000 इ.पू. क हं. वकासवा दयों का दावा ह क उस समय कवल पतथरों स बन औजार रयोग मं लाए जात थ। परनतु बॅसाल्ट और संगमरमर बहुत ही जयादा कठोर पदाथर होत हं। उनहं पलटन तथा गोल आकृ तयां दन क लए अवशय ही इस्पात क ब्लड और उपकरण काम मं लाए गए होंग कयों क इस्पात क उपकरणों का रयोग कए बना उनहं काटना और आकार दना असंभव ही ह। य द आप कसी को पतथर का एक टुकडा द दं और उसस कहं क अब वह उसस बॅसाल्ट क एक टुकड को वस ही रसलट मं बदल द जसा क चर मं दखाया गया ह तो वह वय त भला कतना सफल होगा? यह संभव नहीं ह क पतथर क एक टुकड को दूसर पतथर पर घस-रगड कर रसलट बना लया जाए। साथ ही, इन कलाकृ तयों स यह स्पट ूप स च रत होता ह क उनहं बनान वाल इनसान सौंदयरबोध स समपनन सुसभ्य लोग थ।

इन चरों मं ऑबसी डयन, हडी, अंकुश तथा पतथर स बन अनय पदाथो स न मस औजार दशा ए गए हं। स्पट ह क कसी कचची सामरी को पतथर पर रगड क ऐस सुव्यव स्थत आकार नहीं ढाल जा सकत। कचच ढंग स फूंक-फांक करन पर य बोन टूट जाएंग और उनहं मनचाहा आकार नहीं दया जा सकगा। इसी तरह, यह भी स्पट ह क रनाइट और बॅसाल ट जस कठोरतम पतथरों स बन औजारों स भी तीषण धा रयां और नुकील टप संभव नहीं होंग। इन पतथरों को सु नय मत आकार मं काटा गया ह, जस क फलों क कतर बनाए गए हों। उनकी चमक उनहं पॉ लश कए जान स उतपनन नहीं हुइ ह, जसा क वकासवा दयों का मत ह, वरन उनहं इतनी बारीकी स आकार दए जान क कारण। जन लोगों न इन वस्तुओं की रचना की उनक पास अवशय ही लौह या इस्पात क बन औजार रह होंग जनस उन पदाथो को उनहोंन मनचाहा आकार दया होगा। कठोर पतथरों क टुकडों को इस्पात जस कठोरतर पदाथर का उपयोग करक ही काटा जा सकता ह।

489
आप पतथर स पतथर पर कढाइ नहीं कर सकत

1. लगभग 10,000 इस्वी पूवर की पाषाण परतं
2. 11,000 इ.पू. वषर पुरान कूटन वाल औजार
3. लावा शीशा (ऑबसी डयन) स बना लगभग 10,000 इ.पू. वषर पुराना औजार
4. 11,000 इस्वी पूवर न मस पतथर की वस्तुएं
5. कचच तांब (मॅलकाइट) की परतों क स्पशर क साथ 9,000 स लकर 10,000 इ.पू. वषर पुरानी पाषाण कलाकृ तयां
6. सॉकटनुमा तथा कील क आकार स मलती-जुलती 10,000 इ.पू. की एक पाषाण अंत:रचना

7. 10,000 इस्वी वषर पूवर का एक हथौडा

पतथर क बन य औजार औसतन 10,000 स लकर 11,000 इस्वी पूवर क हं। अब आप कल्पना कीजए क एक पतथर को दूसर पतथर पर घस-घास कर आप इनमं स कोइ भी एक वस्तु बनाना चाहत हं, जसक वकासवा दयों की राय मं उनहं उस वत बनाया गया था। जसा क चर 4 मं दशा या गया ह, अचछी तरह सुराख बनान की को शश कर ली जए। अपन हाथ मं रख पतथर को आप चाह जतनी बार रगड लं, ऐसा प रपूणर और बारीक छर बनान मं आप हर गज कामयाब नही होंग। ऐसा करन क लए आपको र ल मशीन की ज़ रत होगी।

492
अंध ववासपूणर वचारों क साथ-साथ इ तहास क हर युग मं सचचा धमर भी मौजूद रहा ह। हर युग मं सचच धमा नुया ययों न इवरीय आज्ञा क अनुपालन मं अपन आधया तमक कतवयों का पालन कया ह।

493
आज भी अंध ववास स भर मू तपूजक लोग हं, जस क व अतीत क युगों मं थ।

सोलोमन ऐंड द कवीन शबा -- कृ त: र क र कन वतीय द यंगर
मयुज द बुकस - आटस, कवंपर, र ांस

494
लाखों साल पुरान टुकड जनक बार मं वकासवादी चुप हं

वकासवाद क सधानत क अनुसार, सभी जी वत रा णयों का वकास -- बॅकटी रया स लकर मानव जा त तक -- खास चरणों स गुजरन क फलस्व प हुआ ह और इस काल्प नक र ंखला क पूर होन मं लाखों साल का समय लगा ह। इस प रदृशय मं, मनुषय अं तम सु वक सत राणी ह और उसन वगत 20,000 सालों मं अपना वकास-चर पूरा कया ह। तथा प, वज्ञा नक तथयों और जीवाशमों क आकलन स ऐसा एक भी रमाण नही मलता क ऐसा वकास कभी वाकइ घ टत हुआ था। सचचाइ तो यह ह क व हमं यह बतात हं क ऐसा हो ही नही सकता।

अनय रकार क तथयों मं, लाखों वषर पूवर मनुषय वारा रयोग मं लाए गए कुछ औजार-उपकरण तथा र ंगार रसाधन की वस्तुएं शा मल हं। डा वनवादी अपनी काल्प नक वकास सा रणी मं ऐस कसी भी मानव रा णी का अ स्ततव बतान मं स वयं को अषम मानत हं जो क आज स 50 या 500 लाख वषर पूवर भी रहा करत होंग -- उस समय जसक बार मं उनकी राय ह क रायलोबाइटस क सवाय धरती पर और कोइ भी रा णी नहीं रहा करता था। वाकइ! ऐसा कर पाना उनक लए कठ न ही होगा। इव र न एक जरा सी आज्ञा स मानव को अ स्ततव दया - "भव!" और इसी तरह उसन अनय सभी जी वत रा णयों की रचना की। अत: आज स 500 लाख वषर पूवर रहन वाल लोगों का अवशष खोजना हमार लए उतना ही संभाव य ह जतना क उनका जो आज स 100 साल पहल रहा करत थ। इव र, जसन शूनय स हर वस्तु की रचना की, वह नसंदह इ तहास की जस कसी अव ध मं जस कसी रा णी की रचना करना चाह, कर सकता ह। यह इव र क लए वस्तुतः बहुत ही सहज बात ह कयों क उसकी श त और सामथय अपार ह। परनतु डा वनवादी इस सतय को समझन स चूक जात हं। यही कारण ह क उनक पास सृ ट-रचना क बार मं न तो सार रमाण हं, न समस्त वयाखयाएं। उन प रू शयों को दुहरान क सवा उनक पास और कोइ उपय नहीं ह जनहं वज्ञा नक तथयों मं झुठला दया गया ह। परनतु हर बीतत दन क साथ, उतखननों स रा पत हो रह रमाणों स वकासवादी सधानत की ध जजयां उडती जा रही हं।

यह धातु का गोला द षण अ र का मं एक परत स रा पत कए गए सकडों गोलों मं स एक ह और अनुमान ह क यह लाखों साल पुराना ह। सावधानीपूवक रची गइं इसकी लहराकृ तयां कसी रा कृ तक घटना का प रणाम नही हो सकती। यह आ वषकार हमं बतलाता ह क धातु का रयोग अतयंत आरं भक काल स ही होता आ रहा ह और यह क लाखों वषो स मनुषय क पास धातु मं लहराकृ तयां बनान की तकनीक मौजूद रही ह।

१९१२ मं, थॉमस (ऑकलाहोमा) क नगरपा लकीय वयुत संयंर क दो कमचा रयों न कोयला लोड करत हुए एक आचयजनक वस्तु खोज नकाला। उनहोंन कोयल क एक चौरस आकार का टुकडा पाया जो इतना बडा था क उसका कोइ उपयोग ही नही हो सकता था। इस लए एक कमचारी न उस तोड डाला। ऐसा करत ही, उसक अनदर उस लोह का एक पार (बरतन) दखा। जब उस हटाया गया तो कोयल क एक टुकड मं उस पार की ू प -रखा दखन को मली। कोयल का परीष ण करन क बाद, बहुत स वशषज्ञों न कहा क यह पार या आधान 300 स लकर 325 म लयन वषर पुराना हो सकता ह। यह आ वषकार वकासवा दयों क पल्ल नहीं पड सकता जनका मानना ह क लोह का रयोग कोइ 1,200 इसा पूवर मं शु हुआ।

'साइं ट फक अम रकन' प रका क 5 जून 1852 क अंक मं एक रपोटर रका शत हुआ जो क लगभग 100,000

वषर पुरान धातु क बन पार क अवशष रापत होन क समबनध मं था। घंट क आकार का यह पार जस्त या कसी यौगक धातु क रंग का लग रहा था और इसमं चांदी का भी अचछा-खासा अंश मलाया गया था। इसकी सतह पर पुषप-गुचछों, लताओं और मालाओं की बहुत ही बारीक आकृतयां उकरी गइ थीं।

अब .. वकासवादी जनका दावा ह क अतयंत आरंभक काल मं धातु का रयोग ही नही होता था, इस आवषकार क संबनध मं भला कया बता सकत हं? साफ ह क जन लोगों न इस कलाकृत का सृजन कया था, उनक पास एक उचचकोटक संसकृत थी -- एक ऐसी संस्कृत जस यौगक धातु बनान और उनपर नककाशी करन मं महारत हासल था।

495
यह जूत का तला 213 मलयन वषर पुरान एक चटान मं जीवाशम बन चुक ूप मं मला था। लाखों-लाख साल पहल, लोग जूत भी पहनत थ और इसमं कोइ सनदह नहीं क उनक पास वस्र भी थ। व खान-पान की एक अचछी-खासी संस्कृत का लुतफ उठा रह थ और स्वस्थ सामाजक समबनधों का नवाह कर रह थ। इस जीवाशम का एकमार ज्ञात फोटोराफ 1922 मं नयूयॉकर क एक अखबार मं छपा था। ऐस तमाम आवषकार जनस मानव इतहास क 'वकास' क दाव का खंडन होता ह, वकासवादयों न या तो उनहं सबस छुपाया या फर उनकी उपषा की।

इस चर मं दखाए गए पस्टल और मोटार 1877 मं टबुल पवस क नीच की एक राचीन नदी-भूम स खोज नकाल गए थ। यह नदी-भूम कम स कम 330 लाख वषर पुरानी ह और यह साबत कर दती ह क मनुषय सदा मनुषय की तरह ही रहा ह।

30 लाख साल पुरान फ्लंट पतथर क इस टुकड पर मानव मुखाकृत स मलती-जुलती एक आकृत अंकत की गइ ह। फ्लंट पर ऐस सुव्यवस्थत छर बनाना बडा ही कठन ह और इसक लए धातु क बन खास उपकरणों की जूरत होती ह। वकासवादी जस रकार की अतयंत आदम अवस्था का जर करत हं उसमं तो ऐसा कया जा सकना नामुमकन ही लगता ह।

संतों क साथ मॅडोना, कृत: गयॉवनी बलनी, वनस, 1505

499
21वी सदी -- कोलमबया

21वी सदी मं भी बहुत स समाज अंधववासों मं पल रह हं। व ऐस झूठ दवी-दवताओं की उपासना करत हं जो उनका न तो कुछ बना सकत हं न बगाड सकत हं। यहां हम दख रह हं क 'आहुआको' इंडयनस का मुखया उनपर हुए एक आरमण क बाद एक कमकांड मं लगा हुआ ह। मुखया कहता ह क व पवस को रसनन करन क लए 'रकृत की पुराचतना' का आवान करत हं। (स्टीफन फरी, "कीपसर ऑफ द वल्ड", नशनल जयोराफक, अकटूबर 2005)

21वी सदी -- मयामी, अमरका

दुनया क एक हस्स मं लोग आदम जीवन जी रह होत हं जबक कसी दूसर महावीप मं लोग आरामदह गगनचुमबी इमारतों मं .... और व हवाइ जहाजों और सुखद ूज जलपोतों मं सफर कर रह होत हं। वकासवादयों क दावों क वपरीत, एक ही समय मं उननत और आदम दोनों ही तरह क समाज सदा वयमान रह हं, ठीक वस ही जस क व आज हं।

500
जहां कहीं भी एक खास जन-समुदाय रहा करता ह, वहां का वातावरण इस बात को संकतत नहीं करता क उनक दमाग उननत हं या आदम, जसाक कहा गया ह। रतयक कालखंड मं लोग अलग-अलग परस्थतयों मं रह हं और उनकी अलग-अलग आवशयकताएं भी रही हं। उदाहरण क लए, वास्तुशल्प क बार मं राचीन मरवासयों का बोध हमस भनन रहा ह, परनतु इसका यह मतलब नहीं ह क हमारी संस्कृत अनवायत: उनस जयादा रठ ह। गगनचुमबी इमारतं २०वी सदी का रतीक रही हं। राचीन इजपट (मर) मं परामड और स्फंकस ही ऐस रतीक थ।

बहुत स वकासवादी अपन दावों की पुट ऐस ही परदृशयों क माधयम स करना चाहत हं, भल ही उनक दावों की पुट क लए कसी अनय रमाण का सहारा मल या ना मल। तथाप, कसी भी नए तथय को जब पूवारहरहत होकर वलषत कया जाए, तो कुछ तथय भी उभरकर सामन आत हं। उनमं स एक यह ह: जबस मनुषय अस्ततव मं आया ह, वह मनुषय ही रहा ह। बुध-ववक, कलातमक षमता जस गुण इतहास क सभी कालखंडों मं एक समान रह हं। अतीत मं रहन वाल लोग कोइ आदम लोग नहीं थ और न ही व आध मानव,

आध पशु जस थ, जसा क वकासवादी हमस मनबाना चाहत हं। व लोग वचारशील लोग थ, बोलत-जागत मानव -- ठीक हमारी तरह -- जो क कला का सृजन करत थ और जनहोंन संसकृत और न तकता की संरचनाएं बनाइं। जसा क हम शीर ही जान जाएंग, पुराता तवक एवं भू-ज वक खोजों स यह बात अचछी तरह और न ववाद ूप स सध हो चुकी ह।

502
वषर 2000

वकासवादी पूवा रह वाल पुरातततव वद जोर दकर कहत हं क द षणी रांस की पहा डयों मं सथत टक ड ऑडोबटर की जंगली भंसों की र तमाएं -- व र तमाएं जो सटचयू ऑफ रॉ डन जसी आधु नक कलाकृ तयों स कम कलातमक मूलय की नहीं हं -- तथाक थत आ दम सभयता क मानवों वारा बनाइ गइ थीं परनतु इन कलाओं मं न हत तकनीक और सौनदयरदशरन तो यही झलकात हं क उनहं जस कसी न भी बनाया था वह शारी रक या मान सक ूप स वतरमान युग क मानवों स भन न नहीं था। ब लक सच कहा जाए तो कला-बोध समपननता मं वह र ठ स भी र ठतर था।

वषर 8000

मान लं क य द रॉ डन का "चनतक" (द थंकर) आज स 6,000 साल बाद खोज नकाला जाए और लोग उसी पूवा रह क साथ उसकी वयाखया करन मं लग जाएं जस क आज क कुछ वञा नक अतीत की वयाखया करन मं जुट हं तो व यही सोचंग क २०वीं सदी क लोग एक मननशील वय त की आराधना कया करत थ, और यह क अभीतक उनहं समाज मं रहना नहीं आया था। कया इसस यह नहीं लगगा क कस व सतय स कोसों दूर हं?

503
वास्त वक इ तहास पर पदा

इ तहास क बार मं हम जो अ धकांश बातं जानत हं व हमन कताबों स सीखी हं। पढनवाला शायद ही कभी ऐसी कताबों की व षय-वसतुओं पर सनदह करता ह और र थम दृ ट मं ही उन तथयों को मान लता ह। परनतु खास तौर पर जब मानव इ तहास की बात आती ह तो रायः इन कताबों मं एक सधानत का रसतु तकरण ऐसी अवधारणा क तहत कया जाता ह जसकी वधता जीव वञान, आ णवक जीव वञान, भू-ज वकी, आनुवं शकी, आनुवां शक जीवशासर या मानव वञान मं स कसी मं भी नहीं मानी गइ ह। वकासवाद क सधानत क पतन क साथ ही, इसपर आधा रत हमारा इ तहास-बोध भी खा रज हो चुका ह।

इ तहासकार एडवाडर ए. र ीमन इस बात पर चचा करत हं क हमारा ऐ तहा सक ञान "तथयों" को कस झलकाता ह। कयों क हर ऐ तहा सक ज ञासा मं हम उन तथयों स दो-चार हो रह होत हं जो सवयं ही मानव इचछा-श त और मानवीय लोभ क नयंर ण मं आत हं और जनक रमाण मनुषय को सूचना रदान करन वालों की वव सनीयता पर नभर करत हं, जो या तो जान-बूझकर धोखा द सकत हं या बना सोच-समझ दग र मत कर सकत हं। आदमी झूठ बोल सकता ह, उसस गलती भी हो सकती ह।

तो हम भला कस आव सत हो सकत हं क हमं रापत इ तहास सचचा और वासत वक ह?

सवरथम तो हमं यह सु न चत करना चा हए क इ तहासकारों और पुरातततव वदों वारा हमार सामन रख गए तथय उदशयगत दृ ट स पकक हं। जसा क अ धकांश सूषम अवधारणाओं क साथ होता ह, इ तहास की वयाखया का अथर भनन-भ नन लोगों क लए भनन- भनन हो सकता ह। कसी घटना क वृतानत मं उस रसतुत करन वाल वय त क दृ टकोण क अनुसार अनतर आ सकता ह। और फर घटनाओं की वयाखया अकसर बहुत भनन हो जाया करती ह जब उस कनहीं तीसर लोगों वारा व णरत कया जाता ह जनहोंन सवयं उस घ टत होत नहीं दखा।

"इ तहास" की प रभाषा वगत घटनाओं क र मागत संकलन क ूप मं दी जाती ह। इन घटनाओं का अथर और महतव इस बात पर नभर करता ह क इ तहासकार न उनहं कस रसतुत कया ह। उदाहरण क लए, कसी युध का इ तहास लखक की इस वचारधारा स र भा वत हो सकता ह क वजयी पष सही था या गलत। य द वह कसी भी एक पष क र त सहानुभू त रखता हो तो वह उस ही "आजादी का च मपयन" करार द दगा, भल ही उसन दूसर क भू-भाग पर आर मण कया हो और असंखय ूरताओं का तांडव मचाया हो।7 उदाहरण क लए, य द आप एक-दूसर क र त शु ता-भाव रखन वाल दो दशों क इ तहास रंथ दखं तो आप पाएंग क एक ही घटना की दोनों न बलकुल अलग-अलग ढंग स वयाखया की ह।

वकासवादी इ तहासकारों और वञा नकों न बलकुल ऐसा ही कया ह। ठोस सबूतों क आधार क बना ही व मानव -जीवन क तथाक थत वकासवादी इ तहास को एक पकक यथाथर क ूप मं पश करत हं। उन सशत रमाणों की व उपषा कर दत हं जनस उनक सधानत की ध जजयां उडती हों, अपन पास उपलबध रमाणों को पूवा रह क साथ वल षत करत हं और इस रकार यह सधानत पश करत हं जस कुछ वञा नकों न तो अपनी वचारधारा, अपना नयम- वधान ही बना लया ह।

य द दूसर ववयुध की क्याखया करन वाला इ तहासकार 'नशनल सोश लस्ट' वचारधारा का ह तो महज नीच दाइं ओर दए गए चर क आधार पर ही वह हटलर को एक शानदार नता क ू प मं च रत कर सकता ह। जब क दूसरी ओर नीच बाएं द या गया बुखनवाल्ड कंसंर शन कंप का फोटो हटलर वारा शु ू कराए गए जघनय नरसंहारों मं स एक का उदाहरण मार ह।

504
द सयों हजारों साल की समयाव ध में आ खर क्या बचेगा?

मानव जा त क इ तहास की तुलना मं नमा ण, उयोग, तकनीकी उतपादों तथा रोजमरा क जीवन मं रयुत होन वाली साम रयों की जीवन-अव ध छोटी होती ह। अगर द सयों-हजारों साल पहल लोग लकडी क बन प रषकृत भवनों मं रहा करत होंग तो यह सहज ही समझा जा सकता ह क आज उनक नाममार क ही अवशष बच होंग। कल्पना की जए क हमारी सभ्यता कसी भयावह संकट मं नट हो गइ हो तो सकडों-हजारों साल बाद इसक कतन अवशष बच होंग? य द कुछ ह डयों या न मरतयों क धवंसावशष क आधार पर भ वषय क लोग हमं आ दम मानव मान लं तो यह क्याखया कतनी समीचीन होगी?

द सयों-हजारों साल की समयाव ध मं आज क भवनों क जो अवशष बचंग व होंग पतथर क कुछ चौखट। लकडी स बन पदा र्थ और लोह वनट हो जाएंग। उदाहरण क लए, चरागन पलस क खूबसूरत वॉल प नटंग स, इसक सुनदर फनी चर भ वषय मं कवल पतथर बन चुक कुछ बड टुकडों क ू प मं दखंग और महल की शायद कुछ आधार-भ तयां बच जाएं। अब य द इस आधार पर यह कहा जाए क हमार समय क लोग तो सुव्यव स्थत जीवन -शली भी स्था पत नहीं कर सक थ और एक क ऊपर एक पतथर डाल कर आदम काल क घरों मं रहा करत थ तो यह अथर नकालना सरासर गलत होगा।

व अवशष जो आजतक अपना वजूद बचा पाए हं, कभी व सुनदर, आलीशान भवन रह होंग, ठीक चरागन पलस की तरह। यद कोइ इन धवंसावशषों क ऊपर फनी चर रख द, उनहं पदो द रयों और लमपों स सजा द तो एकबार फर उनकी ग रमा जगमगा उठगी।

कुरान मं यह संकत दया गया ह क वगत समाज कला, वास्तु शल्प, संस्कृ त और ज्ञान मं बहुत ही बढ-चढ थ। एक आयत मं कहा गया ह क अतीत क मानव समाज बहुत ही उननत थ : "क्या उनहोंन इस धरती का र मण नहीं कया और उनकी नय त नहीं दखी जो उनक पहल आ चुक थ? व ताकत मं उनस कहीं बढ-चढ थ और धरती पर कहीं जयादा गहर नशान छोड गए हं।" (सूरा-का फर : 21)

द सयों-हजारों सालों बाद, आज जो पतथर क बन भवन यहां दख रह हं व उन खंडहरों स भनन नहीं होंग जो काटल यूक क उतखननों स सामन आए हं। राकृ तक दशाओं मं, पहल लक डयां नट हो जाएंगी और फर धातु घस जाएंग। इस तरह पूरी संभावना क साथ जो बच जाएंग व होंग पतथर की भ तयां, चीनी मटी क बरतन और कटो रयां। ऐसा होन पर, भ वषय क पुरातत्व वदों का यह दावा क 2000 इस्वी क आस-पास रहन वाल लोग आ दम जीवन जी रह थ, कतइ सच नहीं होगा। वत्मान समय क वकासवादी स्वयं को इसी दशा मं पात हं।

505
इस्तांबुल का चरागन पलस जला दए जान और इसकी अंतःसजजा को तहस-नहस कर दए जान क बाद। इस अवस्था मं इस महल को दखन वाला कोइ भी क्य त यह अनदाज नहीं लगा सकता क कभी यह कतना शानदार हुआ करता था।

चरागन पलस अपनी पहल वाली दशा मं, सभी साज-सजावट फर स लगा दए जान क बाद।

506
1.5 म लयन वषर पूवर के लोग अपने बडे-बुजुगो की देखभाल कया करते थे

दम नसी (जॉ जर्या) मं 2005 मं खोज नकाल गए एक जीवाशम न एकबार फर यह दखला दया क "मानव इ तहास क व कास" का प रदृशय कसी सचचाइ स मल नहीं खाता। वकासवा दयों क अवज्ञा नक दावों क अनुसार, पहल-पहल क मानव जानवरों की तरह रहा करत थ। उनका न तो कोइ प रवार था, न कोइ सामा जक ताना-बाना। परनतु भू-ज वकी वज्ञा नक ड वड लॉडरकपॅ नज वारा खोज गए कसी बुजुगर्वार की खोपडी क जीवाशम न यह दखलाया क य दाव झूठ थ।

जीवाशम जस बुजुगर्वार का था, उसका कवल एक ही दांत रह गया था। वज्ञा नकों का मत ह क जीवाशम जस क्य त का था वह कवल दंतहीन ही नहीं ब ल्क कइ अनय क्या धयों स भी पी डत था। यह तथय क अनक रोगों क बावजूद वह क्य त बुढाप तक अचछी तरह जी वत रहा, इस बात का महतवपूणर रमाण ह क उसकी

दखभाल की जाती थी और यह क लोग एक-दूसर क कल्याण मं ु च लत थ। लॉडस्कपॅनज कहत हं :

यह स्पट होता ह क वह एक बीमार व्य त था .... हमं लगता ह क यह एक अचछी दलील ह क उस व्य त को ु प क अनय सदस्यों स सहारा मलता था. 8

वकासवा दयों की मानयता ह क मानवों न सामा जक संस्कृ त क व्यवहार उस जीवाशम वाल व्य त क मरन क कम स कम 1.5 म लयन साल बाद सीखा। इस रकार, यहां जस जीवाशम की बात की गइ ह वह वकासवा दयों क दावों को खा रज कर दता ह और यह दखाता ह क लाखों साल पहल क लोग बीमारों क र त दया दखात थ, उनकी दखभाल करत और उनका संरष ण करत थ। यह खोज एकबार फर स यह भी सध करती ह क मनुषय कभी जानवरों की तरह नहीं रहा, बल्क मनुषय सदा मनुषय ही रहा ह।

"डस्कवर" परका न साल भर क महतवपूणर वज्ञा नक आ वषकारों की समीषा करन क र म मं इस खोज को पया प त स्थान दया जसस यह रकट हुआ था क लाखों साल पहल क लोग बीमारों की सवा करत थ और उनक कल्याण मं ु च रखत थ। इस खोज न जस "डड होमो एरकटस* कॉडल हज रंड परंटस" शीषक लख क अंतगत रका शत कया गया था, यह दखला दया क इ तहास क कसी भी कालखंड मं मनुषय कभी भी पशुओं की तरह नहीं रहा ब ल्क वह रहा हमशा मनुषय की तरह।

(*) वकासवादी यह दावा करत हं क मनुषय क क ल्पत 'वकास' क चरण मं 'होमो एरकटस' लंगूर और मानव क बीच एक अंतमा धय मक रजा त थी। परनतु सचचाइ यह ह क वतमान मानव क कंकाल और होमो एरकटस क कंकाल मं कोइ अंतर नहीं ह। उनक कंकाल भी सीध और पूणत: मानव जस ही होत हं।

507
लॅस्कौकस की गुफा मं रापत एक वॉल प नटंग। स्पट ह क यह कसी आ दम मनुषय की रचना नहीं हो सकती जो क अभी-अभी लंगूर स वक सत हुआ था।

508
य द आन वाली पी ढयां वतमान कलाकृ तयों को वकासवा दयों क दृ टकोण स दख सकं तो व हमार समाज क बार मं एक अलग ही नज रया रखंगी। भ वषय क वकासवादी पाब्लो पकासो, सॅल्वाडोर डली या अनय अ त-यथाथवादी कलाकारों की कृ तयों को दखकर संभव ह यह कहं क हमार समय क लोग वकास की आरं भक अवस्था मं थ। परनतु आ खर यह सच स दूर ही तो होगा।

मधय मं: मन वथ अ पाइप, पाब्लो पकासो
गटार, पाब्लो पकासो

बाएं : द फ्ल मंग हॉसर, सॅल्वाडोर डली
दाएं : एकस्प लो डंग क्लॉक, सॅल्वाडोर डली

509
चर कसी कलाकार क अवधारणातमक और दृशय-बोध को दशा त हं। परनतु इन चरों स य नषकषर नकालना क अमुक समय क लोग कया खात-पीत थ, कन अवस्थाओं मं रहत थ और उनक साम जक समबनध कस रकार क थ, और फर यह मानयता बना लना क य कमंट बल्कुल सही हं -- यह तो कोइ वज्ञा नक तरीका नहीं ह। अपन पूवा रह भर वचारों क कारण वकासवादी अतीत क लोगों को हठपूवक आ दम कह बठन की धुन लगाए रहत हं। इस चर (बाएं) मं द शत व्य तयों को ह रंगबोन क वस्र पहनत दखा जा सकता ह। इसस रद शत होता ह क उस समय क लोग बबर नहीं थ और न ही व कोइ अधनंग खानाबदोश थ, जसा क वकासवा दयों की राय ह।

अल्जी रया मं रापत कए गए वॉल प नटंगस जो लगभग 9,000 वषर पुरान हं।
टक ड'ऑडोबटर गुफा मं उकरी हुइ भंसों की आकृ तयां

510
"केव आटर" में द शत उचच को ट की पेंटंग तकनीक

रंच पायरनीज मं नयोकस कव रा गतहा सक काल मं रहन वाल लोगों वारा बनाए गए रभावशाली चरों स भरा हुआ ह। काबन ड टंग पध त स पता चलता ह क उनहं करीब 14,000 साल पहल पूरा कया गया था। नयोकस कव प नटंग स का पता 1906 मं चला था और तब स ही उनकी बडी गहरी छानबीन की गइ ह। इस गुफा का सबस सुस ज्जत हस्सा ह "सलून नॉयर"" नाम स र सध एक अंधर स्थान मं एक ऊंची 'कॅ वटी' (खाली स्थान) स नमस एक साइड चमबर। अपनी पुस्तक "द ऑ र जन ऑफ मॉडनर यूमनस" मं रोजर ल वन न जंगली भंसों, घोडों, ह रणों और आइबकसों क चरों स भर इस हस्स क बार मं यह ट पपणी लखी ह : "पॅनलों मं सुस ज्जत तथा पूवदृ ट और अपन रदशन मं सूझ-बूझ का रभाव झलकात हुए ....." 11

इन चरों क बार मं एक महतवपूणर ततव जसन वज्ञानकों का सवा धक धयान खीचा ह वह ह पनटंग की तकनीक। शोध स यह रकट हुआ ह क राकृतक और स्थानक घटकों को मरत करक कलाकार खास रकार क यौगक रापत करत थ। इसमं कोइ सनदह नही क इसस वचार-शत, योजना बनान और परणाम घटत करन की ऐसी षमता का पता चलता ह जो रारंभावस्था मं रह रह इनसान क बूत स कहीं बाहर था। लवन इस पनटंग तकनीक क बार मं इस रकार वणर्न करत हं:

उचच पूवपाषाणकालीन लोगों वारा पनटंग सामरयों -- वणर्क (पगमंट) तथा खनज वस्तारक -- का सावधानीपूवर्क चयन कया जाता था और खास रकार क मरण बनान क लए 5 स 10 माइरोमीटर तक क घनतव मं उनकी बारीक पसाइ की जाती थी। काल वणर्क, जसीक संभावना जाहर की गइ थी, चाकोल एवं मगनज डाइ ऑकसाइड क मरण थ। परनतु उनकी वास्तवक अभुच वस्तारकों मं थी जनक लए ऐसा लगता ह क चार स्पट नुस्ख थ जस शोधकताओं न 1 स लकर 4 तक की संखया दी ह। वस्तारक वणर्कों क रंग खलान मं सहायक होत हं और जसाक उनक नाम स ही संकतत होता ह, व रंग को पतला कए बना ही पंट को वस्तारत 'लुक' द दत हं। नयोकस मं रयुत होन वाल वस्तारकों क चार नुस्ख थ : टॅल्क, बराइट और पोटासयम फल्डस्पार का मरण, कवल पोटासयम फल्डस्पार तथा बायोटाइट की अत-मारा मं मरत कया गया पोटासयम फल्डस्पार। कलॉटस और उनक सहयोगयों न इनमं स कुछ वस्तारकों क साथ रयोग भी कया और उनहं पूरी तरह रभावी पाया। 12

उचच ूप स वकसत तकनीक इस बात का रमाण ह क अतीत मं ऐसा कोइ राणी नही था जस आदम कहकर वणर्न कया जा सक। जब स मनुषय पहल-पहल अस्तत्व मं आया, तभी स अपन सोचन, समझन, तकर करन, वलषण करन, योजना बनान और परणाम उतपनन करन की अपनी षमताओं क साथ वह एक रठ राणी रहा ह। ऐसा कहना पूरी तरह तकर्हीन ह क व लोग जो अपन पनटंग को रंगन क लए वस्तारकों का रयोग करत थ और जो टॅल्क, बराइट, पोटासयम फल्डस्पार तथा बायोटाइट का सफलतापूवर्क मरण बनाकर ऐस वस्तारकों का नमाण कया करत थ व अभी-अभी लंगूर अवस्था स वकसत हुए थ और सभ्य बन थ।

गुफा पनटंग मं रयुत वणर्क ऐस मरणों स बनाए जात थ क रसायन शास्र क छार भी उनहं फर स बना सकन मं कठनाइ का अनुभव करंग। इन यौगकों का सूर बडा ही जटल ह और आज क दौर मं उनहं रयोगशालाओं मं कवल कमकल इंजीनयर ही बना सकत हं। यह स्पट ह क टॅल्क, बराइट, पोटासयम फल्डस्पार तथा बायोटाइट जसी सामरयों स रापत पंट क लए वस्तृत रसायनक ज्ञान वांछत ह। उनहं बनान वाल लोगों को "नव वकसत" कहना संभव ही नही ह।

511
बाइं ओर : यहां कलाकार न एक रआयामी बमब रस्तुत कया ह। ऐसा रभाव कला मं अचछी तरह पारंगत लोग ही डाल सकत हं।

जन लोगों न आज स 35,000 इसा पूवर वषर क गुफा पनटंगस की रचना की थी उनहोंन मंगनज ऑकसाइड, आयरन ऑक साइड, आयरन हाइरॉकसाइड तथा डंटाइन (कॉलाजन और कॅल्शयम स बन कशुकी राणयों क दांतों क अनदूनी हस्स) जस रसायनों स बन पंट का रयोग कया था। यद आप ऐस कसी वयत स, जसन रसायन शास्र का जरा भी रशषण रापत न कया हो, ऐसा एक भी पंट बनान को कहं तो जसाक इस चर मं दशाया गया ह, उनहं पता ही नहीं होगा क इसक लए कस रसायन का रयोग कया जाए, उस कस पाया जाए और उसक साथ और कन पदाथो का मरण कया जाए। इसक अलावा, यह भी ज्ञात होता ह क उस समय क लोग जानवरों की शरीर-रचना क बार मं भी काफी कुछ जानत थ, जसाक कशुकी राणयों क दांतों स रापत कॉलाजन और कॅल्शयम पाउडर क रयोग स परलषत होता ह।
नीच दाहनी ओर दशस घोडा 'नयोकस कव' स रापत एक पनटंग मं स ह। शोध स ज्ञात हुआ ह क यह पनटंग कोइ 11,000 साल पुरानी ह। पनटंग मं दशस घोड और उस षर मं आज भी पाए जान वाल घोडों मं इतनी अधक समानता ह क मानना पडता ह क इस बनान वाल कलाकार क पास बहुत ही परषकृत कला-बोध था। य पनटंगस गुहा-भतयों पर बनाए गए थ, इस बात स यह साफ अरमाणत हो जाता ह क व कलाकार कोइ आदम जीवन जी रह होंग। जयादा संभावना तो यह लगती ह क पूणर्त: अपनी वयतगत पसनद स उनहोंन इन दीवारों को अपन फलक या 'कनवस' कूप मं चुना था।

512
'ब्लॉमबोज गुहा' से रापत कृतयों से भी मानव वकास की अवधारणा वनट हो जाती है

दषण अरका क तट पर ब्लॉमबोज गुफाओं मं कए गए उतखनन मं रापत खोजों न भी मानव वकास की अवधारणा को पलट डाला ह। "द डली टलराफ" न यह कहानी "पाषाण-युगीन मानव ऐसा बहरा भी नहीं था" शीषर्क मुखय समाचार क अंतगर्त छापा था। यह वृतानत अनक समाचार परों और परकाओं मं छापा गया जनमं यह कहा गया क रागतहासक मानव क बार मं हमं अपन वचारों को पूणर्त: बदलना होगा। उदाहरण क लए, बीबीसी नयूज न अपन रपोटर मं कहा : "व ज्ञानकों का कहना ह क इस आवषकार स पता चलता ह क सोचन-वचारन क आधुनक तरीक उसस कहीं बहुत पहल शुू हो गए थ जतना क हम सोचत हं"। 13

ब्लॉमबोज गुफा मं 80 स लकर 100,000 साल पुरान मृदा-वणर्कों क टुकड पाए गए थ। अनुमान लगाया गया

था क उनका उपयोग शरीर को पंट करन तथा अनय कलातमक कायो मं कया जाता था। इस खोज स पूवर वञानक लोग यह कहा करत थ क सोच-वचार कर सकन तथा कोइ नइ चीज बना पान की मानवीय षमता का रमाण जयादा स जयादा 35,000 वषर पुराना ह। इन नइ खोजों न इस परकलपना को नसतनाबूद कर दया ह। उस समय क लोग, जनका वणरन वकासवादयों न आदम मानव और यहांतक क आध लंगूरों क ूप मं कया ह, वसतुत: आज क मनुषय की तरह ही सोच सकत थ और रचनाएं कर सकत थ।

यहां दशाए गए मनक (बीडस) और वभनन रकार की साज-सजावट वाली वसतुएं बलॉमबोज गुफाओं स रापत हुइ थीं। य वसतुएं हमं यह बताती हं क उस समय क लोगों क पास कला की सूझ-बूझ थी और सुनदर, आकषरक वसतुएं उनहं आलादत करती थीं।

शॉवेट गुफा के आचयरजनक चर

1994 मं शॉवट गुफा स रापत पनटंगस न वञानक जगत मं खलबली मचा दी थी। उसक पहल, आदरश की कृतयों, लॅसकौकस स पापत 20,000 साल पूवर की रतमाओं और सपन क अलटामीरा की 17,000 वषर पुरानी कृतयों न भी दुनया क लोगों का अचछा-खासा धयान खींचा था। परनतु शॉवट क चर इन सबस भी कहीं अधक पुरान थ। काबरन डटंग स पता चला क य पनटंगस लगभग 35,000 वषर पुरान हं। "नशनल जयोराफक" परका मं यह टपपणी छपी:

रथम रृंखला क फोटोराफों न वशषञों और आम लोगों दोनों को चमतकृत कया। कइ दशकों तक वशषञ लोग यह मानकर चल रह थ क आदम रखाचरों स लकर जीवनत एवं राकृतक कलाकृतयों तक कला का वकास मंद एवं रमक चरणों मं हुआ ह ...। शॉवट क चर अनय रसध गुफा-चरों की तुलना मं दोगुन जयादा पुरान हं और व न कवल रागतहासक कला का चरमोतकषर रदशरत करत हं बलक उसक अबतक ञात सबस राचीन उदभव की ओर भी संकत दत हं। [14]

शॉवट गुफा की "अव दीघा" लगभग 6 मीटर (20 फीट) लमबी ह। इस गुफा क आचयरजनक ूप स खूबसूरत चरों मं शुमार हं गंड, घनर बालों वाल घोड, जंगली भंस, संह और पहाडी बकर। ऐसी सुवकसत कला, वो भी ऐस समय रचत जबक वकासवादी लोग कवल अनगढ रखाओं की उममीद कर रह थ, एक ऐसी चीज ह जसकी वयाखया डावरन क सधांतों क आलोक मं नहीं की जा सकती।

इन गुफा चरों स झलकती गहन कलातमक संवदना क रकाश मं "नशनल जयोराफक" परका न इनहं बनान वाल कलाकारों का वणरन "हम जस मानव" कहकर कया था।

ऊपर बाएं : शॉवट गुफा मं एक तनदुए का मृदावणरकों (मटी क पगमंटस) स बना चर
ऊपर दाएं : अव दीघा की एक झलक नजदीक स

लॅसकौकस में 16,500 वषर पुरानी खगोलीय योजना

मयुनख ववदयालय क एक शोधकता डॉ. माइकल रॅपनगलूक क शोध परणाम स यह रकट हुआ क मधय रांस मं रसध लॅसकौकस गुफाओं क भत-चरों का खगोलशासरीय महतव भी था। फोटोरामरी तकनीक का इसतमाल करत हुए उनहोंन गुफा की दीवारों पर बन चरों को कंपयूटर पर पुन:रसतुत कया जसस यह पता चला क उन चरों मं उभर कर आनवाल जयामतक वृतों, कोणों और सीधी रखाओं का खास महतव था। कंपयूटर की गणना मं रहण समबनधी ुझान, समपात वनदुओं की अवगत, तारों की सुनयमत गत, सूयर और चनर की परध और वयास, रमांड क परावतरन इतयाद मूलयमानों को भी समाहत कया गया। परणामसवूप यह पता चला क इन ूप-रखाओं का समबनध वभनन तारामंडलों और चानर-गतयों स था। बीबीसी नयूज न अपन वञान खंड मं यह जानकारी रसारत की :

रारकालीन आकाश का एक रागतहासक अकस मधय रांस मं सुरसध लॅसकौकस की पनटंग गुफाओं की दीवारों पर दखन को मला ह। इस अकस मं, जस 16,500 वषर पूवर का माना गया ह, तीन चमकील तार दशरत हं जनहं आज हम "समर रंगल" क नाम स जानत हं। लॅसकौकस क इन भत-चरों मं 'पलऍडीज' नामक तारामंडल भी दशरत होता ह। 1940 मं ढूंढ नकाली गइ य गुहा-भतयां हमार पुराचीन पूवरजों की कला-रतभा की झलक दखाती हं। परनतु साथ ही इन चरों स उनका वञानक ञान भी आभासत होता ह। 15

डावरन वचारधारा क दावों क अनुसार, जन लोगों न य चर बनाए थ व संभवत: अभी-अभी पड स उतर थ। अभीतक उनका बौधक वकास भी नही हुआ था। तथाप, इन चरों क कलातमक मूलय और नवीनतम शोध दोनों ही इन दावों को खारज करक रख दत हं। य चर चाह जनहोंन भी बनाए हों, व बहुत ही उचच कोट क सौनदयरबोध, सुवकसत कला-तकनीक और वञानक ञान स समपनन थ।

वञानक अनवषकों क अनुसार, घोड क चर क नचल हसस मं अंकत वनदु संभवत: चनरमा क 29-दवसीय चर क योतक हं।

बीबीसी क वबसाइट पर "राचीनतम चानर पंचांग खोज लया गया" शीषक स रकाशत एक रपोटर मं दी गइ जानकारयों स "मानव समाज क वकास" की डावनवादी अवधारणा का एक बार पुन: खंडन हुआ।

514
लॅस्कौकस गुफा मं गायों क चर

लॅस्कौकस गुफा मं जंगली भंसों क चर

इन चरों मं जीवनतता और गत का चरण बडी परपूणता स कया गया ह। य काफी आकषक हं और गुणातमकता मं रशषण रापत कलाकारों वारा बनाइ गइ कृतयों स कम नहीं। ऐसा कहना असंभव ह क ऐस चर मानसक ूप स अपरपकव लोगों वारा बनाए गए होंग।

515

ऊपर : लॅस्कौकस गुफा की तथाकथत "रोटुंडा" की उतरी दीवार
नीच दाहन : लॅस्कौकस क 17,000 वषर राचीन जनतु चर
नीच बाएं : एक घोड का चर

516
वकासवादयों को हैरान करते उतरी अमेरका के चर और आरेख

7,000 साल पुरान य जराफों क आरख इतनी परपूणता स बनाए गए थ क लगता ह जराफों का चलता-फरता कोइ झुंड हो। सपट ह क यह चर वचारशील लोगों की रचना ह -- ऐस लोगों की जो नणय कर सकत थ, जनमं कला की समझ थी।

7,000 साल ही पुरानी एक दूसरी पनटंग मं वाय-यंर बजात एक वयत को चरत कया गया ह। इसकी बाइं ओर क एक नवीनतम चर मं बोटसवाना क अदवासी समुदाय -- जु -- क एक सदसय को दखाया गया ह। वह भी एक ऐसा ही वाय-यंर बजा रहा ह। सचचाइ यह ह क 7,000 वषर पुरान इस वाय-यंर स मलता-जुलता एक वाय-यंर आज भी रयोग मं ह। डावनवादी खयालों की धजजी उडान वाला यह एक और अनोखा उदाहरण ह। डावनवादयों की मानयता क रतकूल, जूरी नहीं क सभयता का वकास सदा आग की ओर ही हो। संभव ह क कइ बार हजारों साल तक यह जस की तस बनी रह। एक ओर जहां इस आदमी क हाथों मं पछल 7,000 सालों स रयुत हो रहा एक रतठत वाय-यंर ह, वहीं दूसरी ओर संसार क कसी दूसर कोन मं अतयाधुनक कंपयूटर तकनीक क दम पर 'डजटल समफोनी' स संगीत रच जा रह हं। और य दोनों ही संसकृतयां एक ही समय वयमान होती हं।

नीच : 7,000 साल पुरान एक चर मं बांसुरी बजात आदमी का चर यह दशाता ह क उस समय क लोगों क पास संसकृत और कला का ञान था और, अत:, व मानसक ूप स वकसत और सुसंसकृत थ।
नीच बाएं : इस चर मं बोटसवाना क एक सथानीय नवासी को वसा ही एक वाय-यंर बजात दखाया गया ह।

काटल यूक, जो ऐतहासक मानयतानुसार पहला शहर था, वकास का खंडन करता है

आम तौर पर 9,000 इसवी पूवर वषर पुराना माना गया काटल यूक, ऐतहासक ूप स ञात रथम शहरों मं गना जाता ह। जब पहल-पहल इस खोज नकाला गया तो पुरातततव जगत मं इसको लकर काफी बहसं चलीं और एक बार फर वकासवादी दावों की अमानयता सध हो गइ। पुरातततववता जमस मलाटर बतत हं क इस षरकी सुवकसत दशा को दखकर उन हं कतनी हरानी हुइ।

काटल यूक की तकनीकी खासयतं इस उचच ूप स वकसत समाज की वलषण खूबयों मं स एक ह। सपट ही वह नवपाषाणकालीन रगत का सरमौर था .... । जसक व लावा पतथर (ऑबसीडयन) स बन दपण पर कस पॉलश कर सक, वो भी बना उस खुरच हुए, और ऑबसीडयन सहत अनय पतथरों स बन मनकों मं उनहोंन सुराख कस बनाए, वो भी इतन महीन क आजकल की इसपात की बनी बारीक स बारीक सूइ भी उस न भद सक? उनहोंन तामब और लीड स धातु रापत करना कब और कहां सीखा? 16

इन खोजों स पता चला क काटल यूक क नवासी नगरीय जीवन-बोध स समपनन थ, व योजना और ूप-रखा बनान तथा संगणना मं माहर थ और कला समबनधी उनकी समझ हमारी कलपना स कहीं अधक वकसत थी। उतखनन दल क वतमान अगुआ, रोफसर इयान हॉडर, कहत हं क य उपलबध तथय वकासवादी दावों को पूणत: नरसत कर दत हं। व कहत हं क उनहोंन एक आचयजनक कला ढूंढ नकाली ह जसक उगम का पता नहीं चल रहा और साथ ही व धयान दलात हं क काटल यूक की भौगोलक अवसथत क बार मं बताना कठन ह कयोंक, हॉडर क अनुसार, उस समय क आबाद षरों स उसका कोइ रतयष भौगोलक तारतमय नहीं दख

रहा ह। जो भ त- चर खोज गए हं व अपन समय क हसाब स काफी वक सत को ट क हं। व कहत हं क इस ज ञासा क बाद क उन लोगों न कला क ष र मं इतना ऊंचा स्तर कस पाया, वास्त वक र न यह उठता ह क इस जन-समुदाय न ऐसी आचयरजनक सांस्कृ तक र ग त कस हा सल की? उनक ही कथनानुसार, हम बस इतना जानत हं क काटल यूक की सांस्कृ तक र ग त क पीछ 'वकास' जसा कोइ ततव नहीं था जहां ऐसी महतवपूणर कलाकृ तयां स्वत: ही और मानों शूनय स रकट हुइं।

काटल यूक की तमाम खोजं ऐ तहा सक और सांस्कृ तक वकासवाद को अमानय कर दती हं। यहां क भ त- चर तथाकथ त 'गुहा-मानव' क कारनाम नहीं हं जो अभी-अभी असभ्य अवस्था स उभरकर ऊपर उठ थ, वरन व कृ तयां थीं उन मानव रा णयों की जो प रषकृत कला-ष मता और सौनदयरबोध स समपनन थ।

ऊपर : काटल यूक क भ त- चरों मं स एक जसमं हरण का शकार रद शस ह

40,000 साल पुराने भाले जनसे वकासवादी हैरान हुए

1995 मं जमर्न पुराततव वद हाटर्मुट थीम न स्क्रॉ नंजन, जमर्नी, मं लकडी क बन कइ अवशषों का पता लगाया। य थ बडी कुशलता स न मर्त भाल, या दूसर शबदों मं, संसार क राचीनतम ज्ञात शकार क ह थयार। यह अनुसंधान भी वकासवा दयों क लए बडा हरतनुमा था, क्यों क उनकी नजर मं तो सही ढंग स शकार करना 40,000 साल पहल की बात ह, जब आधु नक मानव पहल-पहल रकट हुआ था। इसक पहल जो 'कलकटन' और 'लह रंजन' बर छयां उपलब्ध हुइ थीं, वकासवाद क झूठ क खांच मं फट करन क लए उनहं खोदन वाली छ डयां और बफर हटान क बल्लम का नाम द दया गया था। 18

परनतु, वस्तुत: स्क्रॉ नंजन बर्छ्र इसस भी कहीं आग नकल – 400,000 वषर पुरान। इसक अलावा, उनका समय इतना सु न चत था क शफील्ड यु नव सर्टी क एक पुराततव वद रॉ बन डनल, जनका आलख "नचर" प रका म रका शत हुआ था, न कहा क इनकी त थ को बदल पाना या उनका गलत अथा तरण करना नामुम कन ह:

परनतु स्क्रॉ नजन स जो वस्तुएं रापत हुइ हं, व न वर्वाद ू प स भाल हं। उनक बफर हटान क बल्लम या खोदन क उपकरण होन का दावा करना ऐसा ही ह जस क पावर र ल को पपरवट मान लना। 19

इन भालों न वकासवादी व ञा नकों को इतना आचयर्च कत क्यों कया, इसका एक कारण ह यह गलत अवधारणा क उस समय क तथाक थत आ दम लोग ऐसी वस्तुएं न मर्त कर सकन की ष मता नहीं रख सकत थ। परनतु फर भी य भाल ऐस म स्त षक वारा न मर्त हं जो गणना कर सकत थ और चरण-दर-चरण योजना बनान मं भी सष म थ। रतयक भाल क लए शाल (सू स) क लगभग 30 वषर पुरान एक वृष क तन का उपयोग कया गया था जब क भाल का अर भाग उसकी जड स बनाया गया था जहां लकडी सबस जयादा कठोर हुआ करती ह। रतयक भाल की रचना समानुपा तक ू प स की गइ थी और - जसा क आधु नक मापदंड ह -- उनक गु तव कनर तीषण हस्स स एक- तहाइ अंश पीछ रखा गया था। इन तमाम जानका रयों क मदनजर रॉ बन डल टप पणी करत हं :

य इस बात क योतक हं क एक उपयुत पड क चयन, ू प-रखा तय करन और अं तम आकार दन जसी बातों क लए उनमं काफी समय और कुशलता का उपयोग कया गया। दूसर शबदों मं, य [तथाक थत] 'हो म नड' कसी स्वत:स्फूतर "पांच मनट की संस्कृ त" मं नवास करन वाल लोग नहीं थ जो क तातका लक प र स्थ तयों क हसाब स अवसरवादी ढंग स अपनी र त र याएं दत हों। ब ल्क, इसक वपरीत, हम उनमं गहन योजना, डजाइन की उतकृटता और काठ-कमर मं धयर का प रचय पात हं -- व सब बातं जनका र य आधु नक मानव को दया जाता ह। 20

उन बर छयों को खोज नकालन वाल थीम महाशय का कहना ह :

मधय हम युग (प लस्टोसन) जस पुरान समय मं ऐस प रषकृत भालों क उपयोग का अथर यह नकलता ह क आ दकालीन मानव क व्यवहार और संस्कृ त क समबनध मं अनक र च लत सधानतों की फर स समीष ा की जाए। 21

जस क हाटर्मुट थीम और रॉ बन डनल का कहना ह, मानवजा त क इ तहास क समबनध मं डा वर्वादी दाव सचचाइ नहीं झलकात। वास्त वकता यह ह क मनुषय कभी वकास की दशा स नहीं गुजरा। अतीत क समय मं उननत एवं पछडी सभ्यताएं दोनों ही साथ-साथ वक सत होती रहीं।

गोबेकली टेपे पर सभ्यता के नशान

व ञा नकों न उफा (टकी) क पास स्थत गोबकली टप पर कए गए उतखनन स रापत साम र यों को "असाधारण और अनुपम" कहा ह। य आदमकद स भी बड 'टी' आकार क वशालकाय स्तमभ हं जनका व्यास

20 मीटर (65 फीट) ह और उनपर जानवरों की आकृ तयां उकरी गइ हं। उनहं वृताकार ूप मं सजाया गया ह। वज्ञान जगत जस बात स बहुत जयादा अचंभत हुआ वह था उस स्थल-वशष का समय। उस 11,000 साल पूवर नमस कया गया। वकासवादयों क दाव क अनुसार, उस समय क लोगों न इस रभावशाली स्थल का नमाण कवल आदकालीन पतथरों क रयोग स कया होगा। अत: इस रमत अवधारणा क अनुसार, अभयंरण (इंजीनयरंग) का यह नायाब नमूना 11,000 साल पहल शकारी लोगों वारा आदकालीन उपकरणों का उपयोग करक कया गया था। परनतु यह पूणत: अववसनीय लगता ह। गोबकली टप क उतखनन दल क मुखया रोफसर कलॉस समडट अपन बयान मं यह तथय रकट करत हं क उस समय क लोग सोचन-वचारन वाल मानव रतीत होत हं। जो कलपनाएं की गइ हं उसक वपरीत, समडट हमं बतात हं क य लोग आदम सभ्यता क लोग नहीं थ और उनहं लंगूर जस राणी नहीं माना जा सकता जो क अभी-अभी पड स उतर थ और अचानक एक सभ्यता का नमाण करन क लए रयासरत थ। बौधक शत की दृट स व हम जस ही मानव लगत हं। 22

पुराततववता समडट न यह तय करन क लए क उस समय की परस्थतयों मं इस वशालकाय स्तमभों को कस रकार वहां लाया गया होगा और कस उनहं आकार दया गया होगा, एक छोटा सा रयोग कया। व और उनक दल क लोगों न कसी यंर क बना ही एक भारी-भरकम चटान को गढन की कोशश मं जुट गए। उनहोंन इस काम क लए सफर ऐस आदम औजारों का उपयोग कया जनहं, वकासवादयों क अनुसार, रागतहासक मानव न रयोग मं लाया होगा। फर उनहोंन उस थोडी दूर उठाकर ल जान का रयास कया। टीम क लोगों की एक टुकडी लकडी क कुनदों, रस्सयों और मांसपशयों की ताकत लगात हुए, साधारण और राकृतक ढंग की घरनयों का रयोग करक उस पतथर को सरकान मं जुट गए। दूसर लोग हाथ स उपयोग कए जा सकन वाल पतथर क औजारों स 9,000 साल पुरान राजमसरयों की तरह एक गढा बनान की कोशश मं लग। (वकासवादयों की ऐतहासक दृट यह रही ह क चूंक उन दनों लोह क औजार नहीं थ, अत: पतथर युग क लोग कठोर चकमक (फलंट) पतथरों का रयोग करत थ।

इस तरह उस पतथर को गढन वाल लोगों न लगातार दो घंट काम कए और इतन मं बस व एक अस्पट रखा बना सक। पतथर को सरकान क काम मं जुट हुए 12 लोगों की टोली न चार घंट कडी महनत की परनतु व इस बस 7 मीटर या 20 फीट खसका सक। इस साधारण स रयोग न यह सध कर दया क पतथरों का एक जरा सा वृताकार दायरा बनान क लए सकडों मजदूरों को महीनों काम करना पडा होगा। अत: स्पट ह क उस समय क लोगों न वकासवादयों वारा बताए गए आदयुगीन तरीकों की बजाय कहीं जयादा उचच वकसत षमता को काम मं लाया होगा।

वकासवादी समय-रखा मं एक और वसंगत यह ह क जब इस रकार क नमाण कए जा रह थ, उस समय को व "मृदाकला-पूवर नव पाषाण युग" का नाम दत हं।

इस अवास्तवक अवधारणा क अनुसार, उस समय क लोग तो अभी मटी क बरतन बनान की तकनीक स भी अज्ञात थ। यह जानन क बाद क व लोग तो रतमाएं भी बनाया करत थ, बड-बड पतथरों का परवहन करत थ, उनहं आकषरक स्तमभों क ूप मं बदल सकत थ जनपर व जनतुओं की आकृतयां भी उकर लत थ, अपनी दीवारों पर पनटंग बनात थ और वास्तुशलप तथा अभयंरण मं नषणात थ, कया हम यह दावा कर सकत हं क व मटी क बरतन बनाना नहीं जानत थ?

यह रमातमक दावा बार-बार सफर इसलए कया जाता रहा ह ताक वकासवाद की पूवरअवधारणाओं का बचाव कया जा सक। इसमं कोइ सनदह नहीं क उपरोत नमाण हमं यह बतात हं क उनहं नमस करन वाल लोग उसस कहीं अधक वकसत ज्ञान, तकनीक और सभ्यता स समपनन थ जतनी क पहल कलपना की गइ थी। अत: इसस यह भी रकट होता ह क व आदयुगीन लोग नहीं थ। वस्तुत: तुकरपरका "बलम व तकनीक" क एक लख मं कहा गया ह क गोबकली टप की खोजों स मानवजात क इतहास क बार मं एक बहु-रचलत गलत अवधारणा का पदाफाश होता ह: "य नइ जानकारयां मानवता क इतहास क बार मं एक महतवपूणर रमत अवधारणा को बनकाब करती हं।" 23 यह दोष इतहास की वयाखया वकासवादी अवधारणा क आलोक मं करन क कारण ह।

गोबकली टप मं पाए गए टी-आकार क कुछ पतथरों पर संहों क चर उकर गए हं।

520

इस कालखंड क बार मं संकतत करत हुए वकासवादी इन वस्तुओं को "पतथर युग" की वस्तुएं बतात हं, जस समय -- उनक दाव क अनुसार -- कवल पतथर क औजार ही उपयोग मं लाए जात थ। परनतु इन रापत सामरयों क आधार पर यह दावा थोथा लगता ह। चटानों पर जानवरों का बलकुल सही-सही चर उकरना, या फर मूतयों मं आंख, नाक और मुंह की आकृतयां ढालना कवल पतथर क उपयोग स संभव नहीं ह।

षर क कुछ स्तमभों पर शर की उकरी हुइ आकृतयां

गोबकली टप स रापत एक मानव रतमा

गोबकली टप स रापत एक जंगली सूअर की चर-आकृत

मृदा-कला (सरामकस) अतीत की संस्कृतयों वारा छोडी हुइ एक ऐसी बरासत ह जसस हम अकसर दो-चार होत रहत हं। आज भी बहुत स लोग ऐस बरतन बनाकर अपनी आजीवका चला रह हं। अब मान लं क हमार आज क वत स बची-खुची कुछ टुकडयां भवषय क वञानकों को मल जाएं और य उनक आधार पर यह कहं क हमारी सभ्यता मं धातुओं क बार मं कोइ ञान ही नहीं था तो उनका यह कहना कतना सही होगा?

521

पतथरों को आकार दन क लए उनस भी अधक कठोर लोह और इस्पात क अनक उपकरणों की आवशयकता होती ह। ठीक आज क पतथर गढन वाल कारीगरों की तरह व कलाकार और मस्री भी पतथर काटन और गढन क लए धातु क ऐस ही उपकरण इस्तमाल मं लात थ।

8000 वषर पूवर पेशेवर तकनीकों के इस्तेमाल से दांतों का उपचार

पाकस्तान मं कए गए उतखनन कायरस यह ञात हुआ क आज स 8,000 स भी अधक पहल दंतषय को रोकन क लए दंत चकतसक दांतों की रलंग भी कया करत थ। खुदाइ क रम मं, मसौरी-कोलमबया ववयालय क रोफसर ऍनरया क्युसीना का धयान 8,000 स 9,000 साल पुरान चवरक (मोलर) दांतों पर लगभग 2.5 ममी क वयास वाल बारीक छरों पर गया। अपन शोध का वस्तार करत हुए क्युसीना न अपनी टीम स कहा क उन छरों की जांच इलकरोन माइरोस्कोप स की जाए। उनहोंन पाया क इन सूषम छरों क कनार इतन बहतरीन ढंग स गोलाकार बनाए गए थ क ऐसा कवल बॅक्टीरया क रभाव स होना नामुमकन था। दूसर शबों मं कहं तो य छर राकृतक कारणों स नहीं हुए थ बलक उपचार की दृट स य कृरम छर बनाए गए थ। कसी भी दांत मं षय क लषण नहीं मल। जसाक "नयू साइंटस्ट" परका मं कहा गया: "यह रागतहासक काल क दंत चकतसकों की नपुणता का सरल रमाण था।" 24

उस समय, वकासवादयों क अनुसार, मानव लंगूर अवस्था स अभी-अभी जुदा हो रहा था। व नतानत आदकालीन स्थतयों म रह रह थ और बस मटी क कुछ बरतन बनाना सीख चुक थ, वो भी हर जगह नहीं बलक कुछ ही षरों मं। यद उनक पास तकनीकी ञान नहीं था तो दांतों क उपचार क लए उस आदम अवस्था क इनसान दांतों मं इतन बहतरीन ढंग स रल करन मं कस नषणात हो गए? अत: स्पट ह क व आदम अवस्था क इनसान नहीं थ और न ही व असभ्य स्थतयों मं रह रह थ। इसक वपरीत, उनहं रोग-नदान का ञान था, उनहं उपचार-वधयां आती थीं और उन वधयों को सफलतापूवरक आजमान क लए उनक पास तकनीकी साधन भी थ। तो एक बार फर .... यह डावरवाद क इस दाव को खारज कर दता ह क मानव समाज का आदम स आधुनक अवस्था तक वकास हुआ ह।

522

पुराकाल के लोगों का संगीत-रेम

आज स लगभग 100,000 वषर पूवर रहन वाल लोग संगीत क रत जो अभुच दखा रह थ वह भी इस बात का परचायक ह क उनकी पसनद भी बलकुल आज क लोगों जसी थी। अबतक ञात राचीनतम संगीत उपकरण लीबया मं हौआफतह नामक जगह स बरामद हुआ ह। यह एक ऐसी बांसुरी का जीवाशम ह जस एक चडय की हडी स बनाया गया था और अनुमान ह क वह 70,000 स लकर 80,000 साल पुराना ह। 25 रोलोम ॥ पूवी रीमया मं वह स्थान ह जहां स 41 'फलंज' वीसल्स (सीटयां) पाए गए। 26 इस स्थान क अस्तत्व का समय 90,000 स 100,000 वषर पुराना आंका गया ह। 27

उस समय क लोगों का संगीत ञान इसस भी कहीं आग था। संगीतशास्री बॉब फंक न एक अनय रकार की बांसुरी का वलषण रस्तुत कया ह जस एक रीछ की जंघास्थ स बनाया गया था। यह बांसुरी पुराततववद इवान तुकर को उतरी युगोस्लावया की एक गुफा मं जुलाइ 1995 मं रापत हुइ थी। फंक न रमाणत कया क यह बांसुरी, जसकी रडयोकाबरन वारा नधारत समय-अवध 43,000 स 67,000 साल पूवर की ह, चार तरह क सुर उतपनन करती थी और इसमं आध और पूर स्वर थ। इस खोज स यह बात रमाणत हुइ क 'नएंडरथल' मानव सात सुरों का रयोग करत थ जोक आज भी पाचातय संगीत का स्थापत फॉमूला ह। बांसुरी की जांच करत हुए फ्लंक न दखा क इसकी तीसरी और चौथी सुराखों की तुलना मं दूसरी और तीसरी सुराखों क बीच का फासला दोगुना था। इसका यह मतलब हुआ क पहला फासला पूणर स्वर क लए और इसक बाद का फासला अधरस्वर क लए रखा गया था। फंक न लखा ह: "य तीनों सुर अपरहायररूप स व-स्वरातमक हं और नए या पुरान कसी भी मानक व-स्वरातमक पमान पर उनका लगभग सही-सही मल बठ जाता ह"। इस बात स यह तथय जाहर होता ह क "नएंडरथल" मानव क पास संगीत क रत रम और उसका ञान भी था। 28

इन कृतओं और पुरातातवक खोजों स उभर सवालों क बार मं डावरवाद क पास कोइ जवाब नहीं ह जसकी मानयता यह ह क मनुषय और लंगूर समान पुरखों की सनतान हं।

उदाहरण क लए, जहांतक लंगूर जस राणयों का समबनध ह, जनक बार मं उनका दावा ह क व दसयों-हजारों साल पहल रहा करत थ और कवल गुडगुडात और जानवरों की जीवन-शली बताया करत थ, व भला कब और कस सामाजक राणी बनन की आदत डाल बठ? यह वकासवादयों को दुबधा मं डालन वाला एक रमुख मुदा ह। वकासवाद क सधानत क पास इन सवालों का कोइ वज्ञानक और ताकक उतर नहीं ह क य लंगूर जस राणी पड स जमीन पर क्यों उतर गए, उन होंन दो परों पर खडा होना कस सीखा और उनकी बुध और षमताओं का वकास कस हुआ? इनक "स्पटीकरण" क तौर पर व जो कुछ कहत हं व पूवर्अवधारणाओं और फंतासी पर आधारत परी-कथाओं स जयादा कुछ नहीं हं।

एक डाल स दूसरी डाल पर उछलन वाल वानरों न भला जमीन पर रहना कस तय कर लया? यह सवाल यद आप वकासवदयों स पूछंग तो व कहंग क ऐसा जलवायु कारकों क कारण हुआ. परनतु वकासवाद का सधानत हमार मनो-मस्तषक मं उठन वाल इन राथमक सवालों का कोइ तकर्संगत और ववकपूणर उतर दन की स्थत मं नहीं ह। अनय वानरों न भी जमीन पर रहन का नणर्य करन वाल वानरों की दखा-दखी ऐसा ही नणर्य क्यों नहीं लया और उनहं वृषों पर रहना ही क्यों पसनद आया? इन जलवायु परस्थतयों न कुछ ही वानरों को क्यों रभावत कया? उनहीं समान जलवायु परस्थतयों मं कन ततवों न अनय बनदरों को जमीन पर उतरन स रोक दया? जब आप यह पूछंग क यह क्योंकर संभव हुआ क बन दर जमीन पर आ उतर और दो परों पर चलना सीख गए, तो वकासवादी इसक अलग-अलग ववरण दंग। उदाहरण क लए, कुछ तो य कहंग क ताकतवर शुओं स रषा करन क उदशय स य लंगूरनुमा जनतु दो परों पर सीधा चलन का ठान बठ। तथाप, इनमं स कसी भी उतर का कोइ वज्ञानक आधार नहीं ह।

सवररथम तो दो परों पर चलन का 'वकास' जसी कोइ चीज ह ही नहीं। मनुषय दो परों पर सीधा चलता ह। यह एक खास रकार की गतमयता ह जसका उदाहरण अनय कसी भी जीव-रजात मं दखन को नहीं मलता। एक और महतवपूणर वन दु जसका स्पटीकरण कया जाना चाहए वह यह ह क दो परों पर चलना कोइ वकासपरक उपलब्ध नहीं ह। बनदर जस तरीक स चलत-बढत हं, वह जयादा आसान, गतपूणर और मनुषय क दो परों वाली गत स अधक रभावी ह।

मनुषय कसी चमपंजी की तरह एक पड स दूसर पड पर उछलत हुए नहीं चल सकता, न ही वह चीत की तरह 125 कलोमीटर (80 मील) रत घंट की रफतार स दौड ही सकता ह। इसक वपरीत, क्योंक हम दो परों पर चलत हं, जमीन पर हमारी चाल बहुत मंद होती ह। इसी कारण स हम रकृत मं सबस कम सुरषत राणी हं। वकासवाद क सधानत क तकोक हसाब स सोचं तो बनदरों वारा मनुषय की तरह दो परो पर चलन का चुनाव करना बमानी ह। बल्क इसक बदल, उतरजीवी होन और सवाधक सषम बनन की गरज स आदमी को ही चौपाया बन जाना चाहए था।

वकासवाद क दावों का दूसरा गतरोध ह यह क दो परों पर चलन की दशा डावर्वाद की "रमक रगत" क खांच मं सही नहीं बठ पाती ह, जोक वकासवाद क सधानत का आधार ह और जसक लए यह वांछत ह क दोपाया और चौपाया अवस्थाओं क बीच एक "यौगक" अवस्था होनी चाहए। तथाप 1996 मं रटश शरीर-रचना शास्री रॉबन रौमपटन वारा कए गए एक कंपयूटरीकृत शोध स पता चला क ऐसी कोइ "यौगक" अवस्था संभव नहीं ह। रौमपटन इस नतीज पर पहुंच क कोइ भी जीवत राणी या तो सीधा चलगा या फर चार परों पर। २९ दोनों क बीच कसी भी रकार की उचच-संलषत या "हाइ-रीड" शली संभव नहीं ह क्योंक इसक लए अतयधक ऊजा खपत होगी। अत: कसी अधर्वपादीय जनतु का अस्ततव संभव नहीं ह।

भला आदकालीन लोगों न ववकपूणर सामाजक व्यवहार का वकास कस कया होगा? वकासवादी रलाप क हसाब स इसका उतर यह ह क समूहों मं रहत-रहत व बुधमान बन गए और उनहोंन सामाजक व्यवहार सीख लया। परनतु धयान दन की बात यह ह क गुरल्ला, चमपांजी, बनदर तथा और भी बहुत सारी जीव रजातयां समूहों मं रहती हं कनतु इनमं स कसी मं भी मानवों की तरह ववक-बुध और सामाजक व्यवहार क दशर्न नहीं होत, ऐसा क्यों? उनमं स कसी न भी इमारतं क्यों नहीं बनाइं? उनहं खगोलशास्र क्यों नहीं भाया? उनहोंन कलाकृतयां क्यों नहीं रची? इसलए क्योंक ववकपूणर रचनातमक व्यवहार कवल मानवों को रदत वलषण गुण ह। अतीत क व सभी कला-नमाण वास्तवक कला-षमता-समपनन मुषयों वारा बनाए गए थ। पुराततव क शोधों स यह अवधारणा खंडत हो चुकी ह क व लोग कभी आदम अवस था मं जी रह थ।

"नएंडरथल" मानव वारा बनाइ गइ यह बांसुरी यह झलकाती ह क य रांरभक लोग भी सात सुरों क सरगम का रयोग करत थ जो आज पाचातय संगीत का आधार ह।

523
अपने सधानतो को सहारा देने के लए वकासवादयों के पास कोइ वैज्ञानक रमाण नही है

वकासवादी बना कसी वज्ञानक रमाण क यह वचार लाद चल रह हं क लंगूर और मनुषय एक ही पूवर्ज की

संतान हं। यह पूछ जान पर क यह वकास भला कस हुआ होगा, व बल्कुल अवञानक तरीक स जवाब द दत हं : "हम नही जानत कनतु हमं आशा ह क एक दन हम जान जाएंग"। उदाहरण क लए, वकासवादी पुरामानव- वञानी एलन मौगस न यह स्वीकार कया ह :

[मानवता क वकास क समबनध मं] चार महतवपूणर रहस्यमय बातं य हं : 1. व दो परों पर क्यों चलत हं? 2. उनक रोएं क्यों गायब हो गए? 3. उनक म स्तषक इतन बड ूप मं क्यों वक सत हो गए? 4. उनहोंन बोलना क्यों सीखा?

इन सवालों क ू ढवादी जवाब हं : 1. 'हम अभीतक यह नही जान सक हं', 2. 'हम अभीतक यह नही जान सक हं', 3. 'हम अभीतक यह नहीं जान सक हं', 4. 'हम अभीतक यह नहीं जान सक हं'। आप अपन रनों की सूची को चाह जतना लमबा खीच लं, आपको यही एकरस उतर मलता रहगा। 30

524

वे अनुसंधान जनसे मानवजा त के इ तहास के बारे में वकासवादी तस्वीर का खंडन होता है

माइकल ए. र मो तथा रचाडर एल. थॉमसन वारा ल खत पुस्तक "द हडन हस्री ऑफ द यूमन रस : फॉ बडन आकयोलॉजी" मं रस्तुत कए गए रमाण मानवजा त क वकास समबनधी उस अवधारणा की तस्वीर को खां डत कर दत हं जसकी वकासवा दयों वारा पुरजोर वकालत की जाती ह। इस पुस्तक मं इ तहास क ऐस कालखंडों -- जनक बार मं वकासवा दयों की कोइ अपषा नही रही ह -- क अवशषों क बार मं दस्तावज रस्तुत कए गए हं। उदाहरण क लए, 1950 मं, कनाडा क रारीय संरहालय क मानव वञानी थॉमस इ. ली न लक युरॉन क मॅ नटॉ लन वीप पर शग युंडाह नामक जगह मं उतखनन कायर कया जहां उनहं एम हमनद- वा हत बालुका-पटी की एक परत मं कुछ उपकरण रापत हुए। जब यह रहस्य खुला क य 65,000 स 125,000 साल पुरान हं तो उनक शोध प रणाम का रकाशन ही टाल दया गया - क्योंक वञा नक जगत मं जो गलत अवधारणा घर बनाए बठी थी, उसक हसाब स उतरी अम रका मं साइब रया स मानव ज त का पदापण कवल 120,000 वषर पूवर ही हुआ था। अत: उन उपकरणों का उसस पूवर क समय क होन का दावा करना असंभव था।

इसी पुस्तक मं दया गया दूसरा उदाहरण पुराततव वद कालोस अम गनो का ह जनहोंन अजंटीना क मीरामर स 3 म लयन वषर पुरान 'प लायो सन' अव ध क (जब भारी संखया मं स्तनपायी जीवों का रादुभा व हुआ था) पतथरों क औजारों की खोज की थी। हमनद की उसी परत स कालोस न द ष ण अम रका की एक लुप त हो चुकी खुरदार स्तनपायी रजा त - टॉक सोडन - की जंघा स्थ ढूंढ नकाली थी। जांघ की उस अ स्थ मं पतथर क बन एक तीर का नुकीला हस्सा या भाल की नोंक धंसी पडी थी। बाद मं एक अनय शोधकता न उसी क अनदर मानव जबड का एक टुकडा बरामद कया। इसक बावजूद डा वसवा दयों क अनुसार, पतथर क बॉल या तीर बनान मं सष म मानव का वकास कवल 100,000 स लकर 150,000 व ष पूवर हुआ था। अत: कोइ भी ऐसी हडी या तीर की नोंक जो 3 म लयन वषर पुरानी हो, एक ऐसा प रदृशय ह जसकी व याखया करन मं वकासवादी स्वयं को असमथर पात हं। एक बार फर इस बात स यही झलकता ह क वकासवाद का स धानत वञा नक तथयों क अनू प नहीं ह।31

अपनी पुस्तक "ऍनशयंट रसज" मं र टश शोधकता एवं लखक माइकल बगनट न यह वणर्स कया ह कस रकार 1891 मं 260 स लकर 320 म लयन वषर पूवर की एक सोन की जंजीर मली थी। पता चला क यह जंजीर 8 करट सोन का था, जसका मतलब ह क इसमं 8 हस्सा सोना और १६ हस्स अनय कसी धातु क थ। जंजीर का बचला हस्सा, जो क कोयल क एक टुकड क अनदर स नकला, जरा ढीला था जब क इसक दोनों छोर दृढता स जड हुए थ। कोयल पर उस ढील हस्स क बड ही अचछ नशान पड मल। इन सबस यह मतलब नकला क सोना उतना ही पुराना था जतना क कोयला। वह कोयला जसमं स वह सोना रा पत कया गया, 260-320 म लयन वषर पुराना था। 32 उस समय-अव ध स, जब क वकासवा दयों क नज रय स मानव जा त का अ स्ततव भी नहीं था, सोन का टुकडा मलना वकासवा दयों वारा च र त कए गए मानवजा त क इ तहास को छनन- भनन करक रख दता ह।

समाज क लोग आभूषणों का रयोग करत और अलंकृत वस्तुएं बनात हं, यह इस बात का रमाण ह क उसक नाग रक सुसभ्य जीवन का लुतफ उठा रह थ। इसक अलावा, यह भी सच ह क सोन की जंजीर बनान क लए तकनीकी नपुणता और उपकरण दोनों ही चीजं चा हए। सोन क कचच धातु स महज पतथर क औजारों क बल- बूत सोन की सुव्यव स्थत जंजीर नही बनाइ जा सकती। यह स्पट ह क आज स लाखों साल पहल क इनसान आभूषण- नमा ण क बार मं जानत थ और सुनदर वस्तुओं स आन नदत होत थ।

ऐ तहा सक वकासवाद की अवधारणा को पलट दन वाली एक और खोज ह कील की एक टुकडी जो अनुमानत: 387 म लयन वषर पुरानी ह। ' र टश एसो सएशन फॉर द ऍडवांसमंट ऑफ साइनस" क सर ड वड ूस्टर क एक रपोटर क अनुसार, यह कील संडस्टोन क एक टुकड मं मली थी। वह परत जसस क वह कील बरामद की गइ, आरं भक 'डवो नयन' अव ध जतनी पुरानी ह अथा त 387 म लयन वषर33

य अनुसंधान, जनकी कडी मं अभी और भी कइ अनुसंधान शा मल कए जा सकत हं, यह दशा त हं क मनुष्य कोइ अधरपशु जीव नहीं ह, जसा क वकासवादी हमस मनवाना चाहत हं और उसन कभी भी पशु जीवन व्यतीत नहीं कया ह। ऐस ही उदाहरण रस्तुत करन क बाद, माइकल बगनट न यह टपपणी की ह:

... स्पट: ऐसी कोइ संभावना नहीं ह क इनमं स कसी भी आंकड को धरती क इ तहास क समबनध मं पारमप रक वज्ञान क समझ क खांच मं फट कया जा सक। वास्तव मं, य द इस रमाण को हमार वारा समी ष त एक भी मामल क रसंग म यथाथर की कसौटी पर कसक दखा जाए तो उसस यही संकत मलता ह क वाकइ मं मनुष्य अपन आधु नक ूप और अंदाज मं इस धरती पर बहुत लमब समय स अ स्ततववान रहा ह।34

पुराततव का इ तहास ऐसी खोजों स भरा पडा ह और उन अनवषणों क समष "पारंप रक" वकासवादी सोच, जसका ववरण बगनट न दया ह, बडी ही असमंजस की स्थ त मं आ पडी ह। परनतु यह भी सच ह क वकासवादी सोच क धनी लोग अनवषणों क ऐस महतवपूणर नमूनों को लोगों की नगाह स बडी सावधानीपूवरक बचाए फरत हं और उनकी उपषा कर दत हं। डा वनवादी अपनी वचारधारा को जी वत रखन क लए चाह जतना जतन कर लं, सर उठात हुए रमाण यह झलका ही दत हं क वकास एक झूठ ह और 'सृ ट' एक सच ह जस आप नकार नहीं सकत। इव र न शूनय स मनुष्य की सृ ट की, उसमं अपनी चतना का उच्छ्वास रवा हत कया और उस वह सखाया जो वह नहीं जानता था। वह इव र की ही ररणा ह जसक दम पर अपन अ स्ततव की रथम बला स ही मनुष्य मानव-जीवन जीन मं सष म हो सका ह।

"इन गेव रथम" के उतखनन से रापत प रणाम इ तहास के वकास समबनधी व्याखया को खं डत कर देते है

कए गए शोधों स जा हर होता ह क आज स हजारों साल पहल रहन वाल इनसान वस ही औजारों का इस्तमाल करत थ जस क आजकल क रामीण ष रों मं कए जात हं। वतमान फ लस्तीन क "इन गव रथम" नामक एक उतखनन ष र मं 15,000 इस्वी पूवर वषर पुरान एक झोंपड की नीव स अनाज पीसन की च क्कयां, पतथर का कूटक (मोटा र) तथा हंसए य सब चीजं रापत हुइ हं। इनमं स सबस पुराना औजार 50,000 इसा पूवर का ह।35

इन खुदाइयों मं रापत इन तमाम साम रयों स यह पता चलता ह क मनुष्य की जू रतों की फह रशत हर समय राय: एक जसी ही रही ह। मानवों वारा खोज गए समाधान अपन समय की तकनीक क अनुपात मं एक-दूसर स राय: मलत-जुलत ही रह हं। आज क रामीण ष रों मं फसल तयार करन और अनाज पीसन क लए जन औजार-उपकरणों की आज भी नतानत आवशयकता होती ह, व ही उपकरण उस पुरा काल मं भी रयुत कए जात रह थ।

527
आज अ त वक सत सभ्यताओं क साथ-साथ अपष ाकृत पछडी हुइ सभ्यताओं का भी अ स्ततव ह। परनतु य द क तपय समाज तकनीकी दृ ट स बहुत उननत हं तो इसका यह मतलब नहीं क मान सक या शारी रक ूप स भी व बहुत आग हं।

528
गलत
ऐस आ दम जीव जस क इस चर मं दखाए गए हं, कभी भी नहीं थ। य और ऐस ही तमाम चर डा वनवादी वज्ञा नकों की मन:कृ तयां हं जनका कोइ भी वज्ञा नक महतव नहीं।

लोग शकार करक अपना जीवन चलात हं या खती करक -- इसस यह तातपयर नहीं नकलता क व इस कारण अपनी मानस क ष मताओं मं उननत या पछड हुए हं। दूसर शबों मं, य द कोइ समाज शकार करक अपना भरण-पोषण करता ह तो वो इस लए नहीं क व लंगूरों स बहुत गहरा वास्ता रखत हं, और य द कसी समाज की आजी वका कृ ष ह तो इसका भी यह मतलब नहीं क व लंगूर अवस्था स काफी आग बढ चुक हं।

533
परा मडों क नमा ण मं जस रचनातमक कुशलता और तकनीक का उपयोग कया गया था वह आज भी रहस्य बना हुआ ह। य वशालकाय नमा ण जनकी नकल कर पाना आधु नक तकनीक क वाबजूद क ठन लगता ह, आज स 2,500 वषर पूवर रहन वाल उचच ूप स सष म लोगों वारा तयार कए गए थ।

534
ूडयाडर कप लंग की पुस्तक "जस्ट सो स्टो रज"

536
दु नया की र सधतम पाषाण संरचाओं मं स एक - नयूरंज - 93 वृहदाकार पतथरों स बनी ह। यह अभीतक ज्ञात नहीं हो पाया ह क पतथर क इन भारी टुकडों को कस रकार ढोया गया होगा, न ही यह क इसक

नमा ण मं कौन सी तकनीक अपनाइ गइ थी।

537
संभवत: 'स्टोनहंज' का नमा ण लकडी स बनी कसी संरचना की आधारभूम क ूप मं कया गया होगा। इसपर बनाया गया लकडी का भवन हवा और आंधी स रभा वत नहीं होता होगा। संभव ह क उस भवन का कवल आधार बच गया होगा। स्टोनहंज क्यों बनाया गया और कस तरीक स, यह आज भी बहस का मुदा बना हुआह परनतु वज्ञा नकों वारा खोजी गइ एक रमुख वशषता ह इसका खगोल वज्ञान स समबनध। इस नमा ण को अंजाम दन वाल लोग स्थापत्य और अ भयंत्र ण (इंजी नय रंग) दोनों का ही बहुत वक सत ज्ञान रखत थ।

538
द षण अम रकी शहर ताइवांसो मं रयुत कए गए टनों भारी इन पतथरों को इस्पात क तारों, घर नयों और अनय नमा ण उपकरणों की मदद क बना ढो पाना संभव नहीं ह।

539
अनुमानत: 10 टन भारी "द गट ऑफ द सन" (सूरज का दरवाजा) कसी ऐस मानव समाज वारा नहीं बनाया गया होगा जसक पास तकनीकी साधन न रह हों, जसा क वकासवा दयों का दावा ह। ऐस नमा ण वकासवा दयों क इस दाव को खा रज कर दत हं क इ तहास रा मभक स वक सत अवस्था की ओर आग बढा ह।

540
11,000 साल पूर्व गोबेकली टेपे के पाषाण-कार्य में नपुण राज मस्त्री

इन तस्वीरों मं द शत पतथर की कलाकृ तयां और इनकी बारीक आकृ तयां 11,000 साल पहल उनहं बनान वाल लोगों की कलातमक अ भु च झलकात हं। परनतु इसस भी महतवपूर्ण यह ह क इन पतथरों को तराशन क लए कलाकारों न अवशय ही धातु क बन औजारों का उपयोग कया होगा, न क एक पतथर स दूसर पतथर को घस कर। ऐसी उतकृट रचना धातु क बन लथ, र तयों और आ रयों क रयोग स ही बनाइ जा सकती हं, जसा क पतथर की कारीगरी क लए वर्तमान युग मं भी होता ह।

ऊपर दा हनी ओर दए गए चर मं ऐसी ही तकनीकों का इस्तमाल करत पतथर की तराशी करन वाल एक आधु नक राज मस् री को दखाया गया ह। आज स 11,000 वषर पूर्व क कलाकारों न भी ऐसी ही पध तयों क इस्तमाल स अपनी कलाकृ त यां बनाइ होंगी।

20,000 टन भारी नमा ण आधार

पू मं कुजको क नकट स्थत इनका सभ्यता क राचीन सकसाहुमान नगर मं एक दीवार का नमा ण कया गया था जसमं टनों भारी पतथरों का रयोग कया गया। रतयक पतथर एक-दूसर मं इस रकार फट कया गया ह क आप उनक बीच मं कागज का एक टुकडा भी नहीं घुसा सकत। इसक अलावा, कहीं भी समंट या मोटा र का रयोग नहीं कया गया और फर भी पतथर क इन ब्लॉकों को अव्वल दजर की कुशलता और बारीकी स एक-दूसर पर रखा गया ह। आधु नक तकनीक क रयोग क बावजूद यह नहीं जाना जा सका ह क पतथर क इन वशाल खंडों को ऐस आकारों म कस ढाला जा सका क व एक-दूसर मं इतनी अचछी तरह फट हो जाएं।

इसस भी जयादा आचयर्जनक तो यह ह क इस नमा ण मं रयुत पतथर का एक ब्लॉक तो और सबस भी अ धक भारी ह जसका वजन ह लगभग 20,000 टन! सकसाहुमान क नमा ताओं न कस इस ढोया होगा यह आज भी रहस्य ही बना हुआ ह। यहांतक क आधु नक युग की मशीनरी क इस्तमाल स भी ऐस आचयर्जनक ू प स भारी-भरकम पतथर को उठा पाना नामुम कन लगता ह। आज की दु नया मं उपलब्ध बडी स बडी भारोतोलक 'पुली' या घरनी क रयोग स भी ऐस वस मयकारी वजन को उठा पाना अतयंत क ठन ही होगा। इनका सभ्यता क ततकालीन लोगों न जू र कोइ ऐसी तकनीक का रयोग कया होगा जसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकत।

नमा ण में वशालकाय पतथरों के रयोग के लए भारी कुशलता चा हए

द सयों-हजारों टन भारी पतथरों क रयोग स बनाइ गइ संरचनाएं आज भी लोगों को हरत मं डाल दती हं। ऐस भारी-भरकम पतथरों को घर नयों और इस्पात क कबुल जस आधु नक साधनों क सहार ही इधर-उधर ल जाया जा सकता ह। लकडी, कुनदों, र स्सयों और आसानी स टूट-फूट जान वाल तामब क औजारों जस जन उपकरणों क बार मं वकासवादी हमं बतात हं -- इन पतथरों को जमीन स खोद नकालना भी संभव नहीं ह, फर उनहं ढोन-ढुलकान, उनहं उनकी जगह पर फट करन और उन हं तराशन की तो बात ही छोड दी जए। छोट स चर क माधयम स यह दखाया गया ह क वशालकाय रॅमसस स्टॅचयू क स र वाल हस्स को कस कवल घर नयों और स्टील कबुल्स क सहार ही ल जाया जा सका होगा।

जुपीटर (वृहस्प त) का म नदर, बाल्बेक

इस भवन क नमा ण मं भी पतथर क वशालकाय खंडों का इस्तमाल कया गया था जस हम आज जुपीटर (वृहस्प त) क म नदर क नाम स जानत हं। छोट चर मं लाल रंग स च नत पतथर-खंड उन तीन वशाल खंडों मं स एक ह जनहं आधार-दीवार क नमा ण मं रयुत कया गया था। इनमं स रतयक खंड लगभग 4.5 मीटर (15 फीट) ऊंचा, 3.5 मीटर (11फीट) चौडा और 19 मीटर (62 फीट) लमबा ह। उनका औसत भार करीब 800 टन ह। ऐस वजनदार पतथरों को खोदा गया और वहां स उनहं ढो कर ल जाया गया, यह इस बात का योतक ह क नमा ण क सु वक सत साधनों को इस्तमाल मं लाया गया था।

542

ओबे लस्क जनके बारे में वकासवा दयों के पास कोइ जवाब नहीं

ओब लस्क ऐस आचयजनक अवशष हं जो अतीत की सभ्यताओं स लकर आजतक बच हुए हं। इन सीध खड पतथरों को -- जो औसत ूप स 20 मीटर (65 फीट) लमब और टनों-टन भारी हं - खोदकर नकालन, ढोकर ल जान, उनकी सतह तराशन और उनहं सीधी स्थ त मं जमाकर रखन क लए अवशय ही सु वक सत तकनीक अपनाइ गइ होगी। इन वशाल ओबल स्कों मं स एक कारनक (इ जप ट) मं करीब 1,400 इसा पूवर मं न मस ह। इसकी ऊंचाइ ह 29.5मीटर (17फीट), चौडाइ 1.62मीटर (5.3फीट) और वजन 325टन। एक सीध-साबूत टुकड क ूप मं, ऐस बड और वजनी पतथर को उस खोद नकाली गइ जगह स वतमान स्थान तक लान क लए तकनीकी कुशलता और समु चत अध:संरचना की जू रत ह। पीतल और तामब क बन औजार आसानी स मुड जात हं और उनहं रयोग मं नहीं लाया जा सकता। अत: स्पट ह क लोह और इस्पात क बन औजार काम मं लाए गए होंग। इसस वकासवा दयों का यह दावा खं डत हो जाता ह क लोहा और इसक समान धातु उस समय क लोगों क लए अज्ञात थ।

ओब लस्क क शीषर पर क ल्पत भाग (लाल घर स द शत) संभवत: यह संकत दता ह क य खड पतथर रदीपन छडों क ूप म इस्तमाल कए जात रह होंग।

आसवन क नकट रनाइट की खान मं एक अधूरा ओब लस्क। अनय ओब लस्कों की तुलना मं दुगुनी ऊंचाइ का यह ओबल स्क 41.75 मीटर (137फीट) ऊंचा और करीब 1,968टन वजनदार ह। इस वशाल आकार क पतथर को खोदकर नकालन और इसकी मं जल तक पहुंचान क लए अवशय ही काफी उननत तकनीक का रयोग कया गया होगा।

543

प यूमा पुंकू में राप त वस्तुएं वकास का खंडन करती है

प यूमा पुंकू क परा मड क अवशषों क वृहद पतथरों क आकार आगंतुकों को हरत मं डाल दत हं। 'स्टप' परा मड का एक बलॉक जसक आधार का माप 60 मीटर (197 फीट) * 50 मीटर (164फीट) ह, लगभव 447 टन भारी ह। अनय रयुत पतथरों का वजन 100 स लकर 200 टन ह। वकसवा दयों की तजर पर यह मान लना तकर स पर होगा क पतथरों क इन दत याकार खंडों को लकडी क कुनदों और मोट रस्सों क सहार ढोकर लाया गया होगा।

वकासवा दयों का पुराततव प यूमा पुंकू क ढर सार वशाल पतथरों को आपस मं जोड जान क नशानों क बार मं कुछ भी कहन मं असमथर ह। य धातु क बन कलमप जस लगत हं। बहुत समय तक यह माना जाता रहा क टी-आककर क य कलमप पहल कसी भठी मं गलाए गए होंग और फर ठंढा करक उनहं पतथर-खंडों क तराश गए दांतदार हस्सों मं भरा गया होगा। परनतु बाद मं, इलकरोन माइर ोस्कोप स्क नंग की मदद स कए गए अनुसंधानों स पता चला क उनहं दांतदार हस्सों मं गमर प घल ूप मं ही ढाला गया था। स्पकरोर ाफ स कए गए वलषण स यह मालूम हुआ क इन कलमपों मं म र त धातु का रयोग कया गया था जसका अनुपात था : 2.05% आजस्नक (सं खया), 15.15% तामबा, 0.26% लोहा, 0.84% स लकॉन और 1.70% नकल (रांगा)। यह सब इस बात का रमाण ह क नमा ण र र या क दौरान वगत समाज क लोगों न उचच को ट क साधनों का इस्तमाल कया था। 42

धातु के कलैमप का एक नशान

ऐस कइ नशान प यूमा पुंकू मं अकसर दखन को मल हं

ओलांटोटंबो क पतथर-खंडों मं दख गए धातु क कलमप क नशान

अंकोरवाट (कंबो डया) की पाषाण-संरचना मं दख गए धातु क कलमप क नशान

545

मर (इ जप ट) मं अपनाइ गइ ममी बनान की तकनीक स यह पता चलता ह क उनक पास उचच को ट का

म डकल ञान भी था।

546
 मर क फराओ तूतनखामन का मृत शरीर एक क अनदर एक दो ताबूतों मं सुर ष त रखा गया था।

 समथ प परस जो यह दशा ता ह क कस रकार राचीन मर वासी कपड की कतरनों स प टयां बनाया करत थ।
547

(1,2) सोन, चांदी और अनय अधकीमती रतनों स उतकृट ू प मं न मस राजा क चर

(3) बडी बारीकी स बनाइ गइ चपपलं

(4) कठोर सोन स बना एक छोटा और लमब मुहान वाला घडा जसकी मजबूती और चमक आज भी बरकरार ह।

(5) तूतनखामन की ममी की गदस क पास स रापत एक सवणर आभूषण मं बहुत ही उतकृट सोन का रयोग कया गया ह। इसी ममी स 150 क लगभग अनय आभूषण भी रापत कए गए थ।

(6) चांदी क आवरण वाल सलज पर रखा हुआ एक सोन की परत वाली मंजूषा

(7) ट नस स रापत एक सोन, ल पज और टकवाइज न मस चर
इस आभूषणों मं द शस उचच को ट की कारीगरी स पता चलता ह क सवणकारी क बहुत ही उमदा साधनों का इसतमाल क या जाता था। ऐस साधनों क अभाव मं ऐसी उतकृट कारीगरी संभव ही नहीं ह। मर की सवणकारी की गुणवता और ला लतय आज क युग क समकष ही ह।

548
 मर की सु वक सत सभयता का एक न ववाद प रचायक ह वासतु शलप और अ भयंर ण क बार मं उनका र शसत ञान।

549
रचीन मर की पोशाकों क नमून

550

 रंड प परस

551

गीजा के परा मड के बारे में आचयरजनक तथय

गीजा क परा मड क बार मं कए गए कुछ शोधों स पता चला ह क राचीन मर वा सयों क पास ग णत और जया म त का बहुत ही उचच को ट का ञान था। ग णत और जया म त क ञान क अलावा, परा मडों की योजना बनान वाल लोगों को पृथवी क माप-जोख, इसकी प र ध, इसक अष ांश क झुकाव क कोण वगरह की भी अचछी-खासी जानकारी थी। 2,500 स 2,000 इ.पू. मं न मस होन वाल इन परा मडों क बार मं यह जान कर और भी अ धक अचयर होता ह क उनहं पाइथागोरस, आ कमसडीज और इ ल्यु सड जस महान रीक (यूनानी) ग णतञों क भी जनम स भी पहल बनाया गया था।

- र ट परा मड क कोण नील नदी क डलटा ष र को दो बराबर हससों मं बांटत हं।

- गीजा क तीन परा मडों का नमा ण इस रकार कया गया ह क व एक पाइथागो रयन रभुज की रचना करत हं जनकी भुजाओं का अनुपात 3:4:5 ह।

- परा मड की ऊंचाइ और उसकी प र ध क बीच का अनुपात कसी वृत की रजया और उसकी प र ध क समानुपा तक ह।

- र ट परा मड एक वशालकाय सूयरघडी ह। अकटूबर-मधय और माचर क रारंभ मं इसकी छायाएं ऋतुओं और वषर की लमबाइ बताती हं। परा मड क इदर गदर क पतथरों की लमबाइ दनभर की छाया की लमबाइ क बराबर ह।

- परा मड क चौकोर आधार की सामानय लमबाइ 365.342इ ज प शयन याडर (उस समय क माप की एक इकाइ) क बराबर ह। यह एक सौर वषर मं दनों की संखया क बहुत ही नकट ह (वषर क दनों की गणना 365.224 की गइ ह)।
- र ट परा मड तथा पृथवी क कनर क बीच की दूरी उतनी ही ह जतनी क परा मड और उतरी ु व क बीच की।

- परा मड मं, आधार की प र म त मं इसकी ऊंचाइ क दोगुन स भाग दन पर संखया 'पाइ' रा प त होती ह। परा मड की चारों भुजाओं का सतह ष र इसकी ऊंचाइ क चतुभुज क बराबर ह। 56

552

चयोपस (खुफु) क र ट परा मड मं लगभग 2.5 म लयन पतथर क टुकड लगाए गए हं। मान लं क एक दन मं 10 टुकड भी लगाए गए -- और इसक लए भी कामगारों को बहुत ही क ठर प रर म करन की जू रत ह -- तू 2.5 म लयन टुकडों को जमान क लए 684 साल का समय लगगा। परनतु माना गया ह क इन परा मडों को बनान मं औसतन 20 स 30 वषर का समय लगा था। इस मामूली सी संगणना स ही यह र कट हो जाता ह क इन परा मडों क नमा ण-कायर क लए मर वा सयों न एक अलग ही कस्म का और बहुत ही उननत टकनोलॉजी का इस्तमाल कया।

553
पतथरों क बड-बड खंडों स बनाइ गइ अतीत की भवन-संरचनाओं स यह साफ पता चलता ह क उस समय भी ऐसी ही मशीन रयों का इस्तमाल कया गया होगा जसी क आजकल क नमा ण-कायो मं इस्तमाल की जाती हं। नमा ण-यंरों मं स्वणर जसी आभूषण सामरी का र योग भी बडा वलष ण लगता ह। 1920 क दशक मं पनामा स रा प त यह सामरी ऐसी लगती ह मानों वह एक 'पनडंट' क ू प मं लटकन वाली कोइ चीज हो। यह तथा ऐसी ही अनय साम रयां वकासवा दयों क इस दाव का खंडन कर दती हं क अतीत क समाज पूणत: आ दम थ। समपूणर मानव इ तहास मं तकनीक और ज्ञान क ष र मं स्पट: र मक र ग त उपलब्ध की गइ थी, परनतु इसका यह आशय नही ह क अतीत क लोग जानवरों की तरह रहा करत थ। अतीत क लोगों न भी अपनी जू रतों क सापष अनक उपाय वक सत कए थ।

उस समय क फाबड का एक संभा वत मॉडल

आधु नक फाबड का एक मॉडल

तूतनखानम क राज संहासन क पृठ भाग का वस्तृत आरख, करो (इ ज प शयन मयु जयम)

554
रा चीन मर की करों से रा प त एक ग लाइडर का मॉडेल

अनक सभ्यताओं क अवशषों स यह भी संकत मलता ह क अतयंत पुरा काल मं वायु प रवहन का उपयोग भी होता था। यह बात माया सभ्यता क अवशषों, मर क परा मडों की तस्वीरों और सुमर सभ्यता क अ भलखों स स्पट प रल ष त होता ह। उनक आधार पर हम यह तो कह ही सकत हं क हजारों साल पहल लोग ग लाइडरों, हवाइ जहाजों तथा ह लकॉप टरों का इस्तमाल भी करत थ।

वस्तुत: कुरान स यह संकत मलता ह क बहुत पहल वायु प रवहन का अ स्तत्व था:

"और हमन सोलोमन को हवा पर नयंरण करन की श त दी -- एक महीन की यारा सुबह मं और एक महीन की दोपहर बाद ...।" (सूरा-ए-सबा : 12)

यह बहुत हद तक संभव लगता ह क इस आयत मं जस लमबी दूरी का जर कया गया ह, उस पगमबर सोलोमन क दनों मं बडी जल्दी पार कर लया जाता हो। यह प रवहन वायु-संब लत यानों स होता होगा जस आजकल क हवाइ जहाजों मं रयुत तकनीक स ही चलाया जाता रहा होगा। (भगवान जानं क्या सच ह!)

अतीत की सभ्यताओं क लोग वायु प रवहन का इस्तमाल कया करत थ, इस बात का एक र माण इ जपट स रा प त ग लाइडर का एक मॉडल ह। 1998 मं खोज नकाला गया यह ग लाइडर लगभग 200 वषर इसा पूवर का र तीत होता ह। नस्संदह आज स 2,200 वषर पूवर क एक ग लाइडर मॉडल का दखना बडी उल्लखनीय बात ह। इस पुराता त्वक खोज स इ तहास समबनधी वकासवादी अवधारणा का बल्कुल सफाया हो जाता ह। इसस भी कहीं अ धक रोचक तस्वीर तब उभरती ह जब उस मॉडल की तकनीकी वशषताओं पर गौर कया जाता ह। लकडी स बन इस मॉडल क डनों का आकार और अनुपात ऐसा था क बहुत ही कम ग त क र योग स वह वायुयान काफी ऊपर उठ सकता था, जसा क आजकल क कॉनकोडर वायुयानों मं होता ह जो क आधु नक सु वक सत तकनीक का नतीजा ह। इसस यह भी पता चलता ह क रा चीन मर वासी वायुग तमयता (एयरोडायन मक्स) क बार मं गहन ज्ञान रखत थ।

पीछ का दृशय

बगल का दृशय

ऊपर का दृशय

अनुमानत: 200 वषर इसा पूवर का एक मॉडल ग लाइडर

555
डॉ. ू थ हाइवर वारा एवाइ डयस टमपुल की दीवारों पर खोज नकाल गए य यंर आधु नक जट वमानों और ह लकॉपटरों स बहुत ही रोचक समानता रखत हं।

556
नजका से पापत एक वायुयान का ठोस सोने से बना एक मॉडेल

अतीत की सभयताओं स समब नधत वायुयान क अवशष कवल मर दश मं ही रापत नहीं कए गए हं। इस तसवीर मं दखलाया गया वायुयान का मॉडल द षण अम रका मं कोल मबया की एक गुफा स रापत हुआ था। अनुमानत: 1,000 वषर पूवर का यह मॉडल अब वा शंगटन डी.सी. क समथसो नयन संसथान मं रखा हुआ ह।

इस छोट स मॉडल की वायुगतयातमक संरचना जसमं इसक रडर क कनार 'टल' सकशन मं र ष पत कए गए हं, आधु नक वमानों स भनन नहीं हं। अपनी पुसतक "द पजल ऑफ ऍनशयंट मन" मं डोनालड इ. श टक सोन क बन इस मॉडल की वयाखया इन शबदों मं करत हं:
नससंदह, इस खोज क बार मं इसकी सु वक सत तकनीक क अलावा और भी बहुत सारी वयाखयाएं दी जा सकती हं, परनतु जब हाथ स बन इन सार आ वषकारों को एक जगह रखकर दखा जाता ह और उनक अथर का सावधानीपूवरक आकलन कया जाता ह तो कवल एक ही वयाखया संभव होती ह क य अतयंत ही उननत टकनोलॉजी स समपनन सभयताओं क अवशष हं।

* डोनालड इ. श टक, द पजल ऑफ ऍनशयंट मन", पृ. 109-110

वरा ू ज स रापत 200 इ.पू. की इस मू तर की तुलना शोधकता ओं न होवरर ाफट स की ह, जो वतरमान युग का एक ऐसा यान ह जो जमीन और पानी दोनों पर चल सकता ह। इसक अगल-बगल लग 'रोटर' (घूणरक) वृताकार घूम सकत हं और इसका पुचछल (टल) 'रडर' का काम करता ह। यहांतक क इसमं धुएं क वसजरन क लए भी एक भाग और एक नयंर ण पनल भी ह। पायलट जो यु नफॉमर पहन ह, उसस बाकी तुलना भी पूरी हो जाती ह।

557
कया "डोगस" से तातपयर आज से हजारों साल पहले रहने वाले पायलटों से है?

'डोगस' मटी की व मू तरयां हं जनकी ऊंचाइ 7 स 30 संटीमीटर (2.8 स 12 इंच) क बीच ह। अभीतक ऐसी 3,000 मू तरयां रापत हुइ हं जनहं अनुमानत: 300 स लकर 10,000 इसा पूवर मं गढा गया होगा। इस कारण व इ जपट और सुम रया स हत पछली सभी सभयताओं स अ धक पुरानी हं। य डोगस 'जोमन' लोगों वारा बनाए गए थ जनक बार मं माना गया ह क व जापान क अबतक ञात राचीनतम नवासी थ। ऐ तहा सक दसतावजों क आधार पर 'जोमन' सभयता क लोग मटी क बरतनों का रयोग करन वाल रथम लोग थ।* कयुशु की फुकुइ गुफा स एक 12,000 साल पुराना मटी का बरतन खोज नकाला गया।

'डोगू' क चर-आरख अतीत की अनय सभयताओं स कतइ भनन हं। जब हम उनहं सावधानीपूवरक दखत हं तो उनक वस रों मं व वध रकार क तकनीकी घटकों का समावश मलता ह जो बहुत कुछ 20वीं सदी क पहल चौथाइ कालखंड मं पायलटों और गहर समुर क गोताखोरों वारा पहन जान वाल युनीफॉमर स मलत-जुलत स लगत हं। डोगू क चरों मं यह साफ द खता ह क 'मूवमंटस' को सरल बनान क लए कइ जगह 'जवाइंटस' बनाए गए हं। सांस लन की सहु लयत क लए सुराखं बनी हुइ हं। सुरष ा क लए आंखों पर खास 'गॉगलस' भी बन हं। हाथों पर उतार जा सकन वाल दसतान हं। हलमट क डजाइन भी खास तौर पर रोचक हं। व गोल आकार क हं और उनमं सांस लन क उपकरण, वायु-न लकाएं और हडफोन लग हं।

* छ: हजार साल पुरानी अंत रष पोशाक (सपस सूट), वॉग न एम. रीन, भू मका : जखा रया स शन

20वीं सदी क 'फलाइट सूटस' और गोताखोरों की पोशाक स बड अनोख ढंग स मलत-जुलत य चर यह बतात हं क वगत काल क लोगों क पास उचच ू प स वक सत तकनीक थी। इन खोजों स यह संक तत होता ह क इ तहास की धारा मं 'वकास' नामक कोइ र र या घ टत नहीं हुइ ह।

कुरान में इवर का वचन ह क पगमबर सोलोमन (पूह) क समय की सभ्यता क पास वायु परवहन और पानी क अनदर गोताखोरी करन का स्तर बहुत ही ऊंचा था। (इवर को बहतर मालूम ह)। यहां दो आयतं दी गइ हं जनस संकत मलता ह क इवरदूत सोलोमन की सवा में लग जनन गोताखोरी करना जानत थ :

इसलए हमन हवा को उसक अधीन कया, वह जस ओर भी नदश्त कर, उसक आदश पर सहजतापूर्वक रवाहत होन वाला बनाया। और हर दतय, हर शल्पकार और गोताखोर को ..... (सूरा सद : 36-37)

558

दो हजार साल पुराना ऍनालॉग कंपयूटर : वकासवादी परदृशय को चकत कर देने वाली खोज

सन 1900 मं, पानी क अनदर रापत आधुनक पुराततव की रथम महतवपूर्ण खोज क ूप मं ऍगअन समुर क पचमी मुहान पर अवस्थत रीट और काइथरा टापुओं क दरमयान एक डूबा हुआ जहाज रापत हुआ। यह जहाज चरों और कलातमक सुराहयों स लदा हुआ था जनक अब टुकड-टुकड हो चुक हं।

माना गया क जयादातर कलाकृतयां आरंभक इसा-पूर्व अवध मं यूनानी कलाकारों वारा बनाइ गइं थी। परनतु उन कलाकृतयों क बीच चून मं तब्दील हो चुका तामब का एक टुकडा मला जसका कोइ अर्थ समझ मं नहीं आ सका। बाद मं कइ सालों क शोध क बाद यह ज्ञात हुआ क यह रहस्यमय कलातमक टुकडा आचर्यजनक ूप स जटल एक वज्ञानक यंर था।

जब यह रोचक यंर धीर-धीर सूखन लगा तो इसक लकडी क पंजर और अनदर क हस्सों मं दरार आइ और इसस चार सपाट हस्स बाहर उभर। एक गयरदार पहय क भीतरी भाग मं एक लखावट मली जसक अर्थ को समझना बडा ही कठन था। वज्ञानकों का मत था यह एक रकार का नावक यंर था। इस सामरी क बार मं कइ सुझाव रख गए कनतु कोइ सुनचत नषकर्ष नहीं मला। 1951 मं यल रोफसर डरक ज. ड सॉला राइस क अनुसंधानों क घटत होन स पूर्व तक इसक बार मं तरह-तरह क बस अनदाज ही लगाए जात रह।

उस यंर को फर स बनान क इराद स राइस और उनक रीक सहकर्मयों न एकसर और गामा करणों स बमबारी कर-कर क इसकी गहन जांच की। यंर क अनदर उनहोंन एक क ऊपर एक सुव्यवस्थत रख गए भनन -भनन आकार क गयर दख। इन गयरों क मूल संभावत अनुपातों क बार मं लमबी-चौडी संगणना करन क बाद राइस एक चकत कर दन वाल नषकर्ष पर पहुंच। राचीन रीसवासयों न सूर्य, चनर और रहों की वगत, वर्तमान और भावी गतयों क वास्तवक नधारण क लए यह एक तरीका वकसत कया था। यह "ऍनटीकाइथरा" उपकरण 2,000 साल पुराना एक ऍनालॉग कंपयूटर था। 1

इस खोज न वकासवादयों क उन दावों को चकत करक रख दया क 'हलनस्टक युग' (चतुर्थ स रथम शताब्दी इसा पूर्व का समय) स पहल कवल अवकसत रकार क बुनयादी आवषकार ही कए गए।

अपन मूल ूप मं यह लकडी क आयताकार बकस मं रखा तामब का बना एक यंर था। सामन और पीछ की ओर तांब क बन दरवाज लग थ जसपर शल्पी आवषकारक न वस्तृत सूचना अंकत कर रखी थी। यंर वारा रस्तुत की गइ सूचना को पढन क लए तीन 'डायल' बन थ। पहल डायल मं दो 'स्कल' या पमान थ जनमं स एक राश-चर क चनों को रदर्शत करता था और दूसर पर वर्षक महीनों क रीक नाम अंकत कए गए थ।

* पहला डायल साल क रतयक दन मं राश-चरों स गुजरत हुए सूर्य की स्थत को रदर्शत करता था।
* दूसरा डायल सौर रहणों क 18 वर्षीय चर को दशाता था।
* तीसरा डायल चनरमा की ववध कलाओं को ूपांकत करता था।

'इनपुट' डालन क लए एक हंडल का रयोग कया जाता था जस समानानतर धरातलों पर जड हुए तामब क लगभग उनताल स (39) गयरों वाल एक चकक को घुमान क उदशय स दनभर मं एक बार घुमा दया जाता था। ऐसा करन स एक राइवंग वील गतशील हो उठता था जोक एक दांतदार टर्नटबुल क माधयम स जोड गए गयरों की दो कतारों को गतशील कर दता था। टर्नटबुल एक वभदक 'गयर रन' का काम करता था और जब इनपुट हंडल को घुमाया जाता था तो दो डंड वभनन गतयों स घूमन लगत थ। वभदक गयर, जनहं आधुनक वाहनों मं मोडदार स्थतयों मं टायरों को अलग-अलग गतयों मं घुमान क लए रयुत कया जाता ह, का आवषकार १७वीं सदी मं कया गया था। राइस न उस यंर को "आधारभूत यांरक आवषकारों मं सार्वकालक ूप स सवर्ठ" कहा था।2

इस खोज स दुनया भर मं बडी आपाधापी मची। इसस वकासवादयों की "तकनीकी वकास" समबनधी सारी काल्पनक ूप-रखा ही पलट गइ। वकासवादयों क अनुसार, 2,000 साल पुरानी कसी भी सभ्यता क पास परषकृत टकनोलॉजी तो होनी ही नहीं चाहए थी। व तो बस मामूली कल-पुजों स अपना काम चलात थ। परनतु यूनान क रचीन मकनकों वारा आवषकृत इस यंर स यह बात झलक गइ क बीत युग की सभ्यताएं वसी नहीं थीं जसीक वकासवादी कल्पना करत थ। उनहोंन शताब्दयों पहल एक खगोलीय कंपयूटर बना डाला था और व कइ

मधयकालीन सभयताओं स कहीं आग थ। (पहला ऍनालॉग कंपयूटर 1931 मं वॅनवर बुश वारा वकसत कया गया था.)3 अपनी पुसतक "द पजल ऑफ ऍनशयंट मन : ऍडवांसड टकनोलॉजी इन पासट सवलाइजशनस?" मं डोनालड इ. शटक न यह टपपणी की ह :

संभवत: कही जयादा आचयरजनक ह इसा पूवर काल मं ऍगयन समुर मं डूब चुक एक जहाज स खोजी गइ वसतु। यह एक रकार का यांरक संगणक उपकरण लगता था। आधुनक कंपयूटर दो रकार क हं: ऍनालॉग एवं डजटल। इसा पूवर काल मं डूब चुक जहाज पर रापत यह वसतु सपट ूप स एक परषकृत ऍनालॉग कंपयूटर था।4

इस अनुसंधान क समबनध मं, हलना समथ वारा "द ऑबवर" मं लखत एक आलख का शीषरक था : "रवीलड: वलरडस ओलडसट कंपयूटर" (दुनया का रचीनतम कमपयूटर : अब रकट)। नमनांकत अंश उसी आलख स उधृत ह :

समुर-सतह पर कॅलशयम क कवच वाल तार यंर की खोज क बाद, नगूढ लखावट स यह परलषत होता ह क यह दुनया का राचीनतम कमपयूटर था जसकी मदद स सूयर, चनरमा और रहों की गतयों का आकलन कया जाता था। इस यंर क बार मं शोध कर रह ऐंगलो-रीक पुरातातवक दल क जनोफोन मूसास कहत हं : "बहुत ही जलद हम रहसयों का पता लगा लंग. यह खगोलीय एवं गणतीय जान क बार मं एक पहली ह ..."। लंदन साइनस मयुजयम क पूवर कयुरटर न कहा ह क उत उपकरण इस बात का सवोतम रमाण ह क राचीन लोग तकनीकी ूप स कतन उननत थ। "जस नपुणता स इस बनाया गया उसस उपकरण-नमाण क षर मं एक ऐस सतर का पता चलता ह जसका पुनजागरण काल स पहल तक कोइ सानी नहीं था"।

बहुत स वशषजों का कहना ह क यह वजान का इतहास लख जान की पूरी ररया को ही बदल डालन वाली खोज ह। ऍथनस क रारीय तकनीकी ववयालय क रोफसर थयोडोसयस क अनुसार: "कइ तरह स दखन पर, यह पहला ऍनालॉग कंपयूटर लगता ह। इसस राचीन तकनीकी वकास को दखन का हमारा सारा नजरया ही बदल जाएगा।"

वशषजों वारा की गइ य टपपणयां बडी महतवपूणर हं, कयोंक ऐंटीकाइथरा यंर जस कंपयूटर क नमाण मं मानव जात को लगभव 20 स भी अधक सदयां लग गइं जबक 2,000 साल पूवर रीक लोगों को ऍनालॉग कंपयूटर बनान का जान था। इन सबस यह पता चलता ह क उतन पुरान युग मं रहन वाल लोगों क पास कालानतर मं वकसत हुए समाजों की तुलना मं भी कहीं उननत सभयता थी -- एक ऐसा तथय जसकी वयाखया वकासवाद क नजरय स नही की जा सकती।

इसमं कोइ सनदह नही क जस समय यूनान (रीस) क लोग अपनी सुवकसत सभयता क आननद मं नमगन थ, उसी समय दुनया क कइ हससों मं पछडी हुइ सभयताएं भी सांस ल रही थी, परनतु यह सचचाइ क कुछ समाज उननत और कुछ समाज अवनत थ, इस बात की परचायक नहीं ह क मानवजात लंगूरों स वकसत हुइ रजात ह या यह क कोइ समाज कसी पूववरती समाज का ही वकसत रूप ह, जसाक डावरवादयों का दावा रहा ह। ऐसी वयाखया तथयहीन तथा तकर और वजान क रतकूल ह।

1. http://www.dreamscape.com/morgana/triton2.htm
2. उपरोत
3. इंसायकलोपीडया रटनका ऑनलाइन - www.britanicca.com/eb/article-9018261/Vannevar-Bush
4. डोनालड इ. शटक, "द पजल ऑफ ऍनशयंट मन : ऍडवांसड टकनोलॉजी इन पासट सवलाइजशंस?", रएशन कम पास, 1998, पृ. 34-35
5. "रवीलड: वलडस ओलडसट कंपयूटर" : हलना समथ, 'द ऑबवर', अगसत 20, 2006. http://observer.guardian.co.uk/world/story/0,,1854232,00.html

यहां दया गया चर एक गयरदार पहय का ह जस ऍगयन समुर स रापत कया गया था। माना गया ह क यह एक राचीन कंपयूटर का हससा था।

560

कया राचीन मर में बजली थी?

डंडरा क हथर मनदर मं खुदी हुइ चर-आकृतयों स यह संभावना रकट होती ह क राचीन मरवासयों को बजली का जान था और व इसका उपयोग करत थ। इन चर-आकृतयों पर गौर करन स आपको लगगा क आजकल की ही तरह उस समय भी उचच-वॉलटज इंसयुलशन का रयोग जूर कया गया होगा। बलबनुमा आकृत को एक आयताकार खंभ (दजड सतमभ क नाम स रसध और अनुमान ह क वह इंसयुलटर का काम करता था) क सहार खडा कया गया ह। तसवीर मं दए गए आकार और बजली क लमपों मं जो समानता दख रही ह वह चकत कर दन वाली ह। 58 1933 मं राचीन मर की धातु-सामरयों का वलषण करत हुए डॉ. कॉलन जी. फनक - जनहोंन टंगसटन क फलामंट वाल बजली क बलबों का आवषकार कया था - न पाया क आज स 4,300 वषर स भी पूवर मरवासी तामब पर ऐंटमोनी नामक धातवक ततव की पलटंग करन की वध जानत थ । इस वध वारा वही परणाम रापत होता था जोक आज क युग मं इलकरोपलटंग

वध स रापत होता ह। 59

इन चर-आकृतयों मं वणस रणाली क समबनध मं वञानकों न यह जानन क लए रयोग कए हं क कया उसस रकाश भी वकीणर होता था। ऑसरया क वयुत अभयंता वालटर गानर न उन आकृतयों का गहन अधययन कया और दजड सतमभ इंसुलटर, बलब और टवसटंग वायर को नए सर स बनाकर दखा। उनहोंन जो मॉडल बनाया वह वाकइ काम करन लगा और उसस रकाश भी उतपनन हुआ। 60

राचीन मरवासयों न बजली का रयोग कया होगा इस बात का एक सबूत यह तथय ह क उनकी करों और परामडों की आंतरक दीवारों मं कसी रकार की कालख दखन को नहीं मली। यद, वकासवादयों क कह अनुसार, उनहोंन टॉचो और तल क दीयों का इसतमाल कया होता तो कहीं ना कहीं कालख क भी नशान होत। परनतु ऐसा कहीं कोइ नशान नहीं ह, घुपप अंधर हससों मं भी नहीं। यह संभव नहीं ह क आवशयक रकाश क अभाव मं य संरचनाएं पूरी की गइ होंगी और न ही दीवारों पर बन भवय पनटंगस ही बनाए जा सकत थ। इसस इस संभावना को बल मलता ह क राचीन इजपट मं नससंदह वयुत का रयोग कया जाता रहा होगा।

डंडरा क हथर मनदर की इन चर-आकृतयों का आधुनक बलबों स मलता-जुलता लगना वञानकों को हरान करन वाली बात लगी।

इजपट क चरों मं अकसर दशाया गया दजड सतमभ -- संभव ह यह एक रकार का वयुत साधर रहा हो। संभव ह क कॉलम जनरटर रहा हो जसस रकाश मलता हो।

561
फलप जॉनसन

562
3,000 इसा पूवर क बाद स सतत ूप स बड-बड नगर-राजयों की सथापना करत हुए सुमरयाइ लोगों न वशाल भू-भागों पर अपन साराजय सथापत कए।

राचीन समाजों वारा सथापत की गइ गहन सभयताओं स यह रमाणत होता ह क "आदम अवसथा स सभय अवसथा की ओर वकास" वाली डावसवादी परकलपना सचचाइ स पर ह। सुमरयाइ सभयता इसका एक उदाहरण ह।

563
चर मं दशस असीरयाइ रथ जस रकार कसी उवलक बल क अभाव मं भी चलता ह, वह उललखनीय ह। सपाही का कवच यह दशाता ह क उस समय धातु-कला कतनी वकसत अवसथा मं थी। उनक कपड पूरी तरह कवच मं ढंक हं ... इस रकार क सर स पर तक सुरषत रहत हुए भी व बडी सहजता स चल-फर सकत थ। रथ भी इतना मजबूत लगता ह क युध की परसथतयों और भीषण आघातों को झल सक, खास तौर पर इसलए क इसका उपयोग दुगसदक क ूप मं भी कया जाता था। रथ की शत और मजबूती और इसमं रयुत की गइ सामरयां खास तौर पर चकत करन वाली हं। (2,000 इ.पू. स 612 इ.पू.)

564
अपन आकलनों क आधार पर सुमरयाइ लोगों न सोचा क हमारा सौरमंडल 12 रहों स बना ह जसमं सूरज और चनरमा भी शामल हं। 12वां रह, जस कतपय रोतों मं 'नबीू' नाम स अभहत कया गया ह, वह वासतव मं दसवां रह ह जस 'पलनट-एकस' क नाम स जाना जाता ह और जसक असततव को वञनकों न भी हाल ही मं सवीकार कया ह।

तारक पटी (ऍसटरॉयड बलट)
मंगल
चनरमा
पृथवी
बुध
शुर
पलूटो
नपचयून (वुण)
सूयर
वृहसपत
शन
यूरनस (यम)

ऊपर क चर मं सुम रयाइ लोगों का सौरमंडलीय आरख दखाया गया ह। सूयर बीच मं द शस ह तथा सार रह उसकी प र रमा कर रह हं।

565
सुम रयाइ लोग एक बारहमासा पंचांग रयोग मं लात थ। उनहोंन कइ तारामंडलों क आरख बनाए और बुध, शुर तथा वृहसप त जस रहों की ग त का पता लगाया। उनकी संगणना कतनी सही थी इसकी पु ट हमार समय क अनुसंधानों तथा कंप यूटर क आकलनों स होती ह।

जगुरत

नमू द लंस

सन् 1850 मं पुराततव वद सर जॉन लयाडर वारा कए गए एक आ वषकार स यह सवाल उठा क सवरथम लंस का उपयोग कसन कया? वतमान मं जस हम इराक क नाम स जानत हं, वहाँ कए गए कइ उतखननों स लयाडर न 3000 साल पुराना एक लंस खोज नकाला। वतमान मं र टश मयु जयम मं रद शस यह टुकडा दशा ता ह क पहल-पहल ञात लंस का उपयोग असी रयन सयता क युग मं कया गया था। रोम वव वयालयक रोफसर ग योवॅनी प टनटो का वषवास ह क यह अशम-सफ टक लंस - जो क उनक अनुसार वञा नक इ तहास पर पया प त रकाश डालन वाली एक महतवपूणर खोज ह - इस बात का भी वलषण कर सकता ह क राचीन असी रयाइ लोग खगोल वञान क बार मं इतना कस जानत थ क उनहोंन श न रह और इसक वलयों का पता लगाया। 66

आ खर इस लंस का कया उपयोग कया जाता था? इस र न क उतर पर बहस की जा सकती ह, परनतु फर भी यह सपष्ट ह क अतीत क सभी समाज साधारण जीवन ही नहीं जी रह थ, जसा क वकासवादी वञा नकों का मत रहा ह। अतीत क समाज वञान और तकनीक का भी उपयोग कर रह थ, उनहोंन ठोस ू प स सथा पत सयताओं का भी नमा ण कया था और वक सत जीवन-शली का लुतफ उठा रह थ। उनक रोजमरा क जीवन क बार मं आज हमार पास बहुत ही सी मत जानकारी उपलबध ह परनतु वयावहा रक ू प स हम जतना भी कुछ जानत हं उनस यह द शत होता ह इनमं स कोइ भी समाज वकास की र र या स नहीं गुजरा था।

3000 साल पुराना लंसनुमा टुकडा एक ऐसी महतवपूणर खोज क ू प मं व णत कया गया ह जो संभवत: "वञा नक इ तहास का पुनलखन" कर सकगा और यह सध कर सकगा क इ तहास हमं बतलाता ह क जब स मानवजा त का अ सततव ह, वह इसी म सतषक, इसी ष मता, इनहीं अ भु चयों स समपनन रही ह जसी क वह आज ह।

बगदाद बरी

सन् 1938 मं, जमन पुराततव वद् वलहम कू नग न "बगदाद बरी" नामक एक गुलदसतानुमा वसतु का पता लगाया। परनतु यह नषकशर कहाँ स नकला क लगभग 2000 साल पुरानी यह वसतु एक बरी क ू प मं इसतमाल की जाती थी? अगर वसतुत: यह एक बरी क ू प मं इसतमाल की जाती थी - जसा क शोध स साफ पता चलता ह - तो व सार सधांत जो हमं बतात हं क सयता हमशा वक सत होती ह और यह क अतीत क सार समाज आ दम स्थ तयों मं रह रह थ, पूणत: खा रज हो जात हं। मटी क इस पार मं, जो क एसफालट और बटयुमन स सीलबंद ह, तांब का एक बलन ह। इस बलन की पंदी तांब क एक डसक स आवृत ह। एसफालट क बन रोधक मं लोह की एक छड रखी ह जो क बलन को बना छुए उसमं लमब त ह।

इस पार को इलकरोलाइट स भर जान पर वयुत-धारा उतपनन करन वाली बरी प रणा मत होती ह। इस घटना को वयुत-रसाय नक र त र या क नाम स जाना जाता ह और यह वतमान युग मं काम करन वाली ब रयों स बहुत जयादा भनन नहीं ह। रयोगों क दौरान, बगदाद बरी पर आधा रत कुछ पुन नम तयों स 1.5 स लकर 2 वोलट तक का वयुत ज नत क या जा सका।

इसस एक बहुत ही महतवपूणर सवाल उठ खडा होता ह : 2000 साल पहल भला बरी का इसतमाल कस कायर क लए क या जाता रहा होगा? चूं क ऐसी बरी मौजूद थी, अत: सपट ह क उस ऊजा रदान करन वाला कोइ यंर या उपकरण भी रहा होगा। इसस एक बार फर यह सपट हो जाता ह क 2000 साल पहल रहन वाल लोगों क पास उसस कहीं जयादा सु वक सत तकनीक थी -- और कहीं जयादा बहतर जीवन शली -- जसा क पहल सोचा गया था।

य द इस पार को इलकरोलाइट स भर दया जाए तो वयुत-तरंग उतपनन करन वाली एक बरी बन जाएगी। इस प रदृशय को वयुतीय-रसाय नक र र या क नाम स जाना जाता ह और वतमान काल की ब रयां जस व ध स काम करती हं वह उसस भनन नहीं ह। बगदाद बरी क नमून क आधार पर नए सर स बनाइ गइ बरी स 1.5 स लकर 2 वोलट तक की ब जली पदा की गइ।

इसस एक बहुत ही महतवपूणर सवाल उठता ह : आज स 2,000 साल पहल बरी का भला कया उपयोग होता

होगा? चूंक ऐसी बरी थी, अत: स्पट ह क ऐस यंर और उपकरण भी रह होंग जो इसस श त पात होंग। इस बात स एक बार पुन: प रल ष त हो जाता ह क आज स 2,000 वषर पूवर रहन वाल लोग उसस कही अ धक उननत तकनीक स समपनन थ - और इस रकार उनका जीवन-स्तर उसस कही जयादा ऊंचा था -- जतना क पहल सोचा गया था।

ऍस्फाल्ट स बना रोधक
तामब का बलन
लोह की छड
इलकरोलाइट का घोल

2,000 वषर पूवर की "बगदाद बरी" नामक इस वस्तु क समबनध मं कए गए शोध यह दशा त हं क इस बजली पदा करन क लए एक बरी क ूप मं रयोग मं लाया जाता था।

568
राचीन माया सभ्यता में अकसमल नगर के एक भवन के अवशेष
कुछ वकासवादी वज्ञा नक यह दावा करत हं क माया सभ्यता क लोग धातु क बन औजारों का इस्तमाल नही करत थ। य द यह सच ह तो फर माया सभ्यता क अवशषों स रापत पतथरों की उचचकोटक कलाकृ तयों क बार मं हम कया व्याखया द सकत हं? आरर जलवायु वाल युकाटान क बरसाती जंगलों मं धातु क बन हुए उपकरणों का बडी तजी स ऑक्सीकरण होगा और व नट हो जाएंग। संभवत: यही कारण ह क माया सभ्यता की धा तवक साम रयां आज क दौर तक अपना अ स्ततव नहीं बचा सकी हं। परनतु पतथर की जो संरचनाएं बच गइ हं व यह स्पट कर दती हं क ऐसी ला लतयपूणर और बारीक कलातमकता वाली कलाकृ तयों का नमा ण महज पतथर क औजारों स कया जाना नामुम कन ही था।

569
पुन: न मस रोजॅ लया टेमपुल का ऊपरी हस्सा

पतथर पर की गइ गहन नककाशी स ज्ञात होता ह क माया सभ्यता क लोगों को पतथरों पर कारीगरी करन क लए आवशयक तकनीक का ज्ञान था, और स्पट ह क आरी, छनी, बरमा जस औजारों क अभाव मं ऐसा कर पाना लगभग असंभव ही था।

माया सभ्यता क लोगों वारा रयुत पंचांग वतसान मं र च लत 365- दवसीय रगो रयन कॅलंडर स लगभग मलता-जुलता था। माया क लोगों न गणना की क एक वषर की अव ध 365 दनों स कुछ जयादा होती ह। (दा हन)

अजतक का एक कॅलंडर पतथर (ऊपर)

570
चचेन इतजा में योधाओं का म नदर

अतीत क लोगों की उननत सभ्यता का एक महतवपूणर उदाहरण ह वह खगोलीय ज्ञान जसस व उस एक दन की गणना कर सकत थ जस रतयक 6,000 वषर पर शुर क प रर मण-पथ स घटान की जू रत होती ह।

571
नीच: मायाइ शासक पाशकल की कर की ताबूत क आवरण पर बनी गहन चराकृ त। वह वाहन जसपर पाशकल को बठा हुआ दखाया गया ह, एक रकार का मोटरबाइक लगता ह जो, संभव ह, उस समय, कसी बाहरी श त-र ोत स चलाया जाता रहा हो।

572
बना कसी वज्ञा नक रमाण क भी वकासवादी यह मानयता रखत हं क पुराकाल क लोग आ दम तरीक स रहन वाल आद म लोग थ और बु ध- ववक का वकास उनमं बाद मं जाकर हुआ। परनतु पुराता तवक खोजों स इस बात का खंडन हो जाता ह। उदाहरण क लए, माया सभ्यता क राचीन शहर टकल म कए गए उतखननों स अ भयंर ण और नगर- नयोजन क अचयजनक रमाण मलत हं। हवाइ फोटोराफों स ऐसा लगता ह क माया सभ्यता क नगर सडकों क एक वस्तृत नटव क क ज रय एक-दूसर स अचछी तरह जुड हुए थ। इन तमाम बातों स यह साफ हो जाता ह क सु वक सत सभ्यताएं इ तहास की हर अव ध मं वयमान रही हं।

कोपन से रापत मायाइ सभ्यता के यां र क प हये

574
अभी भी अनसुलझी नाजका लाइनं
नाजका लाइनं, लीमा क पू वयन शहर क बाहर, ऐसी खोजों मं स एक हं जनहं समझा पान मं वज्ञा नक

असमथर हं। इन सबस आचयरजनक लाइनों का पता नयूयॉकर की लॉनग आइलंड यु नव सरटी क डॉ. पॉल कोसोक वारा वषर 1939 मं व मान वारा कए गए अधययन स लगाया गया था। कइ कलोमीटर लंबी य लाइनं हवाइ अड की हवाइ पटी जसी दखाइ पडती हं और इनमं व भनन प षयों, बंदरों तथा मकड यों का चरण भी ह। इन लाइनों को शुषक पू वयन र गसतान मं कसन, कयूं और कस बनाया था, यह अभी भी एक रहसय बना हुआ ह। दूसरी ओर, जसन भी इनहं बनाया व सपट तौर पर आ द मानव तो नहीं रह होंग जसा क कुछ वजा नक मानत हं।
य लाइनं, जो क सफर ऊपर स सही नजर आती हं, बना कोइ गलती कए बनाइ गइ थी, जो क ऐसी असामानय चीज ह जसपर पया पत धयान दन की जू रत ह।

1. 45 मीटर (150 फीट) लंबी मकडी का चर
2. एक मानव आकृ त
3. एक 140 मीटर (450 फीट) लंब गध का बंब
4. एक बंदर की बडी आकृ त, 58 मीटर
(190 फीट) चौडी और 93 मीटर (305 फीट) लंबी
5. एक पड और हाथों की आकृ तयां
6. एक कुत की आकृ त

575
इ तहास काल क दौरान, भारी वजा नक और तकनीकी र ग त स हत सभी षरों मं शानदार सुधार कए गए हं। ल कन इन बदलावों का, " वकास" क ू प मं जसा क भौ तकवादी कहत हं, उललख करना अता करक और अवजा नक ह। संसकृ त एवं जान क भंडार का धनयवाद जसकी वजह स ऐस ष रों मं वजान और तकनीकको तरह लगातार र ग त हुइ ह।

तथा प, जस र कार आज क लोगों और आज स हजारो साल पहल क लोगों मं कोइ शारी रक अनतर नहीं ह, उसी र कार बु ध और ष मता की दृ ट स भी उनमं कोइ भननता नही रही ह। यह वचार क 20वीं सदी क लोगों क पास कही जयादा उननत सभयता ह कयों क उनकी बौ धक ष मता का काफी वकास हुआ ह, एक र मत वचार ह, वकासवादी र चार का नतीजा ह।

576
दु नया मं अनक भाषाएं बोलन वाली अनक र जा तयां हं और य सभी भाषाएं काफी दुू ह हं। वकासवादी सोच भी नहीं सकत क ऐसी दुू हता भला र मक तरीक स कस आइ होगी!

577
 रचाडर डॉ कनस
नोएम कॉमसकी

579
चालरस डा वस

इ तहास क हर कालखंड मं सूयर की उपासना करन वाल लोग रह हं। आज क युग मं भी ऐस झूठ अंध वव ास फल-फूल रह हं जब क लोग अतयाधु नक दशाओं मं जी रह हं। इसस यह पता चलता ह क व लोग र मत वव ास वाल अनीव रवादी हो सकत हं, न क आ दम।

580
बगल की तसवीर मं सुम रयाइ लोगों क र मत वव ास स उपज " बजली क दवता" को दखाया गया ह। ऐस 'दवता' तब उभरत हं जब सचचा आधया तमक वव ास वकृत हो जाता ह।

जब सुम रयाइ पा टयों का अनुवाद कया गया तो यह तथय र कट हुआ क ब बलोन क उपासना गृहों मं अनकों झूठ दवी-दवताओं का 'रादुभा व' हो गया। यह काल-र म मं एकमव सतय परमव र क ही अनक नामालंकरणों की गलत वयाखया क कारण हुआ।

ब बलोन क उपासना गृह क झूठ दव मरडूक

581
फराओ अखनातून एक इव र मं वव ास करता था और उसन सभी मू तरयां वनट करवा दी थीं। अपनी आसथा का इजहार उसन एक लोक की नमनां कत पं त यों मं की ह :
" कतन हं तुमहार कमर हालां क व हमारी नजरों स ओझल हं। ह एकमव परमव र जसक सवा और कोइ नहीं! अपनी ही इचछा स तून इस पृथवी की रचना की। तू ही ह एकाकी समसत जन-गण, पशु-गण, जनतु समुदाय। समसत व जो धरती पर वचरत हं परों स, उडत हं उचच गगन मं पंखों स ..."

मानवशास्त्रीय शोधों स ज्ञात हुआ ह क बहुदववादी धारणा का अभ्युदय एकवरवाद की वकृत स हुआ ह। यह एक रमाण ह क धामक "वकास" जसी कोइ र र या घटत नहीं हुइ ह, जसा क कुछ लोग हमस मनवाना चाहत हं।

582
अंधववासी हनदू धमर मं भी कइ झूठ दवी-दवता हं। तथाप, शोध स यह ज्ञात हुआ ह क हनदू धमर क आरंभक दनों मं लोग एक ही इवर मं ववास करत थ।

583
अपनी पुस्तक "द रलीजन ऑफ रीस इन र-हस्टरक टाइमस" मं राचीन यूनान क धामक ववासों क बार मं शोध करन वाल एकसल डब्लू पसस का कहना ह : ".... बाद मं वहां भारी संखया मं कमाधक महतवपूणर व्यततवों का वकास हुआ जनस रीस की धामक दंतकथाओं मं हमारा आमना-सामना होता ह"।

585
समय का अस्तितव हमार मस्तषक मं अनक रकार क दृटांतों की तुलनातमक सोच क प मं हुआ करता ह। यद व्यत क पास स्मृत नहीं होती तो उसका मस्तषक ऐस वलषण नहीं कर पाता और इस तरह समय की कोइ अवधारणा ही नहीं होती। यद लोगों क पास स्मृतयां नहीं होती तो व बीत हुए समय की कसी अवध का वचार ही नहीं कर पात, वरन उस एक "षण" का ही अनुभव कर पात जसमं व जी रह हं।

587
वतीय ववयुध का आद और अंत, अंतरष मं रथम रॉकट का छोडा जाना, राचीन मर क परामडों की पहली आधारशला का रखा जाना और स्टोनहंज क टनों भारी पतथरों को खडा कया जाना -- इवर की दृट मं य सब एक ही षण मं वयमान हं।

संदभर

1. रचाडर लीक, "द ऑरजन ऑफ यूमनकाइंड" (साइंस मास्टसर सीरीज). नयूयॉकर: बसक बुकस, 1994, पृ. 12
2. एल.बी.एस. लीक, "ऍडमस ऍनसस्टसर: द इवॉल्युशन ऑफ मन ऐंड हज कल्चर", नयूयॉकर ऐंड एवॅनसटन, हापर ऐंड रो पब्लशसर, 4था संस्करण, 1960, पृ. 9-10
3. ऐरम काडसर, 'साइंटफक अमरकन', जून 1918, मं "पोस्टयूमस एसज बाइ रनस्लो मॅलनॉस्की" स सारगभस, पृ. 58
4. मल्वल हस्कोवटस, "मन ऐंड हज वकस", नयूयॉकर, नॉफ, 1950, पृ. 467
5. उपरोत, पृ. 476
6. एडवाडर ऑगस्टस रीमन, "रस ऐंड लगवज" क 'एसज, इंगलश ऐंड अमरकन' मं - परचय, चरों और टपपणयों सहत, नयूयॉकर: पी.एफ. कॉलयर ऐंड संस, [सी 1910], हावर्डर कलासकस, सं. XXVIII
7. अहमद थॉमसन, "मकंग हस्री", लनदन: ता-हा पब्लशसर ल., 1997, पृ. 4
8. जाख जोरक, "डड होमो एरकटस कॉडल हज रंडपरंटस?", डस्कवर, खंड 27, सं. 01, जनवरी 2006, पृ. 67
9. रोजर लवन, "द ऑरजन ऑफ मॉडनर यूमनस", नयूयॉकर: डब्लू. एच. रीमन ऐंड कमपनी, 1993, पृ. 116
10. कलयर इमबर, "एप-मन: ऑरजन ऑफ सॉफस्टकशन", बीबीसी नयूज, 22 फरवरी 2000, http://news.bbc.co.uk/1/hi/sci/tech/650095.stm पर ऑनलाइन
11. लवन, "द ऑरजन ऑफ मॉडनर यूमनस", पृ. 148-149
12. उपरोत, पृ. 149
13. डॉ. डवड वाइटहाउस, "ओल्डस्ट' र-हस्टरक आटस अन-अथर्ड", बीबीसी नयूज, 10 जनवरी 2002, http://news.bbc.co.uk/1/hi/sci/tech/1753326.stm पर ऑनलाइन
14. जीन कलॉटस, "शॉवट कव: रंस्ज मजकल आइस एज आटर", नशनल जयोराफक, अगस्त 2001, पृ. 156
15. डॉ. डवड वाइटहाउस, "आइस एज स्टार मप डस्कवडर", बीबीसी नयूज, 9 अगस्त 2000, http://news.bbc.co.uk/1/hi/sci/tech/871930.stm पर ऑनलाइन
16. http://goldenageproject.org.uk/108catalhuyuk.html
17. फनोमन, 15 सतमबर 1997, पृ. 45
18. रॉबन डॅनल, "द वल्डस ओल्डस्ट स्पयसर", 'नचर', खंड 385, 27 फरवरी 1997, पृ. 767
19. उपरोत
20. उपरोत, पृ. 768
21. हाटसुट थीम, "लोअर पॅलयोलथक स्पयसर रॉम जमसी", 'नचर', खंड 385, 27 फरवरी 1997, पृ. 807
22. 'तास दवरंद यासम' ("लाइफ इन द स्टोन एज"), टरा एकस डॉकयुमंरी फल्म, टोरंटो
23. बलम व तकनीक ("साइंस ऐंड टकनोलॉजी" परका), सतमबर 2000
24. फलप कोहन, "ओपन वाइड", 'नयू साइंटस्ट', अंक 2286, 14 अरल 2001, पृ. 19
25. गलन इजाक, बारबरा इजाक, "द आकयोलॉजी ऑफ यूमन ऑरजनस", कॅमरज, कॅमरज युनवसटी रस, 1989, पृ. 71; सी.बी.एम. मॅकबनी, ' द हौआफतह' (सरनाइका), कॅमरज युनवसटी रस, 1967, पृ. 90

26. वदम एन. सापंचुक, "रोलॉम II, ए मडल पॅलयोलथक कव साइट इन द इस्टनर रीमया वद नॉन-युटलटॅरयन बोन आटफॅक्टस", रोसीडंगस ऑफ द र-हस्टरक सोसायटी, 59, 1993. पृ. 17-37, पृ. 33-34
27. पॉल मलसर, द नएनडथल लगॅसी, रंस्टन : युनवसटी रस, 1996, पृ. 17, वदम एन. सापंचुक, "रोलॉम II, ए मडल पॅलयोलथक कव साइट इन द इस्टनर रीमया वद नॉन-युटलटॅरयन बोन आटफॅक्टस", रोसीडंगस ऑफ द र-हस्टरक सोसायटी, 59, 1993. पृ. 17-37, पृ. 17
28. "नएनडथल्स लवड हामोनयसली", द ए ए ए एस साइंस नयूज सवस, 3 अरल 1997
29. थ हंक, "ऑफरत ऑस दन बॉमन", 'फोकस', खंड 39, 1996, पृ. 178
30. इलन मोरगन, "द स्कासर ऑफ इवॅाल्यूशन", नयूयॉकर, ऑक्सफोडर युनवसटी रस, 1994, पृ. 5
31. 'ची', अरल 2005, पृ. 46
32. माइकल बगनट, "ऍनशयंट रसज : मसरीज इन ऍनशयंट ऐंड अली हस्री", इंगलंड, पंगवन बुक्स, 1999 पृ. 10-11
33. डवड स्टर, "कवरज ऐंड स्टटमंटस कनसनंग अ नल फाउंड इमबडड इन अ ब्लॉक ऑफ संडस्टोन ऑबनड रॉम कंगूडी (मलाफील्ड) कवारी, नॉथर रटन", रटश एसोसएशन फॉर द ऍडवांसमंट ऑफ साइंस की वाषक रपोट, 1844, पृ. 51
34. बगनट, "ऍनशयंट रसज ..", पृ. 14
35. जॉन बनस, जॅरोमर मलक, "एस्की मसर मदनयती", इस्तांबुल: लतसम यायनलरी, 1986, परचय
36. वलयम हॉवल्स, "गटंग हयर : द स्टोरी ऑफ यूमन इवॅाल्यूशन", वाशंगटन डी.सी., कमपास रस, 1993, पृ. 229
37. www.kuranikerim.com/telmalili/hud.htm
38. डयाडर कपलंग, "द एलफंटस चाइल्ड", 'जस्ट सो स्टोरज' स, १९०२. http://www.boop.org/jan/justso/elephant.htm
39. स्टफन ज. गोल्ड, बॉनरकटस क "डांस ऑफ द टाइगर : अ नॉवल ऑफ द आइस एज", नयूयॉकर, रडम हाउस, 1980, पृ. xvii-xviii क "इंरोडक्शन" स
40. स्टफन ज. गोल्ड, "द पंडा'ज थमब : मोर रफ्लकशंस इन नचुरल हस्री" [1980], लनदन, पंगवन, 1990, पुन:मुरत सं. पृ. 158 क "द रटनर ऑफ होपफुल मॉनस्टसर" मं
41. साइमन वसबाडर, "द वल्ड्स लास्ट मसरीज" (दूसरा संस्करण), रीडसर डाइजस्ट, 1978, पृ. 138
42. राहम हंकॉक, सांथा फाइया, "हवनस मरर : कवस्ट ऑफ द लॉस्ट सवलाइजशन", नयूयॉकर : री रवसर रस, 1998, पृ. 304
43. मुस्तफा गजाला, "हस्टोरकल डसपशन : द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ ऍनशयंट इजपट", बॅस्टट पब्लशंग, इरी, पीए, यूएसए, 1996, पृ. 295, 296
44. डायरकटर ऑफ द परामडस डॉ. जाही हॉवास स साषातकार, http://www.pbs.org/wgbh/nova/pyramid/excavation/hawass.html
45. गजाला, "हस्टोरकल डसपशन ..", पृ. 296
46. http://www.amonline.net.au/teachers_resources/background/ancient_egypt04.htm
47. अफत इनान, "एसकी मर तारही मदनयत" (ऍनशयंट इजपशयन हस्री ऐंड सवलाइजशन)अंकारा : तुकर तारीह कुमु बासमवी, 1956, पृ. 318
48. उपरोत, पृ. 87
49. उपरोत, पृ. 201
50. जमस हनरी रस्टड, "ऍनशयंट टाइमस ऑर अ हस्री ऑफ द ऍनशयंट वल्ड", 1916, पृ. 64
51. मुस्तफा गजाला, "इजपशयन हामसी : द वजुअल मयुजक", एनसी: तहुटी रसचर फाउंडशन, 2000, पृ. 64
52. http://www.waterhistory.org/histories/cairo/
53. गजाला, "हस्टोरकल डसपशन ..", पृ. 115
54. उपरोत, पृ. 116
55. उपरोत
56. "द आइज ऑफ द स्फंक्स", नयूयॉकर, बकल पब्लशंग ुप, 1996, पृ. 119
57. २ नोवा रोडकशंस, "हू बल्ट द परामडस?", www.pbs.org
58. फरंक डानबगर, "इल्करक लाइटस इन इजपट?". http://www.world-mysteries.com/sar_lights_fd1.htm
59. वलयम आर. कॉलस, "ऍनशयंट मन : अ हंडबुक ऑफ पजलंग आटफॅक्टस", मरीलंड. द सोसबुक रोजकट, 1978, पृ. 443
60. http://www.unsolved-mysteries.net/english/
61. हनरी जी., "इन सचर ऑफ डीप टाइम : बयोंड द फॉसल रकॉडर टू अ नयू हस्री ऑफ लाइफ", द री रस, साइमन ऐंड स्शूस्टर इनकॉपोरटड का एक रभाग, 1999, पृ. 5
62. फलप इ. जॉनसन, "रीजन इन द बॅलंस : द कस अगंस्ट नचुरलजम इन साइंस", लॉ ऐंड एजुकशन, डॉनसर रोव, इलनॉयस : इंटरवसटी रस, 1995, पृ. 62.
63. टमल रटनका, खंड 16, अना याइंचक, इस्तांबुल, जून 1993, पृ. 203
64. जॉजस कॉनटनयु, "एवरीड लाइफ इन बबलोन ऐंड असीरया", लनदन, एडवाडर आनोल्ड पब्लशसर, 1964
65. समुअल नोआ रमर, "हस्री बगनस ऐट सुमर". "थटी नाइन फस्टस इन रकॉडड हस्री. फलाडलफया, युनवसटी ऑफ पंसलवनया रस, 1981

66. डॉ. ड वड वाइटहाउस, "वर्ल्ड्स ओल्डेस्ट ट लस्कोप?", बीबीसी न्यूज, 1 जुलाइ 1999, http://news.bbc.co.uk/1/low/sci/tech/380186.stm
67. द मायन कॅलंडर, http://webexhibits.org/calendars/calendar-mayan.html
68. ड वड रमॅक, "गवागी' ऑर द फ्यूचर हस्ट्री ऑफ द अ नमल लंग वज कंरोवसी ", कॉग नीशन, 19, 1985 पृ. 281-282
69. डरक बकटस, "बबल्स कॉनरस्टोन", 'नयू साइं टस्ट', अंक 2102, 4 अक्टूबर 1997, पृ. 42
70. रचाडर डॉ कंस, "अनवी वंग द रनबो", बोस्टन : यूजटन म फ्लन कं., 1998, पृ. 294
71. वंडी क. व ल्कंस तथा जनी वकफील्ड, "र न इवॉल्यूशन ऐंड नयूरो लं ग व स्टक र-कं डशंस", 'बह वयरल ऐंड र न साइंसज, 18 (1) : 161 - 226
72. नोएम चॉमस्की, "पावसर ऐंड रॉस्पेकटस : रफ्लकशंस ऑन यूमन नचर ऐंड द सोशल ऑडर", लनदन, प लूटो र स, 1996, पृ. 16
73. स्टफन एच. लंग डन, " समॅ टक माइथोलॉजी, माइथोलॉजी ऑफ ऑल रसज", खंड ५, आकर्योलॉजी इंस्टीचयूट, अमर, 1931, पृ. xviii
74. स्टीफम एच. लंग डन, " द स्कॉटसमन", 18 नवमबर 1936
75. एच. रं कफुतर, "थडर र ल मनरी रपोटर ऑन एकसकॅवशंस ऐट तल अस्मार (एनुआना) : पी.ज. वाइजमन वारा "नयू डस्कवरीज इन ब बलो नया अबाउट जन सस', लनदन, माशल्स, मॉरगन ऐड स्कॉट, 1936, पृ. 24, मं उधृत
76. पी. ल पज रनॉफ, "लकचसर ऑन द ऑ र जन ऐंड रोथ ऑफ रलीजन ऐज इलस्टरटड बाइ द रलीजन ऑफ ऍनशयंट इ जपट", लनदन, व लयमस ऐंड नॉगट, 1897, पृ. 90
77. सर फंडसर परी, " द रलीजन ऑफ ऍनशयंट इ जप ट", लनदन, कॉनस्टबुल, 1908, पृ. 3,4
78. एडवाडर मर डी, "जन सस ऐंड पगन कॉस्मोगो नज", वकटो रया इं स्टचयूट क 'रां जकशंस', खंड 72, 1940, पृ. 55
79. मकस मूलर, " हस्ट्री ऑफ संस्कृत लर चर", समुअल जवमर वारा उधृत, पृ. 87
80. ऍकसल डब्ल्यू. पसस, " द रलीजन ऑफ रीस इन र-हस्ट रक टाइमस", यु नव सर्टी ऑफ कॅ लफो नया र स 1942, पृ. 124
81. आइरीन रॉजंजवीग क " रचुअल्स ऐंड कल्टस ऑफ र-रोमन इगू वयम" की जॉजर एम. ए. हंफमन वारा की गइ समीष ा, 'अम रकन जरनल ऑफ आकर्योलॉजी', खंड 43, सं. 1, जन.-माचर 1939, पृ. 170, 171
82. टम फॉगलर, "र ॉम हयर टू इट नर्टी", ' डस्कवर', खंड 21, सं. 12, दसमबर 2000